TEACHER TRAINING
GENERAL MODULE

2017

OFFICE OF THE STATE PROJECT DIRECTOR (SSA/RMSA)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171001

Forward

The quality of education in H. P. at secondary stage is a major concern and various efforts have been made to improve the quality in education. Under RMSA main thrust has been given to improve classroom process. Teachers have been trained to develop the lesson plans and students are being encouraged for group learning. The Government has provided all required resources to all schools like Black/white boards, science labs, libraries, ICT labs, e-content and smart class rooms to improve the learning of students. The main focus of the training is on Pedagogical developments and latest Researches , constructivist approach of lesson transaction, motivation, ICT & MIS Applications, Swyamsidham Competition based Test Module and action research in teaching learning process where teachers and students may indulge in identifying problems preparing hypothesis, collecting and interpreting data based on the observation and drawing out the conclusion .

The training of School Heads and Teachers is a continuous process to enhance the competencies and leadership skills so that they should manage the schools in a effective manner. Continuous efforts are being made by State to improve the quality of education. The main aim is to make teaching learning process interesting so that students learn with joy.

For the year 2017-18 under RMSA State Project Office has prepared the strategic plan for enhancing the quality in education. The quality of education depends on the ability, hard work and dedication of the teacher and students to achieve their goal. If a teacher fails to keep himself in touch with the rapid scientific and educational developments then he would become inefficient and ineffective. The teacher is treated as most crucial factor in implementing all instructional reforms at the grassroots level. The learning of the students also depends on the interaction of teacher with their students. More the time teacher spent with students, more learning takes place. Keeping in view the above State Project Office develop the Module of training for the year 2017-18 , and plan the training in such a way that the teacher should spent more and more time with students in the classroom.

State Project Director
SSA/RMSA, H.P.

Sr. No.	Content	Page No.
	Forward	2
	Schedule of General Training	4
	नवीन शिक्षक का उदय	
4	समानुभूति शिक्षक और उसकी -शिक्षा का मूलाधार	7
5	शिक्षक का अस्तित्व, उसकी भूमिका एवं योगदान	9
6	शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार	13
7	MModule for General Topics ICT for 9th and 10th Class Teachers	32
8	Swyamsidham and registration process	54
9	Action Research	60
10	Adolescent Learning	72
11	Professional Development	76
12	Gender Issue in Education	89
13	Inclusive education	96
14	Planning	104

Schedule of General Teacher Training under RMSA for the session 2017-18

Annexure-B

Days	Session 1	Session 2	Session 3	Session4
Day 1	Inaugural Session Introduction and objective of the programme	Motivation for Teachers	Zero Investment Innovations	Zero Investment Innovations
Day 2	Teachers their need and importance	Empathy	Motivation for Teachers	Motivation for Teachers
Day 3	Introduction and objectives of ICT; ICT Awards,	Use of ICT equipments and Interactive White board ,Preparation of presentation	use of e-content, Use of online openend resources	MIS Application
Day 4	MIS Application	RMSA/Swayamsidham Portal	Action Research : Need And Importance	Formulation of Action Plan: Objectives and Hypothesis
Day 5	Tools of Data collection Development of various tools	Steps in Data Analysis	Report Writing	Feedback & Valedictory session

Motivation

<u>नवीन शिक्षक का उदय</u>

काम से प्यार - जीवन का आधार

चिंतन हेतु कुछ प्रश्न :

- **काम पर जाने से पहले मुझे कैसा लगता है?**
- **घर लौटते वक़्त क्या मानसिक थकान कि अनुभूति होती है?**
- **क्या मुझे शनिवार, रविवार का बेसब्री से इंतज़ार रहता है ?**
- **क्या छुट्टियों के लिए मन हमेशा आतुर रहता है?**

काम के प्रति आपकी रुचि ही आपके जीवन की गुणवत्ता का निर्धारण करती है |

- गुणवत्ता और उपयोगिता ज़रूरी क्यूँ?
- प्राचीन काल की उपयोगी वस्तुए आज कहाँ हैं
- इन वस्तुओं की उपयोगिता उनकी योग्यता पर निर्भर करती थी
- गुणवत्ता और उपयोगिता - नवीनता इन वस्तुओं की योग्यता ने नई उपयोगिताओं को जन्म दिया
- इन वस्तुओं की योग्यता ने नई उपयोगिताओं को जन्म दिया

<u>नवीनता जरुरी क्यों</u>

1. नवीन शिक्षक वह है जो समय, छात्रों की बदलती मानसिकता अथवा शिक्षा प्रणाली में आ रहे बदलावों के अनुसार जो स्वयं को ढाल ले |
2. क्योंकि आज शिक्षा का समीकरण बदल गया है |
3. आज विद्यार्थी केंद्र में एवं शिक्षक परिधि में हैं |
4. वैश्वीकरण का युग है, बहुमुखी प्रतिभा वाले छात्र ही प्रगति कर रहे हैं ।
5. छात्र बहुमुखी होने के लिए शिक्षक का दूरदर्शी होना आवश्यक है |
6. नवीन भारत की नींव एक शिक्षक ही रख सकता है, परन्तु इसके लिए आवश्यकता है की वह पहले स्वयं को नवीन बनाये ।

<u>नवीन शिक्षार्थी के गुण</u>

ऐसे गुण बताएं जो आप के अनुसार आज के विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक हैं !

- **<u>Teachers' Way Of Life (TWOL)</u>**

  सूत्र : F+2E+3P = TWOL

- F – Friendliness (मित्रवत व्यवहार)
- E – Empathy (समानुभूति)
- E – Expertise (विशेषज्ञ)
- P – Provides Solution (समाधान कर्ता)
- P – Presentability (प्रदर्शनीयता)
- P – Patience (धैर्यवान)

<u>नवीन शिक्षक की उत्पत्ति के मूलाधार</u>

- अप्रतिबंधित स्नेह
- समानुभूति
- समादर
- समता का भाव
- गंभीर श्रोता

<u>कक्षा में नवीन शिक्षक की कार्य प्रणाली</u>

- सीखने के लिए तत्पर (चाहे उसे विद्यार्थी से ही क्यों न सीखना पड़े)
- नवीन दृष्टिकोण की स्वीकार्यता
- स्वयं के दृष्टिकोण का सम्यक विवेचक (constructive self-criticism)
- तर्क साध्य अनुशासन का निर्वहन
- लोकतांत्रिक विचारों का स्वागत
- प्रतिक्रिया (Feedback) के लिए खुलापन

नवीन शिक्षक का उदय कहीं बाहर से नहीं होगा |

नवीन शिक्षक का उदय तो यहीं से होना है |

समानुभूति - शिक्षक और उसकी शिक्षा का मूलाधार

- **H – संवेदनशीलता**
- **HH – सहानुभूति**
- **HHH – समानुभूति (Heart,Head,Hand)**

<u>परिभाषा</u>

समानुभूति = सम + अनुभूति

समानुभूति एक गुण हैं जो हमे दूसरों को उनकी मनोस्थिति के अनुरूप समझने, महसूस करने और उन्हें वैसे ही स्वीकार कर पाने की छमता देती है

केवल समानुभूति से ये संभव हो पाता हैं कि हम ऐसे उचित एवं कारगर उपायों को ढूंढ सकें जो दूसरों के लिए प्रगतिशील सिद्ध हो |

Empathy becomes a bridge to the other person's humanity.

समानुभूति अर्थात...

i) दूसरे की आँखों से देखना,

ii) दूसरे के कानों से सुनना,

iii) और

iv) दूसरे के ह्रदय से महसूस करना.

Empathy पर अंग्रेजी में एक कहावत है

"Putting yourself in someone else's shoes."

दुसरे के जूते में पैर रखने से पहले की एक कड़ी (क्रिया) है, अपने जूते उतारना...

क्या आज आप अपने जूते उतारने के लिए तैयार हैं ?

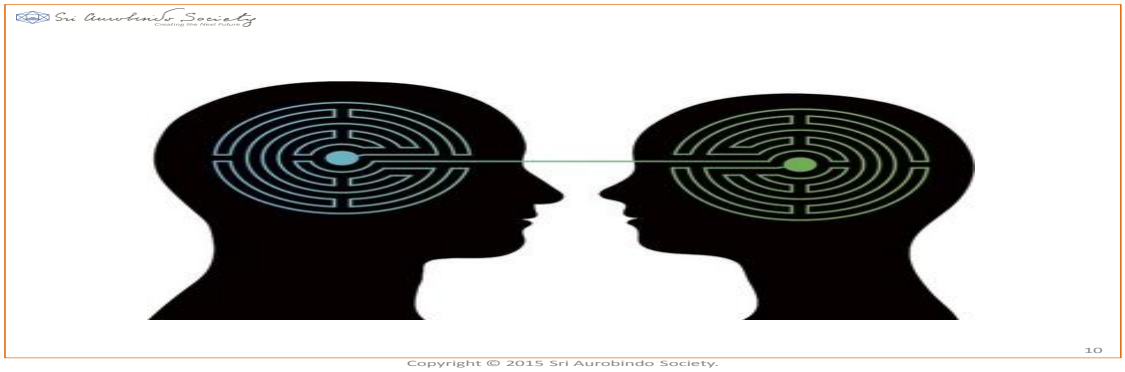

समानुभूति क्यों?

- समानुभूति स्थायी रिश्तों की नीवं है
- समानुभूति से शिक्षक तथा विद्यार्थी एक स्तर पर रहते हैं

• यह एक द्रष्टिकोण है जिससे स्वत: ही प्रतिक्रिया होती है समानुभूति एक ऐसा यंत्र है जिसके द्वारा शिक्षक विद्यार्थी के मन में जाकर उसके अस्तित्व को पहचान पाते हैं।

<u>समानुभूति कैसे?</u>

• क्या समानुभूति बिना आत्मसम्मान के हो सकती है
• क्या समानुभूति पूर्वाग्रहों से ग्रस्त हो सकती है
• क्या समानुभूति सोच तक सीमित हो सकती है

<u>समानुभूति खंडित नहीं है;</u>
<u>यह तो जीवन जीने की एक शैली है</u>

विनम्रता	निष्पक्षता	
सजगता	करुणा	धैर्य
पूर्वाग्रह से मुक्त	निस्वार्थता:	संतुलन

<u>समानुभूतिशील अध्यापक</u>

• अच्छा श्रोता होता है
• आत्म जागरूक होता है
• अनुगुंज inner voice को महत्व देता है
• विद्यार्थी का अंश अपने अंदर महसूस करता है
• सकारात्मक अनुशासन को महत्व देता है

• छात्रों के नाम, कौशल, विचारों, और ज्ञान का उल्लेख अक्सर करना - कमजोरियों या गोपनीय जानकारी का उल्लेख किए बिना।
• जब उचित हो, स्वयं-प्रकटीकरण का प्रयोग। एक वास्तविक व्यक्ति बनो।
• प्रतिक्रियाओं की शुरुआत में इन जैसे शब्दों का उपयोग: "मैं इस बात से सहमत हूँ," "मैं इस बात की सराहना करती हूँ," और "मैं आपके विचारों का आदर करती हूँ।"

शिक्षक का अस्तित्व, उसकी भूमिका एवं योगदान

अस्तित्व को जानें

अस्तित्व = आस्था + तत्व (गुण)

(जो आन्तरिक है या अन्तर्मुखी है)

• स्वयं पर आस्था ही अस्तित्व का सृजन करती है |
• अपने गुणों के प्रति आस्था ही अस्तित्व का पहला सोपान है |

• बाह्य गुण (जन्म, जाति, स्थान, वर्ण, लिंग, आदि) से ऊपर उठ जाना अस्तित्व के करीब होने में सहायक है |

पहले तो आप उस गुण को पहचानते हैं;
फिर वही गुण आपकी पहचान बन जाता है |

अस्तित्व को जानें

• अस्तित्व अस्थाई या निर्भर नहीं हो सकता ।
• अस्तित्व वो है जो सब कुछ छिनने के पश्चात् भी बचा रहे ।
• उदाहरण :

– सूर्य का अस्तित्व उसकी रौशनी में है |
– पुष्प का अस्तित्व उसके रंग व सुगंध में है |

- चन्द्रमा का अस्तित्व उसकी शीतलता में है |

क्या है एक शिक्षक का अस्तित्व ?

• जो छात्र को उनके अस्तित्व से पहचान कराने में सहायक हो, वही होता है एक शिक्षक का सच्चा अस्तित्व |
• जब एक शिक्षक नहीं रहेगा फिर भी उसकी छवि उसके छात्रों में प्रतिबिम्बित होगी, यही है एक शिक्षक का अस्तित्व |

कौन है एक शिक्षक ?

a. एक माँ के समर्पण का विश्वास है शिक्षक
b. चन्द्रगुप्त से चक्रवार्तिम बनाने का प्रत्यक्ष प्रमाण है शिक्षक
c. शिक्षार्थी को परिपूर्णता तक पहुँचाने वाले का नाम है शिक्षक
d. अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए, वो है एक शिक्षक
e. अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाए, वो है शिक्षक

हर शिक्षक का एक अपना अस्तित्व है |

• आपका अस्तित्व क्या है ?
• क्या आपका प्रतिबिम्ब आपके विद्यार्थी है ?

शिक्षक की भूमिका को समझें

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि - गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर मारे चोट ॥

- संत कबीर दास

भूमिका के विषय में एक प्रश्न

क्या आज का विद्यार्थी मात्र गीली मिट्टी है जिसे हमें आकार देना है?

या

वह एक बीज के समान है जिसे हमें एक माली की तरह ऐसा वातावरण दें जिससे वह अपने शीर्ष तक विकसित हो सके?

भूमिका को समझें

- कल्पक
- योजक
- पथ प्रदर्शक
- प्रेरणा स्रोत
- ज्ञान देने वाला
- समाज की दिशा निर्धारण करने वाला

शिक्षक का अर्थ है गुरु

गुरु शब्द में 'गू' का अर्थ होता है 'अन्धकार' और 'रू' का 'प्रकाश' | इसका अर्थ हुआ जो अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए या फिर जो अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाये |

शिक्षक सिर्फ वह नहीं जो ज्ञान दे | ज्ञान के साथ-साथ नैतिक सिद्धांतों का भी विकास करे और छात्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करे |

कल्पक: शिक्षक भूमिका निभाता है एक कल्पक की, यानि कि एक माली, जैसे माली देखते ही बीज की परख कर लेता है वैसे ही शिक्षक भी विद्यार्थी को देखते ही उसके गुण/अवगुण परख कर उसको वैसे ही सींचता है जिससे उसका संपूर्ण विकास होSA

पथ प्रदर्शक: जीवन में सफलता और ज्ञान का मार्ग दिखानाA

प्रेरणा स्त्रोत: प्रशंसा और मित्रवत व्यवहार द्वारा प्रेरणा देनाA

ज्ञान देने वाला: विभिन्न विषयों का ज्ञान देकर छात्र के बौद्धिक स्तर का विकास करनाA

भूमिका को समझें

- एक चिकित्सक एक जीवन रक्षक है
- एक इन्जीनियर इमारत निर्माता है

लेकिन एक शिक्षक ही है जो अपने शब्दों से शाश्वत मूल्यों का निर्धारण करता है जिससे सृष्टि का अभ्युदय होता है

a teacher affects eternity" through her words and ideas and values that bring about a transformation in the way the world works.

देश को आगे बढाने में शिक्षक का बड़ा महत्व है क्योंकि जड़ जितनी गहरी होती है, पेड़ उतना ही ऊँचा जाता है **-स्वामी विवेकानंद**

समाज में अध्यापक का स्थान बड़ा महत्वपूर्ण है | वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक परम्पराएँ तथा तकनीकी कौशल पहुँचाने का केंद्र है और सभ्यता के प्रकाश को प्रज्वलित रखने में सहायक है | ***- डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन***

जो ज्ञान देते हैं, जो जीवन जीने की कला सिखाते हैं, वे ज्यादा सम्माननीय हैं उन माता पिता से जो जन्म देते हैं | ***- अल्बर्ट आइंस्टीन***

भूमिका से योगदान तक

किसी महान व्यक्ति के शब्द:

"किसी क्रांतिकारी लेखक की स्याही, किसी क्रांतिकारी के लहू से भी ज्यादा ताकतवर होती है|"

भूमिका से योगदान तक

इन महान शिक्षकों का तत्व आपसे अलग नहीं था,
यही क्षमताए आप सब में भी विद्यमान हैं,
बस आवश्यकता है उन्हें पहचानने की
आप अपने छात्रों द्वारा किस प्रकार के संसार की संरचना करना चाहते हैं?
संसार के निर्माण में आप अपनी भूमिका का निर्धारण करें

शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार

(एक नवाचार मंच शिक्षको द्वारा शिक्षको के लिए)

नवचारो से तात्पर्य: आपके उन नये विचारों का है जिन्हें आप भौतिक अथवा मूर्त रूप प्रदान करके अस्तित्व में लाते है ,या पुराने विचारों को नये ढंग से प्रस्तुत करना भी नवाचार का ही प्रकार है | ZIIEI

यह एक ऐसा मंच है जहा शून्य निवेश नवाचार को व्यवस्थित एवं व्यापक ढंग से क्रियान्वन किया जाता है तथा जो शिक्षा के क्षेत्र में आने वाली कठिन चुनौतियों और समस्यायों को सुलझाने के लिए संगठित किया गया है |

ZIIEI का उद्देश्य

- सीखने के परिणामों में सुधार, या कक्षा अनुकूल सीखने के स्तर में सुधार|
- छात्राओं के लिए अधिक अनुकूल एवं सहयोगी वातावरण|
- पृथक एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चो के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन | कक्षा, स्कूल में स्वम् सीखने का वातावरण |
- शिक्षा में अभिभावकों की अधिक भागीदारी |
- छात्रों के नामांकन दर में सुधार |
- छात्रों के स्कूल छोड़ने की दर में कमी/ छात्रों की अनुपस्थिति की दर में कमी |
- छात्रों, स्टाफ, स्कूल एवं समुदाय में मानवीय मूल्यों की वृद्धि
- शिक्षको के शिक्षण के प्रति अभिरुचि के स्तर में सुधार |

शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार

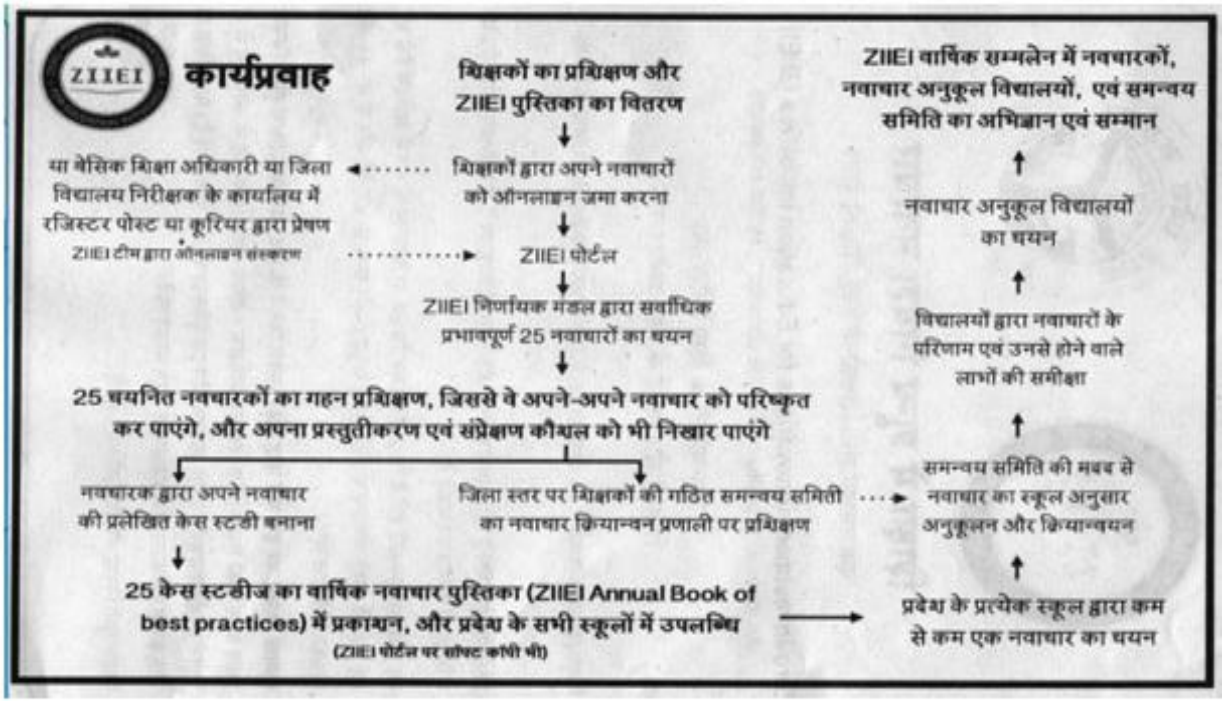

11 प्रलेखित केस-स्टडीज़

1. बाल संसद
2. खेलों के माध्यम से शिक्षण
3. कला और शिल्प द्वारा सर्वांगीण विकास
4. रोचक शिक्षण तकनीक
5. दैनिक बाल अखबार
6. भविष्य सृजन

7. चित्रों एवं कॉमिक्स के द्वारा शिक्षण
8. सरल अंग्रेज़ी अधिगम
9. सामुदायिक सहभागिता
10.कांसेप्ट मैपिंग
11.स्टूडेंट प्रोफाइलिंग

बाल संसद

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- विद्यालय प्रबंधन
- सामुदायिक सहभागिता

<u>नवाचार का सार</u>

बच्चों में प्रबंधन व नेतृत्व क्षमता के विकास में बाल संसद की अहम भूमिका है | साथ ही शिक्षकों के आभाव में विद्यालय में शैक्षिक व सह-शैक्षिक गतिविधियों का संचालन संभव है | बाल संसद के गठन से विद्यालय की अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है | बाल संसद के अंतर्गत विभिन्न समितियों के गठन से समक्ष आने वाली विद्यालय की समस्याओं को बच्चे खुद दूर करने लगते हैं |

बाल संसद

संसद चयन प्रक्रिया

- गठन प्रक्रिया के आधार पर
- छात्रों की रूचि एवं योग्यतानुसार, शिक्षक स्वविवेक से
- प्रतियोगी परीक्षाओं से

बाल संसद

<u>संसद गठन</u>

1. बाल संसद के अंतर्गत विभिन्न पद सुनिश्चित किये जाते हैं जिनमें प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, संसद अध्यक्ष, एवं विभिन्न समितियों और उनके अध्यक्ष चुने जाते हैं|
2. समितियां एवं उनकी संख्या विद्यालय व्यवस्था और छात्रों की संख्या पर निर्धारित की जा सकती है |

गठन प्रक्रिया में अभिभावकों की अहम भूमिका हो सकती है |

बाल संसद बैठक

बाल संसद की बैठक साप्ताहिक या मासिक स्तर पर संसद के अध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित की जाती है, जिसमें प्रधानमंत्री बच्चों का प्रतिनिधि बनकर शिक्षकों एवं अतिथिगणों के साथ मंच साझा करता है| बाल संसद की बैठक में साप्ताहिक अथवा मासिक स्तर पर किये गए कार्यों की समीक्षा, समस्यायों को ज्ञात करना एवं आगे की रणनीति सुनिश्चित करना होता है|

<u>बाल संसद की समितियां</u>

1. गृह समिति
2. शिक्षा समिति
3. स्वस्थ्य एवं स्वछता समिति
4. खेल-कूद समिति
5. सांस्कृतिक एवं कला समिति
6. MDM समिति
7. अभिभावक समूह समिति
8. पुस्तकालय समिति
9. पूर्व छात्र-छात्रा समिति

<u>बाल संसद की बैठक के परिणाम</u>

1. MDM क्यारी
2. अनुमति-पत्र का निर्माण
3. जन्मदिवस वृक्षारोपण
4. सन्दर्भ समूह
5. मूल्यांकन प्रक्रिया

नवाचार के लाभ

1. यह नवाचार छात्र, अध्यापक एवं समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त है
2. इस नवाचार से छात्रों में आत्मविश्वास की वृद्धि होती है, उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का विकास होता है, उनमें लोकतान्त्रिक/प्रजातान्त्रिक मूल्यों का व्यावहारिक ज्ञान मिलता है और उनके अधिगम स्तर में वृद्धि होती है
3. विद्यालय का प्रबंधन, छात्रों के नामांकन दर और अनुशासन में सुधार
4. समाज की सहभागिता, अभिभावकों की सहभागिता और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध एकजुटता संभव होना

खेलों के माध्यम से शिक्षण

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- विद्यालय में सीखने का वातावरण
- छात्रों की नामाकन दर में सुधार
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन
- समयपरिवर्तनों की वजह से वर्तमान शिक्षा पद्धति समय पर शिक्षण स्वरुप में आये-

कभी अरुचि उत्पन कर देती है-बच्चों मैं कभी| अक्सर देखा गया है की कठिन विषयों के प्रति बच्चे उदासीन हो जाते हैं|गणित ,विज्ञान इत्यादि विषयों से छात्र डरने लगता है | यदि ये विषय उन्हें खेल –खेल में या खेलों के माध्यम से समझाएं जाएँ तो उससे बच्चे जल्दी आत्मसात कर लेते हैं | इस माध्यम से छात्रों की एकाग्रता भी बढ़ती है अतः खेलों के माध्यम से शिक्षण आज के युग की आवश्यकता है| खेल विधि, शिक्षण को रुचिकर और सरल बनाती है तथा छात्रों के दृष्टिकोण में सकारात्मकता का सृजन करती है|

<u>क्रियान्वयन</u>

1. इसके अनुसार यह प्रश्न पूछे जा सकते हैं:
2. सबसे छोटा गृह कौन सा है
3. सूर्य क्या है
4. हम लोग किस गृह पर रहते हैं

ग्रिड गेम

यह खेल व्यक्तिगत अथवा समूह में खेला जा सकता है| यदि व्यक्तिगत है तो छात्र से एक-एक करके प्रश्न करेंगे और उनको सही उत्तर पर खड़ा होना होगा |जैसे यदि प्रश्न है कि सबसे बड़ा गृह कौन सा है तो उन्हें आकर वहां खड़ा होना होगा जहाँ बृहस्पति लिखा है
नोट:यह खेल सभी विषयों में खेला जा सकता है

सांप –सीढ़ी का खेल

1. इस खेल के माध्यम से गणित विषय विशेष
रूप से अच्छे से पढाया जा सकता है| जैसे,
यदि छात्र 41 नंबर पर है और उसका पासा
फेंकने के बाद अंक चार आता है तो वह 45
अंक पर आयेगा, अब यदि वह पूछें हुए प्रश्न सही उत्तर देता है तो वह 45 अंक पर ही रहेगा अन्यथा गलत होने पर वह वापिस 41 पर ही आ
जायेगा| यदि 45 पर उससे सीढ़ी मिलती है तो वह आगे बढ़ जायेगा और यदि सांप मिलता है

तो नियम के अनुसार नीचे आ जायेगा|
2. इस खेल को विद्यालय प्रांगण में भी खेला जा सकता है|

चक्के पे चक्का

कक्षा में दफ्ती के बने तीन चक्के दीवार पर लगाने के बाद अध्यापक बच्चों से जो प्रश्न पूछना चाहते हैं उस प्रश्न को ऊपर करेंगे और उसका उत्तर बच्चा दूसरा चक्का घुमाकर सही उत्तर उस प्रश्न के नीचे लायेगा और इसी प्रकार पहले चक्के के उत्तर को भी प्रश्न के नीचे लाकर लगा
देंगे| इससे सही उत्तर उस प्रश्न के नीचे आ जायेगा | इस खेल को एक–एक बच्चा बारी-बारी से खेल सकता है|

<u>लूडो</u>

वर्गाकार दफ्ती पर लूडो की रचना चार रंग से बच्चों द्वारा करवाई जाती है दो पासों को फेंका जाता है और उन पर आये अंकों द्वारा छात्रों को जोड़, घटा, गुना, भाग आदि सिखाया जाता सकता है|

उदाहरण

यदि एक पासे पर a आता है और दूसरे पर e आता है तो छात्र को ऐसा शब्द बनाने को कहा जाये जो इन दो अंग्रेजी अक्षरों से बना हो जैसे – aeroplane, इस खेल में छात्र जितना बड़ा शब्द बनाएगा वह उतने खाने आगे बढेगा|
छात्र २ पासे एक साथ फेंकेगा जिनमें एक पर शब्द लिखे होंगे और दूसरे पर अंकों के साथ व्याकरण सम्बंधित विषय दिए होंगे जैसे - विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, शब्दार्थ, संधि विच्छेद, वचन, लिंग बदलो आदि, अब यदि एक पासे के फेंकने पर बालक शब्द आये और दूसरे पर वचन आये तो छात्र बालक शब्द के वचन बताएगा और सही उत्तर बताने पर आगे बढेगा|

मात्रा खेल

मात्रा चार्ट पर पासा फेंके ,जिस मात्रा पर पासा गिरे उस मात्रा से बने पहले शब्द पर गोटी रखी जाती है| इसी प्रकार आगे बड़ा जाता है| अंतिम ऊ की मात्रा से बने शब्द "सूर्य" पर पहुंचने वाला विजेता होता है|

गणित का खेल

गणित चार्ट पर पासा फेंके| जिस अंक पर पासा गिरे उसे पासे पर आये अंक के साथ हल करें तथा उतने ही खाने आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त करें| ऋणात्मक अंक आने पर उतने ही खाने पीछे जाना पड़ता है|

व्याकरण का खेल

व्याकरण चार्ट पर पासा फेंके, जिस खाने पर पासा गिरे उस शब्द पर अपनी गोटी रखे| इसी **प्रकार**

आगे बढना होता है| अंतिम संज्ञा शब्द सूर्य पर पहले पहुंचने वाला विजेता बनता है|

खेल खेल में आयत और वर्ग जाने

दोनों पासों को ग्राफयुक्त दफ्ती पर फेंके, लाल रंग के पासे पर अंकित अंकों को लम्बवत लालपट्टी की तरफ उतने खाने गिनकर निशान लगाये| यही कार्य हरे वाले पासे पर अंकों को क्षैतिज हरी पट्टी की ओर किया जायेगा| ऐसा करने पर आयत या वर्ग की पट्टी बनेगी तथा साथ ही साथ बच्चों से दोनों अंकों का गुना कर क्षेत्रफल तथा दोनों अंकों को जोड़ कर परिमाप का बोध करायेंगे|

नवाचार के लाभ

इससे समूह में कार्य करने की क्षमता का विकास होता है|

समानता की भावना एवं नेतृत्व क्षमता का विकास होता है|

शिक्षण रुचिपूर्ण होता है|

छात्रों की उपस्तिथि में सुधार आता है|

3. कला और शिल्प द्वारा सर्वांगीण विकास

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- पृथक एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन
- बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास
- कक्षा / विद्यालय में स्वयं सीखने का वातावरण
- शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरुचि के स्तर में सुधार
- कला और शिल्प बचपन से ही अंकुरित होने वाला विषय है| इससे छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है|
- शिक्षा को अधिक प्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक बनाने हेतु कला और शिल्प का पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना आवश्यक है| ग्रामीण परिवेश में विद्यालय आने वाले बच्चों में नियमितता की कमी होती है, जिसका कारण उनमें उत्साह का संचार न होना और रूचि जागृत न हो पाना है| कला और शिल्प का विकास सभी छात्रों को ये बोध कराता है कि वह भी प्रतिभावान हैं तथा सृजनात्मक कार्य आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं |

<u>क्रियान्वयन</u>

1. सर्वप्रथम कार्य योजना बनाई जाती है| कार्य के विषय में छात्रों से बात करना भी आवश्यक है ताकि उनमें जिज्ञासा उत्पन्न हो और वह कार्य को सफलतापूर्वक और ऊर्जावान रूप से कर सकें| कार्य का विभाजन महत्वपूर्ण है ताकि सभी अपना योगदान दे सकें

2. कला और शिल्प के क्रियान्वन में ये सोचना आवश्यक है कि किस वस्तु का निर्माण करना है| इसके लिए सामग्री भी उसी के अनुसार एकत्र की जानी चाहिए| शिक्षक छात्रों के समक्ष पहले कुछ वस्तुओं के निर्माण की विधि का प्रदर्शन करते हुए यह समझाते है कि इन्हें कैसे सफलता पूर्वक बनाया जा सकता है
3. छात्रों में इससे आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का विकास

- विभिन्न छापों के द्वारा कलाकृतिया बनाई जाती हैं जैसे: अंगूठे, आलू, भिन्डी, स्प्रे इत्यादि
- माचिस की खाली डिब्बों और ख़राब अख़बार के द्वारा विभिन्न वस्तुए बनाना जैसे पेन स्टैंड ,टोकरी, किताब रखने का स्टैंड व पुराने कपड़ों से बने बैग|
- कक्षा के एक हिस्से को सजाकर रंगमंच का रूप दिया जाता है जहाँ छात्र कविता या अपनी रूचि के अनुसार अन्य किसी भी कला का प्रस्तुतीकरण कर सकता है| कक्षा में इस प्रकार से सभी अन्य विद्यार्थियों के समक्ष अभिव्यक्ति से छात्रों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है और वह अपने आप को व्यक्त करने में अधिक सक्षम हो जाते है|

नवाचार के लाभ

1. कला और शिल्प के द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास (शारीरिक, ज्ञानात्मक, सामाजिक एवं सम्प्रेषण कौशल) होता है
2. स्मरण शक्ति के साथ भाषा का विकास होता हैं
3. नैतिकता का विकास होता हैं तथा उनमें आत्मनिर्भरता बढती है
4. छात्र विचारों का आदान प्रदान करते हैं

विशेष: यदि कला और शिल्प का ज्ञान छात्रों तक पहुंचाने में अध्यापक किसी कारणवश असहज हो तो:

- किसी भी विशिष्ट कला में निपुण अभिभावकों को सुविधानुसार समय-समय पर विद्यालय में आमंत्रित कर छात्रों को प्रशिक्षित करवाया जा सकता है
- छात्र कई प्रकार की कलाएं विद्यालय में सीख सकेंगे तथा अपने माता-पिता को विद्यालय स्तर पर प्रशंसा का पात्र देख प्रसन्न होंगे

4. रोचक शिक्षण तकनीक

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- सीखने के परिणामों में सुधार
- स्वयं सीखने का वातावरण
- छात्रों के नामांकन की दर में सुधार
- छात्रों की स्कूल छोड़ने और अनुपस्थिति की दर में कमी

• छात्रों की अरुचि और पाठ्यक्रम समझने की असक्षमता को दूर करने के लिए पाठ्यक्रम में नवीन दृष्टिकोण को सम्मिलित करने से इस समस्या का निवारण किया जा सकता है| विभिन्न क्रियाकलापों से छात्रों में पाठ्यक्रम के प्रति रूचि जगाई जा सकती है| प्रतिदिन नए क्रियाकलापों से विद्यार्थी शिक्षा के प्रति नीरस नहीं होंगे अपितु स्वयं सीखने और सीखाने की गतिविधियों में भी सम्मिलित होंगे|

क्रियान्वयन

- कक्षा में प्रभावी शिक्षण व अनुशासन बनाये रखने के लिए हम कक्षा शिक्षण को विभिन्न चरणों में बाँट सकते हैं
- थीम आधारित उपस्तिथि: छात्रों की प्रतिदिन उपस्तिथि थीम आधारित हो सकती है जैसे फल, देश, प्रदेश, महीने, रासायनिक तत्व आदि|
- मैडिटेशन एवं वार्म:अप- इससे उनकी थकान कम होती है और शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित होता है
- विषयानुसार बैठने की व्यवस्था करना: जैसे यदि विलोम शब्द पड़ना है तो छात्रों को विपरीत दिशा में मुँह कर के बिठाया जा सकता है|
- कांसेप्ट एक्सप्लेनेशन: कक्षा शिक्षण विषय पर आधारित गतिविधि के अनुसार होना चाहिए जिससे सभी छात्र कक्षा में सक्रिय रहें| जैसे निबन्ध पढ़ाने के लिए छात्रों को दो समूह में बाँट दिया जाता है|
- **लेखन कार्य:** शिक्षक छात्रों से जैसे कॉपी बनाने की अपेक्षा करते हैं वैसी ही कॉपी बनाकर आवश्यकता अनुसार चित्रों व रंगों से सजाकर, कॉपी छात्रों को देकर वैसी ही कॉपी बनाने के लिए प्रेरित करें|

गलत चार्ट शिक्षण विधि: छात्रों को शिक्षण के पश्चात् चार्ट द्वारा पुनः अध्ययन कराया जाता है परन्तु यदि गलत चित्र या जानकारी लिखी जाये और छात्रों को उससे सही करके बोला जाये तो छात्रों में सही गलत का ज्ञान होता है और ज्ञानेन्द्रियाँ भी विकसित होती हैं
बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर: इस विधि द्वार छात्रों को विषय की जानकारी सही तरीके से देकर बीच बीच में या पाठ के अंत में बहु विकल्पीय प्रश्नों द्वारा छात्रों को विकल्प में से एक सही उत्तर डालकर बाकि विषय से हटकर विकल्प दिये जाते हैं| जैसे: सीता जी का हरण किसने किया था?

1. पोकेमोन 2. डोरेमोन 3. रावण 4. मिक्की माउस

आज का शिक्षक: शिक्षक छात्रों के साथ बैठते हैं और एक विद्यार्थी को शिक्षक बना दिया जाता है वह अपने मनपसंद विषय को अध्यापक की शैली मैं पढाता है|

पेअर एंड शेयर: टॉपिक के अंत में दो-दो छात्रों के ग्रुप बनाएं जाते हैं तथा दोनों छात्र टॉपिक को अपनी समझ के अनुसार एक दूसरे को बनाते हैं|

<u>गृह कार्य:</u> गृह कार्य को परिवेश के अनुसार दिया जाता है जैसे अपने परिवार के सदस्यों के नाम और उनकी आयु जोड़ना घटना इत्यादि| इसी प्रकार यदि क्षेत्र फल सम्बंधित गृह कार्य है तो घर व आस पास की आकृतियों का परिमाप व क्षेत्रफल निकालना|

<u>नामकरण पद्धति:</u> जैसे, भारत के सभी राज्यों के नाम छात्रों को याद करवाने हेतु छात्रों की जेब पर राज्यों के नाम की पर्ची लगा दी जाती है| धीरे-धीरे छात्र एक दूसरे को राज्य के नाम से पुकारते हैं और उन्हें वो याद हो जाते हैं| इसके बाद उनकी पर्ची पर राज्य के नाम के साथ उसकी राजधानी लिख दी जाती है|

नवाचार के लाभ

- छात्रों में शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न हुई
- छात्र उपस्तिथि में सुधार आया

5. दैनिक बाल अखबार

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- प्रतिदिन रिपोर्टिंग प्रणाली की संरचना
- कक्षा /विद्यालय में स्वयं सीखने का वातावरण
- छात्रों के लिए अनुकूल एवं सहयोगी वातावरण
- समाचार पत्र की तरह ही बाल अखबार भी उपलब्धियों, समस्याओं एवं विद्यालयों की घटनाओं को सभी शिक्षकों एवं छात्रों तक पहुचाता है| छात्र दिन भर की गतिविधियों की सूचना एकत्र करते हैं, जिसके लिए उन्हें विद्यालय में न केवल उपस्तिथ बल्कि चैतन्य रहना पड़ता है| विद्यालय की बहुत सी समस्याएं प्रकाश में आती हैं और शिक्षक भी छात्रों की समस्याओं जैसे खेलकूद-, स्काउट, MDM, ड्रेस, शिक्षक उपस्थिति, अध्यापन आदि का निराकरण करते हैं|

<u>क्रियान्वयन</u>

1. छात्रों को दैनिक बाल अखबार के प्रारूप के बारे में बताया जाता है
2. प्रारूप समझने के बाद बच्चे मध्यान्ह भोजन, छात्र एवं अध्यापक उपस्थिति, खेल कूद, शिक्षण कार्य आदि को समाचार के रूप में शामिल कर बाल अखबार निर्मित करते हैं
3. छात्रों को एक-एक सप्ताह के लिए संपादक बनाया जाता है, जबकि कक्षा के शेष छात्र संवादाता का कार्य करते हैं| संपादक प्राप्त समाचारों का समन्वय एवं संपादन करता है
4. संपादक छुट्टी से 15-20 मिनट पहले बाल समाचार पत्र पूरे विद्यालय को पढ़ कर सुनाता है
5. शिक्षक समाचारों से ज्ञात होने वाली समस्याओ का समाधान करते हैं

समाचार पत्र का प्रारूप

छात्र का नाम..... कक्षा..... दिन..... दिनाँक.....
छात्र उपस्थिति से सम्बन्धित।
(कुल छात्र:..... उपस्थिति.....)
M.D.M. सम्बन्धी।
(क्या बना था.....खाने की क्वॉलिटी.....)
स्काउट एवं खेलकूद।
अध्यापन व अध्यापक उपस्थिति।
विशेष घटना– जैसेः– विशिष्ट अतिथि का आना, दुर्घटना, निरीक्षण आदि।

छात्र का नाम: आशीष **कक्षा:** 8 **दिन:** बुधवार **दिनांक:** 10 अगस्त 2016

छात्र उपस्थिति से सम्बंधित

(**कुल छात्र:** 35 **उपस्थित:** 25)

M.D.M. सम्बंधित:

(**क्या बना था:** दाल रोटी और खीर **खाने की क्वालिटी:** बहुत अच्छी थी)

स्काउट एवं खेल कूद: कबड्डी की टीम का चयन हुआ जिसमें स्थान पाने के लिए छात्रों में कड़ी प्रतिस्पर्धा हुई|

अध्यापन एवं अध्यापक उपस्तिथि: सभी अध्यापक प्रार्थना के समय उपस्थित थे

विशेष घटना: आज विद्यालय में नयी ड्रेस के लिए हम सबका नाप लिया गया

नवाचार के लाभ

1. विद्यालय का रिपोर्टिंग स्वरुप सुधारात्मक बनता है
2. छात्रों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का माध्यम मिलता है
3. छात्रों की उपस्तिथि, भाषा कौशल एवं नेतृत्व क्षमता में सुधार के साथ साथ सक्रिय सहभागिता भी रहती है
4. छात्रों की उर्जा को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है

विशेष: दैनिक बाल अखबार को हर रोज़ प्रकाशित अंक पर आधारित कर मासिक व वार्षिक अंक का रूप भी दिया जा सकता है|

5. भविष्य सृजन

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- विद्यार्थी का लक्ष्य स्पष्ट होना
- विद्यार्थी की मनःस्थिति समझना

• छात्रों को शिक्षा का महत्त्व समझाते हुए उनके लक्ष्यों को जानना और उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उन्हें प्रेरित करना | इससे छात्रों में न केवल शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न होती है अपितु उन्हें विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी भी प्राप्त होती है और वह अपने लक्ष्य का चयन कर आकांक्षा पूर्ति के प्रयासों में प्रयत्न प्रारंभ कर सकते हैं |

क्रियान्वयन

1. बाल सभा के दौरान छात्रों को विभिन्न व्यवसायों / सेवा क्षेत्रों के बारे में जानकारी दी जाये
2. यह प्रक्रिया खेल के रूप में की जाती है
3. छात्रों से विभिन्न विषयों पर बात करने की कोशिश की जाती है उनकी रूचि जानने के लिए
4. उनसे स्पष्ट रूप से पूछा जाता है की वह क्या बनना चाहते हैं
5. छात्र अपने विचार और संदेह बिना किसी संकोच के अध्यापक के समक्ष रख सकें
6. उदाहरण
7. यदि विद्यालय में किसी को चोट लगे तो डॉक्टर बनने के इच्छुक छात्र से दूसरे को दवाई लगाने और पट्टी करने आदि का अवसर दिया जा सकता है | यह कार्य अध्यापक की देख रेख में होना अनिवार्य है-| इससे छात्रों को प्राथमिक चिकित्सा के बारे में भी जानकारी मिलती है |

लाभ क्षेत्र :

1. विद्यालय का सुचारू रूप से चलना
2. विद्यार्थियों का लक्ष्य स्पष्ट होना
3. विद्यार्थी को बेहतर जीविकोपार्जन के विकल्प मिलना
4. छात्र-शिक्षक-समुदाय में मजबूत रिश्ता

विशेष :

छात्रों की बेहतर जानकारी के लिए उन्हें आस-पास के अस्पताल, डाक-खाना, पुलिस स्टेशन, फायर स्टेशन इत्यादि का भ्रमण कराया जा सकता है जिससे उन्हें विभिन्न लोगों के विभिन्न कार्यशैली के बारे में पता चलता है |

7. चित्रों एवं कॉमिक्स के द्वारा शिक्षण

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- सीखने के परिणाम अथवा कक्षा अनुकूल सीखने के स्टार में सुधार
- पृथक एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन
- रचनात्मकता का विकास

- कॉमिक्स के माध्यम से पठनपाठन एक सशक्त नवाचार है-, जिसे अपनाने से पाठ्यक्रम सरल व रोचक हो जाते हैं और छात्रों के मस्तिष्क में अंकित हो जाते हैं |
- बहुत से छात्रों को कुछ विषय जटिल या बोझिल लगते हैं | ऐसे विषयों को रोचक बनाने हेतु चित्रों एवं कॉमिक्स का रूप दिया जाता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया सरल हो जाती है |

<u>क्रियान्वयन</u>

1. स्केच व चित्र बनाने की प्रक्रिया को और सरल बनाने के लिए स्टीकर, स्टेंसिल्स भी उपलब्ध रहते हैं
2. आवश्यक चित्र पुरानी किताबों और समाचार पत्रों से भी ली जा सकती है
3. जो अध्यापक चित्र नहीं बना सकते उनकी सहायता के लिए चित्रण की सामग्री भी मिल जाती है

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- सीखने के परिणाम अथवा कक्षा अनुकूल सीखने के स्टार में सुधार
- पृथक एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा का सृजन

रचनात्मकता का विकास

कॉमिक्स के माध्यम से पठन-पाठन एक सशक्त नवाचार है, जिसे अपनाने से पाठ्यक्रम सरल व रोचक हो जाते हैं और छात्रों के मस्तिष्क में अंकित हो जाते हैं |
बहुत से छात्रों को कुछ विषय जटिल या बोझिल लगते हैं | ऐसे विषयों को रोचक बनाने हेतु चित्रों एवं कॉमिक्स का रूप दिया जाता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया सरल हो जाती है |

<u>क्रियान्वयन</u>

1. स्केच व चित्र बनाने की प्रक्रिया को और सरल बनाने के लिए स्टीकर, स्टेंसिल्स भी उपलब्ध रहते हैं
2. आवश्यक चित्र पुरानी किताबों और समाचार पत्रों से भी ली जा सकती है
3. जो अध्यापक चित्र नहीं बना सकते उनकी सहायता के लिए चित्रण की सामग्री भी मिल जाती है

उदाहरण

1. बच्चों का पाठ से पूर्व सम्बंधित चित्रों को दिखाएं
2. बच्चों को प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने का अवसर दें
3. चित्र देखकर समूह-चर्चा को प्रोत्साहित करें
4. चित्र निर्माण के लिए विद्यार्थीयों को प्रोत्साहित करें

नवाचार के लाभ

1. छात्रों में रचनात्मकता व बोधगम्यता का विकास

2. नीरस विषयों को रोचक बनाने में सहायक
3. बच्चों की उत्सुकता को एक सकारात्मक रूप देना

विशेष: बच्चों को भविष्य में छोटी-छोटी रोचक कहानी सुनाकर उन्हें चित्र बनाने को कहें और उन्हें इस चित्रों के संवाद लिखने को भी कहा जा सकता है |

सरल अंग्रेजी अधिगम

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- अंग्रेजी शब्दकोष में बढ़ोत्तरी
- बच्चों की रूचि बढाने के लिए लाभकारी
- आत्म-विश्वास और संप्रेक्षण बढाने में सहयोगी
- <u>नवाचार का सार</u>
- ग्रामीण परिवेश में अंग्रेजी को महत्व न देने के कारण विद्यालयों में इस विषय पर ध्यान नहीं दिया जाता है | एक तथ्य यह भी है कि अंग्रेजी विषय को कठिन माने जाने की भ्रान्ति के कारण छात्र भी अंग्रेजी विषय से दूर भागते हैं | साथ ही हिंदी माध्यम से शिक्षित अध्यापक भी अंग्रेजी के प्रति संकोची हैं | यदि अंग्रेजी पर ध्यान दिया जाये तो इसका समाधान हो सकता है |

<u>क्रियान्वयन</u>

1. अक्षरों की पहचान कराना
2. उच्चारण सही कराना
3. अंग्रेजी में शब्दों की अन्ताक्षरी कराना
4. प्रतिदिन की बातचीत वाले वाक्यों को हिंदी-अंग्रेजी में याद कराना
5. छात्रों से अंग्रेजी में संवाद करना एवं कराना
6. अंग्रेजी सीखने वाले छात्रों को सम्मानित करना

<u>Stepwise Implementation</u>

- छात्रों को 'p', 'l', 'k' इत्यादि silent words से अवगत कराना चाहिए
- Synonym-Antonym, Singular-Plural एवं Word Meanings भी समय-समय से याद कराते रहना चाहिए |

<u>Stepwise Implementation</u>

- छोटे- छोटे शब्दों का उच्चारण कराया जाये, जैसे

Sheet, heat, cut, but, pull, bull

- एक जैसे स्वर वाले शब्द, जैसे

butter, cutter, mother, brother

- Small sentences सिखाये जायें

Mai I come in, May I go to drink water, Give me this book, Take my pen Comics के cartoon characters का role play करवाने से बच्चों के संप्रेक्षण में सुधार होता है|

अध्यापकों एवं सहपाठियों के साथ अंग्रेजी में छोटे-छोटे वाक्य रोज़ बोलने से छात्रों में अंग्रेजी के प्रति झिझक खुल जाती है

उदाहरण

- उन्हें हिंदी के वाक्यों को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करके याद करने के बाद बोलने को कहा जा सकता है
- एक छात्र को डॉक्टर और दुसरे को पेशेंट बनाया जा सकता है
- विभिन्न चरण के बाद भी यदि छात्रों को याद न हो तो उन्हें लिखवाकर याद करवाए जा सकता है
- घर में भी बच्चों को अंग्रेजी में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए

नवाचार के लाभ

1. छात्रों ने अंग्रेजी बोलने व सीखने में काफी सफलता प्राप्त की
2. उनके शब्दकोष, आत्मविश्वास में वृद्धि हुई
3. छात्र हीन भावना से दूर हुए

8. सामुदायिक सहभागिता

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- सामुदायिक जागरूकता में लाभदायक
- शिक्षा में अभिभावकों की भागीदारी में वृद्धि
- छात्रों के लिए अधिक अनुकूल एवं सहयोगी वातावरण
- निरक्षर ग्रामीण समुदाय विद्यालयों की गतिविधियों में रूचि न होने के कारण उससे आसानी से नहीं जुड़ता, फलस्वरूप शिक्षा और उसके महत्व को न तो पूरी तरह समझ पाता है न ही अपने बच्चों को विद्यालय जाने की ओर प्रेरित करता है|
- एक जागरूक समुदाय सामाजिक परिवेश में सकारात्मक भूमिका निभाता है और शिक्षा-
- के महत्व को समझता है

उदाहरण

- बेटी जन्मोत्सव: माताओं को विद्यालय में सम्मानित किया जाता है जिससे उन्हें विद्यालय के बाहर के परिवेश में भी आत्मसम्मान मिले तथा वह आत्म विश्वास से आगे बढ़ सकें| बेटी जन्मोत्सव जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिसके अंतर्गत एक समूह में, शिक्षिका बेटी पैदा होने वाले घर जाकर माता एवं अन्य लोगों को बधाई देती है ताकि संपूर्ण परिवार में एक प्रसन्नता का माहौल उत्पन्न हो

- **सुपर मौम:** हर सप्ताह अनुशासन, साफ़-सफाई, शिक्षा और समयानुसार विद्यालय आने जैसे मापदंडों पर खरा उतरने वाले छात्रों की माताओं को ताज पहना कर सुपर मौम की उपाधि से सम्मानित किया जाता है, और उनकी फोटो भी विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर लगायी जाती है| इससे समाज में महिलाओं का सम्मान बढ़ता है तथा शेष माताओं को भी प्रेरणा मिलती है|
- **वृक्षारोपण:** माह के अंतिम कार्य दिवस पर उस माह में आने वाले सभी छात्र छात्राओं का जन्मदिन मनाया जाता है| इस कार्यक्रम में बच्चों के माता पिता को भी आमंत्रित किया जाता है| विद्यार्थी के जन्म दिवस पर उससे वृक्षारोपण करवाया जाता है और उसे रोपित वृक्ष का संरक्षक बनाया जाता है| इससे उसे प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास भी होता है|
- **अंधविश्वास नहीं विज्ञान: गाँव में जनसमुदाय को भ्रमित होने से रोकने के लिए नियमित रूप से अंधविश्वास से जगाने हेतु कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं ताकि उन्हें बताया जा सके कि ये सभी चमत्कार विज्ञान आधारित क्रियाएं ही हैं| जैसे नींबू काटने पर रक्त निकलना, फोटो से भभूत गिरना आदि**
- **अभिवावक शिक्षणक छात्रों को प्रोत्साहित किया जाता है :ि, पहले अपने अशिक्षित अभिभावकों को हस्ताक्षर करना सिखाये उसके उपरांत शिक्षक द्वारा विशेष रूप से बनाये गए पाठ्यक्रम को उन्हें पढ़ाये एवं शिक्षा की ओर अग्रसर करें**

- **कल्याणकारी योजनायें अभिभावकों को विद्यालय की ओर आकर्षित करने हेतु उन्हें केंद्र : वह राज्य सरकारकी कल्याणकारी योजनाओं से अवगत कराया जाता है जिससे अशिक्षित वर्ग अपने उत्थान के बारे में सोच पाता है**

लाभ

- एक जागरूक अभिभावक न केवल समाज में सकारात्मक भूमिका निभाता है बल्कि शेष समुदाय को शिक्षा का महत्व समझा पाता है
- छात्रों की प्रकृति के प्रति जागरूकता बढती हैं

.10कांसेप्ट मैपिंग

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- सीखने के स्तर में सुधार
- कक्षा /विद्यालय में स्वयं सीखने का वातावरण
- शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिरुचि के स्तर में सुधार
- जटिल विषयों के कारण छात्रों की पाठ्यक्रम में अरुचि, याद रखने की असक्षमता एवं विद्यालय में अनुपस्थिति की परिस्थितियां उत्पन हो जाती हैं| उन्हें कांसेप्ट मैपिंग द्वारा

सभी विषयों के पाठ्यक्रम को सरलता से समझाया जा सकता है| इस नवाचार की सहयता से अध्यापकों को पाठ्यक्रम योजना बनाने में भी सहायता मिलती है|

- यदि विज्ञान का विषय "प्रकाश" पढ़ना है तो कांसेप्ट मैप के द्वारा इसे सरलता से पढाया जा सकता है|
- कांसेप्ट मैप बनाने के लिए प्रकाश को चार्ट पेपर या श्याम पट्टी पर बॉक्स बनाकर उसमें लिखा जाये |
  इसके बाद बच्चों से प्रकाश के स्त्रोत के बारे में पूछते हैं उत्तर दूसरे बॉक्स में लिख दीजिये
-
- उदहारण देते हुए इस चरण को पूरा करें

- इसके पश्चात् छात्रों को परावर्तन भी समझाया जा सकता है
- इस प्रकार छात्रों को प्रकाश का संचरण भी समझाया जा सकता है
- नोट कांसेप्ट मैपिंग का सबसे सुखद एवं प्रभावी :
- परिणाम यह है कि एक शिक्षक अपनी शिक्षण
- प्रक्रिया को प्रभावी तथा बच्चे अपने सभी
- विषयों को आसानी से समझ लेते हैं

.11स्टूडेंट प्रोफाइलिंग

<u>नवाचार के क्षेत्र</u>

- उपस्थिती, अनुशासन, अभिभावक सहयोग, एवं शैक्षिक व शिक्षनोत्तर क्रियाकलापों की गुणवत्ता में सुधार
- <u>नवाचार का सार</u>
- विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक एवं शिक्षनोत्तर क्रिया कलापों का बहुत महत्व है-| अतः इन क्रियाओं के सूक्ष्म स्तर तक पहुंचकर इन्हें छात्रों की आवश्यकताओं के अनुसार सरल, सरल व सुगम बनाना, जिससे कि समस्त छात्र लाभान्वित हों और अपनी रुचि व सामर्थ्य के क्षेत्र में विद्यालय के सहयोग से आगे बढ़ सकें |

<u>क्रियान्वयन</u>

- प्रत्येक विद्यार्थी पर विद्यालय द्वारा किये गये प्रयासों एवं उनके परिणामों का मूल्यांकन 'कसौटी' नामक प्रपत्र द्वारा किया जा सकता है |
- 'कसौटी' को लागू करने के परिणाम स्वरुप विद्यालय के परीक्षाफल, उपस्थिति और अनुशासन के स्तर में सुधार लाया जा सकता है |

- 'कसौटी' की भांति ही 'दर्पण' और 'प्रवाह' के प्रारूप भी तैयार किये गए हैं जो कि अध्यापकों के लिए भी एक कारगर प्रयास हो सकता है |

'कसौटी' का प्रारूप इस प्रकार

- परीक्षाफल में यदि किसी छात्र के प्राप्तांक में कमी देखी जाती है तो उसे सुधारने के लिए नवाचारों का प्रयोग किया जा सकता है |
- नवाचारों के क्रियान्वन के द्वारा कक्षा का सबसे कमज़ोर विद्यार्थी भी शिक्षण को रूचि लेकर पढने लगता है और शिक्षा को सरलता से ग्रहण कर लेता है |
- इस भाग में छात्रों के क्रीड़ा में प्राप्तांक अंकित किये जाते हैं, जिनसे छात्रों को फिजिकल एक्टिविटीज करने का प्रोत्साहन मिलता है |
- छात्रों के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अंक अर्जित करते हैं जिससे उनमें अपने अन्दर की प्रतिभा को दर्शाने का मौका मिलता है | इस भाग के अंतर्गत राउंड द क्लास' कार्यक्रम प्रारंभ किया गया है | इस कार्यक्रम में एक कक्षा के छात्रों को एक दिन विद्यालय की गतिविधियों के सञ्चालन का अवसर मिलता है, जैसे सुविचार लेखन कार्य, राष्ट्रगान वादन | इसी भाग के अंतर्गत 'मुझे कुछ कहना है' नामक मंच छात्रों के लिए बनाया गया है जिसमें वह अपनी छुपी प्रतिभाएं सबके सामने ला सकते हैं |
- उपस्थिति दर को बढाने के लिए छात्रों की संख्या के अनुसार ग्रुप बना दिए जाते हैं तथा ग्रुप का एक लीडर भी नियुक्त कर दिया जाता है | जो स्वयं तो समय पर आता है, अपने ग्रुप के अन्य बच्चों को भी उपस्थिति के लिए प्रेरित करता है एवं यदि कोई छात्र अनुपस्थित है तो उसका कारण भी पता करता है |
- विद्यालय गणवेश के लिए छात्रों को पहले से ही अंक प्रदान कर दिए जाते हैं 5| जो भी छात्र पुरे गणवेश में नहीं आयेगा उसका ½ अंक काट दिया जायेगा | अपने अंको को बचाए रखने के लिए छात्र पुरे गणवेश में आने का प्रयत्न करते हैं |
- अनुशासन व आचरण के लिए भी अंक प्रदान किये जाते हैं | अनुशासन हीनता होने पर छात्र के अंक काट दिए जाते हैं | अगर अनुशासन हीनता गंभीर है तो छात्र के पूरे अंक भी काटे जा सकते हैं |
- इस भाग में दिए गए अंक अर्जित करने के लिए छात्र को प्रशासनीय कार्य करना आवश्यक है | उदहारण के लिए, यदि कोई छात्र अपने गांव के लिए कुछ अच्छा करता है तो उसका कार्य सराहनीय माना जाता है |
- इस भाग में अभिभावकों को भी पहले से अंक दे दिए जाते हैं | इन अंको को सुरक्षित रखने के लिए छात्र अपने माता लय आने के लिए प्रेरित करते हैंपिता को विद्या-|

- यह भाग छात्रों को बोनस अंक अर्जित करने एवं ऋणात्मक अंक मिलने की सम्भावना होती है |
- कसौटी में दिए गए मापदंडो पर सबसे अधिक अंक अर्जित करने वाले छात्र को Student of the Year का पुरस्कार दिया जाता है |

नवाचार के लाभ

1. विद्यार्थियों की क्रीडा, साहित्यिक, सांस्कृतिक व अन्य प्रतियोगिताओं में प्रदेश स्तर तक प्रतिभागिता बढती है
2. विद्यार्थियों के माता-पिता भी अपने बच्चों की प्रगति जानने के लिए अभिभावक दिवस पर विद्यालय में आने लगते हैं |
3. विद्यार्थीयों के आत्मविश्वास में आशातीत वृद्धि भी देखी जा सकती है |

Module for General Topics ICT for 9th and 10th Class Teachers

What is ICT ?

Information and Communication Technologies are defined as all devices, tools, content, resources, forums, and services, digital and those that can be converted into or delivered through digital forms, which can be deployed for realising the goals of teaching learning, enhancing access to and reach of resources, building of capacities, as well as management of the educational system. These will not only include hardware devices connected to computers, and software applications, but also interactive digital content, internet and other satellite communication devices, radio and television services, web based content repositories, interactive forums, learning management systems, and management information systems. These will also include processes for digitisation, deployment and management of content, development and deployment of platforms and processes for capacity development, and creation of forums for interaction and exchange.

The scheme has essentially four components:-

- The first one is the partnership with State Government and Union Territories Administrations for providing computer aided education to Secondary and Higher Secondary Government and Government aided schools.
- The second is the establishment of smart schools, which shall be technology demonstrators.
- The third component is teacher related interventions, such as provision for engagement of an exclusive teacher, capacity enhancement of all teachers in ICT and a scheme for national ICT award as a means of motivation.
- Fourth one relates to the development of an e-content, mainly through Central Institute of Education Technologies (CIET), six State Institutes of Education Technologies (SIETs) and 5 Regional Institutes of Education (RIEs), as also through outsourcing.

National Award for Teachers Using ICT for Innovation in Education

Under the ICT in Schools, to promote computer enabled learning and usage of ICT in teaching in Government and Government aided Secondary and Higher Secondary Schools has provision for instituting the National Award for innovative use of ICT to motivate the Teachers and Teacher Educators for innovative use of ICT in teaching-learning.

The National Award for Teachers using ICT for innovation in education for the year 2010, 2011, 2012 and 2013 was given away to the 9 awardees along with the National Teacher Award on Teachers Day.

Digital Content and Resources

The state of Himachal Pradesh endeavours to provide universal, equitable, open and free access to ICT and ICT enabled tools and resources to all students and teachers. All digital learning resources and software resources will conform to the National Policy on Open Standards of the Government of India (http://egovstandards.gov.in).

Given the diversity of the country's educational, linguistic and social situation, there exists a need for a wide variety of digital content and resources for different subjects, curriculum, ages/grade levels and languages. Unicode fonts will be used to ensure universal access, compatibility and amenability to transliteration and translation.

Capacity building of In-service Teachers

Capacity building of teachers will be the key to the widespread infusion of ICT enabled practices in the school system. A phased programme of capacity building will be planned. In service training of teachers will comprise of Induction Training as well as Refresher Courses. The induction trainings will be imparted by the Regional Institutes of Education of the NCERT, State Councils of Educational Research and Training (SCERTs) or such other institutions of the Central and State Governments and will preferably be completed before the commencement of the academic year. The refresher trainings will be carried out every year to enable teachers to share, learn and keep abreast of the latest trends in ICT based teaching learning processes. The induction training will be followed by teacher's evaluation to ensure that the minimum competency is achieved.

Training in ICT will be integrated with general training programmes organised for teachers and school leaders at all levels in order to popularise its use and to demonstrate effective practices in ICT.

Beginning with an initial sensitisation through ICT operational skills and ICT enabled subject teaching skills, teachers will become part of online professional groups (e.g. English teachers association) to continue their education, pool in their resources and actively contribute to the strengthening of domain specific knowledge within the country. The forums will also facilitate continuous development of ICT skills introducing them to tools and resources in different subjects / specialisations as well as create and share learning resources in those subjects.

Teacher participation in the digital content development process will catalyse its broad based usage in the classrooms. Teacher capacities will be developed in instructional design, selection and critical evaluation of digital content, and strategies for effective use of digital content to enhance student learning.

Open End Resources:

Children love open-ended resources because of the possibilities they afford them. Using open-ended resources encourages imagination, creativity and problem-solving skills so play can be richer and more complex. This kind of play ensures rich learning and is fun! For example, the use of open-ended resources supports children's role as scientists who are constantly conducting experiments, testing ideas, and building their understanding of the world.

Some of them are NROER (National Repository of End Resources), Doubt Nut etc.

Structure of the module for ICT

Session 1	ICT-Introduction, Importance, Govt Policy, Guideline

1. Introduction

In this fast moving world nothing is left untouched of technology. The information which was of far reach of individual earlier is now just one click away. Easy and quick learning is possible due to the use of ICT. Keeping in view the importance of ICT in education this module is being developed by State RMSA to help and hands hold the field functionaries to achieve the goal of sustainable and quality education.

Information and Communication Technologies (ICT) are defined as all devices, tools, content, resources, forums, and services, digital and those that can be converted into or delivered through digital forms, which can be deployed for realising the goals of teaching learning, enhancing access to and reach of resources, building of capacities, as well as management of the educational system.

These will not only include hardware devices connected to computers, and software applications, but also interactive digital content, internet and other satellite communication devices, radio and television services, web based content repositories, interactive forums, learning management systems, and management information systems. These will also include processes for digitisation, deployment and management of content, development and deployment of platforms and processes for capacity development, and creation of forums for interaction and exchange.

ICT Policy

Vision, Mission and Policy Goals

VISION: The ICT Policy in School Education aims at preparing youth to participate creatively in the establishment, sustenance and growth of a knowledge society leading to all round socio-economic development of the nation and global competitiveness.

MISSION: To devise, catalyse, support and sustain ICT and ICT enabled activities and processes in order to improve access, quality and efficiency in the school system

POLICY GOALS : To achieve the above, the ICT Policy in School Education will endeavour to:

CREATE

- an environment to develop a community knowledgeable about ICT
- an ICT literate community which can deploy, utilise, benefit from ICT and contribute to nation building
- an environment of collaboration, cooperation and sharing, conducive to the creation of a demand for optimal utilisation of and optimum returns on the potentials of ICT in education.

PROMOTE

- universal, equitable, open and free access to a state of the art ICT and ICT enabled tools and resources to all students and teachers
- development of local and localised quality content and to enable students and teachers to partner in the development and critical use of shared digital resources
- development of professional networks of teachers, resource persons and schools to catalyse and support resource sharing, upgradation, and continuing education of teachers; guidance, counselling and academic support to students; and resource sharing, management and networking of school managers and administrators, resulting in improved efficiencies in the schooling process
- research, evaluation and experimentation in ICT tools and ICT enabled practices in order to inform, guide and utilise the potentials of ICT in school education
- a critical understanding of ICT, its benefits, dangers and limitations.

MOTIVATE AND ENABLE

- wider participation of all sections of society in strengthening the school education process through appropriate utilisation of ICT.

Information and Communication Technology in School Education

CHALLENGES AND ISSUES

Challenges before the Education System in India

- Concerns of reach and access to education continue to attract widespread attention of all segments of society. Following sustained initiatives spread over many decades, the country can today boast of perhaps one of the largest ever schooling systems. With increased throughput, and ever increasing numbers of students aspiring for higher education, concerns of equity in education and issues of quality have also begun to attract attention.

- The challenge of developing alternate modes of education, continuing education, teacher capacity building, information systems for efficient management of the school system are being addressed. With Information and Communication technologies becoming more

  accessible, reliable and mature,the prospect of leveraging ICT for education is becoming increasingly feasible.

Information and Communication Technologies in Schools

Information and Communication Technologies have enabled the convergence of a wide array of technology based and technology mediated resources for teaching learning. It has therefore become possible to employ ICT as an omnibus support system for education. The potential of ICT to respond to the various challenges the Indian education system poses are:

- ICT can be beneficially leveraged to disseminate information about and catalyze adaptation, adoption, translation and distribution of sparse educational resources distributed across various media and forms. This will help promote its widespread availability and extensive use.
- There is an urgent need to digitize and make available educational audio and video resources, which exist in different languages, media standards and formats.
- Given the scarcity of print resources as well as web content in Indian languages, ICT can be very gainfully employed for digitizing and disseminating existing print resources like books, documents, handouts, charts and posters, which have been used extensively in the school system, in order to enhance its reach and use.
- ICT can address teacher capacity building, ongoing teacher support and strengthen the school system's ability to manage and improve efficiencies, which have been difficult to address so far due to the size of the school system and the limited reach of conventional methods of training and support.
- Using computers and the Internet as mere information delivery devices grossly underutilizes its power and capabilities. There is an urgent need to develop and deploy a large variety of applications, software tools, media and interactive devices in order to promote creative, aesthetic, analytical and problem solving abilities and sensitivities in students and teachers.

Monitoring and Evaluation

A mechanism for regular monitoring and evaluation will be made an integral part of the ICT programme. The State advisory group will function as the nodal agency for this process.

MONITORING

- The Advisory Group constituted by the States will identify criteria, performance measures, periodicity of monitoring/ measurement, methodology to be adopted and reporting mechanism.
- Monitoring of progress and achievement of physical targets will be an ongoing activity built into the ICT programme. In addition to the national level monitoring of targets and objectives, the respective States would have an internal mechanism for overseeing the implementation of the programme through a monitoring committee constituted for the purpose. The School Education Management Information System (SEMIS) and DISE would be a part of the monitoring tool.

EVALUATION

- An independent third party evaluation of the programme will be undertaken at appropriate stages in the project. The States will identify a suitable agency to carry out the evaluation as per the requirements of the project.
- The criteria for evaluation will include various aspects related to each of the segments of the policy, viz., the ICT programme, infrastructure,digital resources, capacity building and the overall management of the programme. A framework for evaluation criteria will be developed.
- University Departments of Education, Educational Technology or ICT related departments will be encouraged by the States to take up research studies on various as4pects, like impact assessment studies of the ICT programme, in order to inform and correct the process.

SHARING OF RESULTS AND FINDINGS

- The results and findings from the monitoring, evaluation and research will be widely disseminated and used not only to correct each aspect of the ICT programme, but also to enable dissemination of best practices.

POLICY REVIEW

- The ICT Policy for School Education recognises the need for frequent revisiting of its provisions. A suitable mechanism to revisit each segment of the Policy will be evolved. The policy will ideally be revised every two years.
- A broad mechanism for consultations with all stake holders will be evolved. Inputs from the inter ministerial group, the State advisory groups, the monitoring and evaluation findings, the programme monitoring and evaluation group will be utilised for informing the revision.

Infrastucture Options

Use of ICT for Professional Development Online courses (https://www.coursera.org)

List of online courses

Link for ICT policy guidelines

http://ictschools.gov.in/

2. Objective

i. To acquaint teachers with digital devices (input and output)

ii. To help teachers to use and connect the digital devices

iii. To acquaint teachers with use of MS Office in teaching.

iv. To acquaint teachers with the various types of files available on internet viz (Text, Docs/PDF/ XLXs/ PPT/ GIF)

v. To acquaint teachers integrate ICT with their concerned subject.

vi. To acquaint teachers with the use of ICT to search information/specific topics available on internet and to use in lesson.

vii. To make teachers competent to access and use information with the help of ICT.

viii. To acquaint teachers with the Swyamsidham (RMSA) portal developed by State RMSA, HP Govt. (Registration, login and use of portal) (troubleshooting contact ANO (IT) at DDHE office and Co ord(ICT) at DIET of concerned distt.).

ix. Use of ICT for additional charges.

3. Requirement

i. Availability of computer system (CPU/ monitor/ keyboard/ mouse/ speakers)

ii. Availability of internet connection preferably broadband.

iii. Availability of Smart Class room.

4. Activity

Day 1	**Topic**
Session 1	ICT-Introduction, Importance, Govt Policy, Guideline
Session 2	Introduction to Digital Devices and their working (KYAN, I/O Devices, Storage Devices) , Working of Different software (MS Office, Internet)
Lunch	
Session 3	Tools of ICTs, Different Sources
Session 4	To acquaint teachers integrate ICT with their concerned subject
Day 2	
Session 5	Demonstration of various tools for Execution and Evaluation in teaching
Session 6	Introduction to SWAYMSIDHAM portals , registration and login
Lunch	
Session 7	Hands on training, preparation of lesson plans and presentation thereof. Discussion and Feedback
Session 8	

Session 2	Introduction to Digital Devices and their working (I/O Devices, Storage Devices,KYAN) , Working of Different software (MS Office, Internet), Social networks

5. The parts of a computer that we are going to discuss are the essential hardware parts that a computer needs to operate. These components are mostly internal and external in the case of the necessary peripherals.
6. The basic computer parts are as following:

Sr. No	ICT Devices	Images
1.	Computer Display or Monitor	
2.	Motherboard	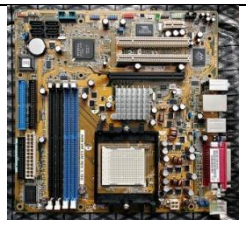
3.	CPU	
4.	Main Computer Memory (RAM)	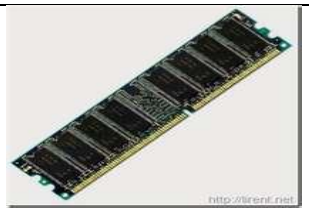
5.	Video Card or Graphics Card	

6.	Storage Devices (Hard Disk Drive & Optical Drive)	
7.	Computer Power Supply Unit (PSU)	
8.	Keyboard	
9.	Mouse	

You need the above computer parts so to have an operational computer. You cannot skip anything except the video card only in case that your motherboard-CPU combo has integrated graphics hardware (An on-board graphics card integrated to motherboard). This means that a graphics card is present so there is no need to buy an extra card.

Let's see now the importance and the role of the basic computer parts. List of computer parts from the higher to the lower importance.

Computer Power Supply Unit

Importance: The computer power supply unit is the most important of the basic computer parts. Faulty computer Power Supply Unit can cause very nasty problems that are not easily to detect. The great majority of people ignores the importance of the quality of the power supply and just buys the cheapest Power Supply Unit that cover their computer's watt needs.

The quality of the Power Supply Unit is something that you must absolutely pay attention to it. And have in mind that quality must be paid. It is better to cut from other parts of the computer than to buy a cheaper and lower quality Power Supply Unit. Choose the manufacturer and model of the Power Supply Unit wisely after an extensive market research. You can find nearly for every Power Supply Unit out there a website that has already tested it.

Check it out before buying it. Something last: You buy Power Supply Unit last. Check here why.

Role: The computer power supply is responsible to power up your computer and its parts. The computer parts, basic or not, may be internal or external. Some external elements have a separate power supply feed like some external hard disk drives and they do not use the computer's power supply. Everything else that does not have a separate electric feed is powered by the Computer Power Supply Unit..

The Power Supply Unit transforms the AC to DC providing also different voltage lines. These lines are combined to Power Supply Unit's connectors. Quality Power Supply Unit have minimal fluctuations in these voltage lines promoting the stability of the system under heavy load or overclocking. For more information about the Power Supply Unit please follow this link.

Motherboard

Importance:From all the basic computer parts the second more important is the Motherboard (mobo). Motherboard functions, quality and support determine the role of your computer. According to your motherboard you buy all the other components. The type of the motherboard is determined according to several factors such as the technology that it uses, its features, the CPU and Memory support, its expand-ability connectivity and more. Check on the motherboard diagrams for more about the motherboard and how its parts work. Also here is a guide on how to install a motherboard.

Role

The motherboard's role on the computer is to offer a "body" where the rest basic computer parts will connect. All the internal components fit onto the motherboard or connect to it through wires. The motherboard provides at the back an I/O panel where you connect peripheral and external devices like keyboard, mouse, speakers, USB devices, microphone, display monitor and more.

3. Computer Memory – RAM

Importance

Computer memory is the third of the most important basic computer parts. And this is because computer memory is a very sensitive hardware part. Be sure to buy computer memory of high quality by a trusted RAM manufacturer. Usually, a faulty computer memory crashes the

whole system losing all of your work. Another very important issue before buying computer RAM is to check the compatibility between the RAM modules and your motherboard.

Role

The Random Access Memory role in the computer is to store temporarily data for the CPU to process. Because the communication between CPU and RAM is many times faster than between CPU and Hard Drive, the data is loaded to the RAM and then is being accessed from the central processor.

The desktop computer memory plays an important role to the performance of the computer. The more RAM the computer has the more data can store in it and the faster the processing will be. Of course RAM modules can be differentiating to their speed, technology, capacity, timings and more. There are many desktop computer memory types. You can read more about computer memory types by following this link.

Central Processor

Importance

Well, if you plan not to play video games then the fourth most important of the parts of a computer is the central processor. There are only two major companies that manufacture computer processors for the home desktop computers. These manufacturers are Intel and AMD. They both manufacture quality products. So quality does not apply here.

The importance of the processor though relies on the intended use of the computer. For example, if you need to do audio or video editing then you need a multi-core, powerful processor. If you just want to run office applications, a simple dual-core processor will do the job. You buy computer processor always according to your needs.

Role

The role of the CPU in the computer is to process data. Every running program is being processed by the CPU. So actually the result of this process is what you actually see on the computer display. The CPU is considered the brain of the computer.

Video Card

Importance

If you play games then video card is most important than the CPU. Gaming and graphics performance is mainly depended on the potential of the video card. It is not in the first triad though because the most important thing is to ensure computer stability, so it comes 4th in case that you intend to play games or to use graphics related professional programs.

Role

The graphics card is the computer component that your computer display connects to. It is responsible to draw what you see on the monitor. It has a processor that is called GPU (Graphics Processing Unit) and undertakes the processing of every video or graphics application. The faster the video card is the smoother the video, game or application will be.

Hard Disk Drive

Importance

The importance of the hard disk comes last as it is just storage medium. In case that your hard disk capacity is low you can just add a new hard disk and expand the overall storage capacity of your computer. Though, hard disk can play an important role to performance. Solid state hard drives are newer technology hard disks that perform much faster than the common SATA disks. They are also a lot more expensive.

Faults on hard drive may be critical. You may lose important files if a hard disk drive fails. That's why you must always have more than one hard drives in your computer.

Role

The role of the hard disk drive in the computer is to store data files. It is the main storage of your computer. It was also known as memory.

A hard disk is necessary because it contains the installation directories and files of the operation system (Windows, Mac etc.) and the programs. The more space you have the more you can store. Also there are some techniques that we are going to see at a later time to increase performance or security if you have two or more hard drives. This is nothing else than implementing a RAID array. I am going to show you how to create a RAID array in a future article.

Peripherals: Keyboard, Mouse and Monitor

Importance

Peripherals are the least important basic computer parts because their functionality does not affect the stability or performance of the whole computer. For example if a mouse gets broken your computer will not be harmed or stop working. You just replace your mouse and everything returns back to normal. The same happens with the keyboard and display parts.

Their importance though is high because without these peripherals you cannot use the computer.

Role

The Role of these basic computer parts is obvious. The mouse and keyboard are for interacting with the computer. Both, especially the keyboard, consist of the interface between the computer and the human. The computer display presents the results of this communication between you and the computer.

In this article the importance and the role of the basic computer parts has been discussed. This classification is only based according to experience with the computers. We come across many troubles. The first thing a computer must ensure is stability and then performance. Minimizing the possibility of the "blue screens of death" is essential for every computer whatever its purpose is.

Computer Components:

Computers are made of the following basic components:

Power Supply - The power supply comes with the case, but this component is mentioned separately since there are various types of power supplies. The one you should get depends on the requirements of your system. This will be discussed in more detail later.

Motherboard - This is where the core components of your computer reside which are listed below. Also the support cards for video, sound, networking and more are mounted into this board

Microprocessor - This is the brain of your computer. It performs commands and instructions and controls the operation of the computer.

Memory - The RAM in your system is mounted on the motherboard. This is memory that must be powered on to retain its contents.

Drive controllers - The drive controllers control the interface of your system to your hard drives. The controllers let your hard drives work by controlling their operation. On most systems, they are included on the motherboard, however you may add additional controllers for faster or other types of drives.

Hard disk drive(s) - This is where your files are permanently stored on your computer. Also, normally, your operating system is installed here.

CD-ROM drive(s) - This is normally a read only drive where files are permanently stored. There are now read/write CD-ROM drives that use special software to allow users to read from and write to these drives.

Floppy drive(s) - A floppy is a small disk storage device that today typically has about 1.4 Megabytes of memory capacity.

Other possible file storage devices include DVD devices, Tape backup devices, and some others.

Monitor - This device which operates like a TV set lets the user see how the computer is responding to their commands.

Keyboard - This is where the user enters text commands into the computer. Mouse - A point and click interface for entering commands which works well in graphical environments.

K-Yan

Projector Controls:

1. To turn on or turn off the projector and to change the quality of projected Image.
2. Focus Ring (+ Zoom in XGA model) To focus the projected image.
3. Projector Lens When not in use, cover with lens cover to protect the lens.
4. DVD Drive K-Yan comes with a DVD-drive (DVD-RW/ CD-RW). This drive is capable of reading DVDs, data CDs, playing VCDs, Audio
5. CDs, MP3 CDs and writing on CD-R, CD-RW & DVD.
6. Stereo Speakers 2 built-in speakers with audio amplifi er.
7. Power Button Press this button to turn K-Yan ‘on’.
8. Power Status LED A blue light indicates that K-Yan is ‘on’.
9. Volume Control Knob Rotate in clockwise direction to increase the volume of sound coming from K-Yan.
10. Lens Cap To protect the projector lens when projector is ‘OFF’.
11. Front USB Two ports are provided for connecting USB devices.

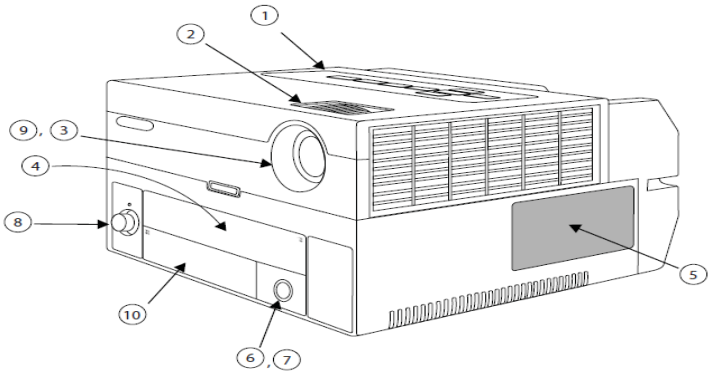

Ports and Connections (On rear side)

1. Keyboard Port (PS2) For connecting to normal wired keyboard.

2. Mouse Port (PS2) For connecting to normal wired mouse.

3. USB Ports (2) Connect your wireless keyboard & mouse receiver here.

4. Network Port Connect to an Ethernet network to access other network resources.

5. Audio Line-out Port For external amplifies speakers/ sound system

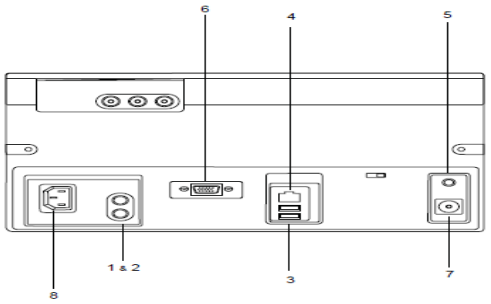

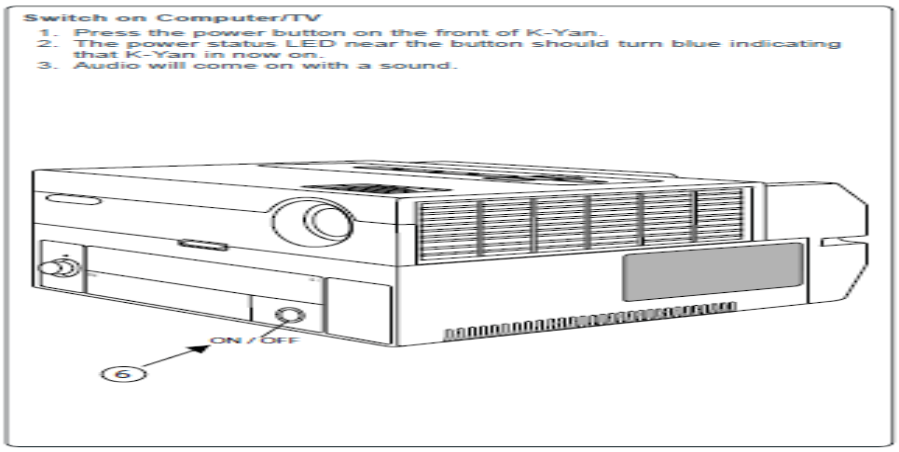

Using the Control Panel

Power / Standby
Press "Power / Standby" to switch ON / OFF the Lamp.

Source
Press "Source" to choose RGB, source.

Menu
Press "Menu" to launch the on screen display (OSD) menu. To exit OSD, press "Menu" again.

Keystone
Adjusts image distortion caused by tilting the projector (15 degrees).

Four Directional Select Keys
Use ▲▼◄► to select items or make adjustments to your selection.

Enter
Confirm your selection of items.

Re-Sync
Automatically synchronizes the projector to the input source.

Adjusting the Projector Zoom / Focus

You may turn the zoom lever to zoom in or out. To focus the im- age, rotate the focus ring until the image is clear. The projector will focus at distanoes from 4.9 to 39.4 feet (1.5 to 12.0 meters) with mechanical travel.

Quick Connect Guide

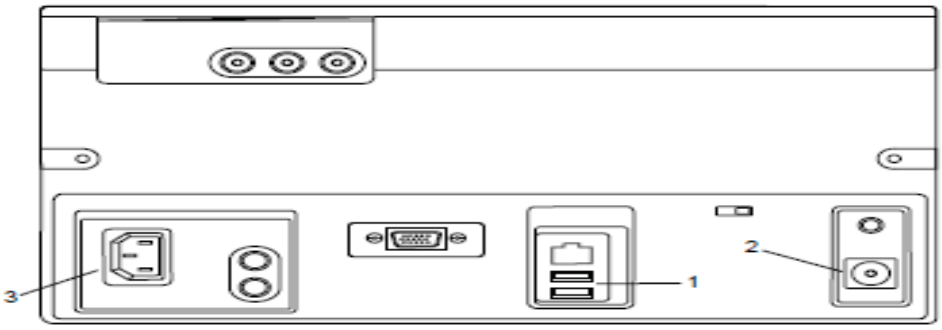

1 Connect R eceiver to USB Port

2 Connect TV cable

3 Connect P ower Cord (Through UPS)

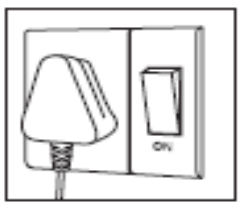

4 Switch on Power Supply

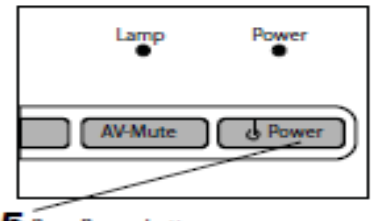

5 Press P ower button on projector . 'ON' LED tur ns from orange to green

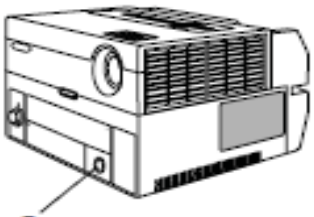

6 Press front 'ON' button. K-Yan will star t with a K-Yan logo image.

Session 3	Tools of ICTs, Different Sources

These tools use the power of social media to help students learn and teachers connect.

Edmodo: Teachers and students can take advantage of this great tech tool, as it offers a Facebook-like environment where classes can connect online.

Grockit: Get your students connected with each other in study sessions that take place on this great social site.

EduBlogs: EduBlogs offers a safe and secure place to set up blogs for yourself or your classroom.

Skype: Skype can be a great tool for keeping in touch with other educators or even attending meetings online. Even cooler, it can help teachers to connect with other classrooms, even those in other countries.

Wikispaces: Share lessons, media, and other materials online with your students, or let them collaborate to build their own educational wiki on Wikispaces.

Pinterest: You can pin just about any image you find interesting on this site, but many teachers are using it as a place to collect great lesson plans, projects, and inspirational materials.

Schoology: Through this social site, teachers can manage lessons, engage students, share content, and connect with other educators.

Quora: While Quora is used for a wide range of purposes, it can be a great tool for educators. It can be used to connect with other professionals or to engage students in discussion after class.

Ning: Ning allows anyone to create a personalized social network, which can be great for both teachers and students alike.

OpenStudy:Encourage your students to work together to learn class material by using a social study site like OpenStudy.

ePals: One of the coolest benefits of the Web is being able to connect with anyone, anywhere. ePals does just that, but focuses on students, helping them to learn languages and understand cultures different from their own.

Learning

These educational tools can help you to make lessons fun, interesting, and more effective.

Khan Academy: Many teachers use this excellent collection of math, science, and finance lectures and quizzes to supplement their classroom materials.

MangaHigh: MangaHigh offers teachers a wealth of resources for game-based learning in mathematics.

FunBrain: If you're looking for a great collection of educational games, look no further than FunBrain. On it, teachers can take advantage of fun tools for math and reading.

Educreations: Educreations is an amazing online tool for the iPad that lets teachers (or students) create videos that teach a given topic. Perfect for studying or getting students to show off their knowledge.

Animoto: Animoto makes it simple to create video-based lessons or presentations for the classroom and to share them with students or anyone else.

Socrative: Available for computers, mobile devices, and tablets, this student response system engages students through games and exercises on any device they have on hand. Even better, teachers can easily assess student progress and track grades.

Knewton: Adaptive learning has been a hot topic in recent months, and with Knewton it's something that any teacher can access and use. The site personalizes online learning content for each student according to his or her needs.

Kerpoof: On Kerpoof, students can get creative with their learning with games, interactive activities, drawing tools, and more that are both fun and educational.

StudySync: With a digital library, weekly writing practice, online writing and peer reviews, Common Core assignments, and multimedia lessons available, this site is a fully-featured tool for teaching and learning that can be a big help in the classroom.

CarrotSticks: On this site, teachers can take advantage of a wide range of math learning games, giving students practice while they have fun.

Lesson Planning and Tools

Use these tech tools to pull together great lessons and design amazing and memorable student projects.

Teachers Pay Teachers: Have great lessons to share? Looking for something to add to your classes? On this site you can do both, selling your own class materials and buying high-quality resources from other teachers.

Planboard: Make sure your lessons are organized and that your day runs smoothly with the help of this amazing online tool designed just for teachers.

Timetoast: Timetoast is a pretty cool for student projects, allowing them to build sleek, interactive timelines in minutes.

Capzles: There are so many different ways that Capzles can be used in the classroom, there's bound to be an application that fits your needs. What does it do? Capzles makes it simple to gather media like photos, videos, documents, and even blog posts into one place, making it perfect for teaching, learning, or online projects.

Prezi: Want to build presentations that will wow your students? Make use of this online tool that makes it simple to do all kinds of cool things with your lessons, even allowing collaboration between teachers.

Wordle: Create stunning word clouds using Wordle, a great complement to language lessons of any kind.

QR Codes: QR codes (or quick response codes) are showing up with greater frequency in education. If you'd like to get in on the trend, you'll need a tool to create and manage the codes like Delivr and one to read codes, like any of those listed on this site.

Quizlet: Quizlet makes it easy for teachers to create study tools for students, especially flashcards that can make memorizing important information a snap.

MasteryConnect: How are your students performing with regard to state and common core standards? MasterConnect makes it simple to track and analyze both, as well as other elements of student performance.

Google Docs: Through Google Docs, teachers can create and share documents, presentations, or spreadsheets with students and colleagues as well as give feedback on student-created projects.

YouTube: Not all schools allow YouTube, but they are missing out as the site contains a wealth of great learning materials for the classroom. There's even a special education-focused channel just for teachers and students.

TED-Ed: TED isn't just a great place to find inspiration anymore, the site also contains numerous videos that are organized by subject and can help you to teach everything from how pain relievers work to Shakespearean insults.

Glogster:Glogster is a social site that lets users mash up music, photos, videos, and pretty much anything else you'd like. It's a great way to create learning materials and a handy tool for creative student projects.

Creaza: Want to bring your student projects into the 21st century? Creaza can make that possible, offering tools to brainstorm, create cartoons, and edit audio and video.

Mentor Mob: On Mentor Mob, you or your students can create a learning playlist, which is essentially a collection of high-quality materials that can be used to study a specific concept.

Useful Tools

These tools can help you to stay connected, organized, and increase the ease of building multimedia lessons and learning tools.

Evernote: Capture great ideas, photos, recordings, or just about anything else on your Evernote account, access it anywhere, and keep it organized. A must-have tool for lesson planning.

Twitter: There are so many ways Twitter can be used in education. Teachers can connect with other educators, take part in chats, share their ideas, or even use it in the classroom to reach out to students.

Google Education: Google offers a number of great edtech resources for teachers, including email and collaborative apps, videos, lesson plan search, professional development, and even educational grants.

Dropbox: Easily store, share, and access any kind of data from anywhere with the easy-to-use and free Dropbox service.

Diigo: Diigo lets you treat the web like paper-based reading material, making it simple to highlight, bookmark, take notes, or even add sticky notes.

Apple iPad: One of the most widely used, though expensive, tech tools being used in today's classroom is the Apple iPad. With a host of educational apps being developed for the device, it's become a favorite of teachers and students alike across the nation.

Aviary: Aviary is a suite of tools that make it easy to edit images, effects, swatches, music, and audio or to create and modify screen captures.

Jing: If you're teaching kids about tech or just about anything else, a great screenshot program is essential. Jing is one great option that allows teachers to take screenshots as images, record up to five minutes or videos then edit and share the results.

Popplet: You and your students can use Popplet to brainstorm ideas, create mindmaps, share, and collaborate.

Google Earth: From geography projects to learning about geological processes, Google Earth can be an amazing and fast way to show students anywhere in the world.

DonorsChoose: Need funding for a classroom project? You can get it through this site that hooks up needy teachers with willing donors.

SlideShare: With SlideShare, you can upload your presentations, documents, and videos and share them with students and colleagues. Even better, you can take advantage of materials that other have uploaded as well.

LiveBinders: Like a real-life three ring binder, this tech tool allows you to collect and organize resources. Much better than a binder, however, the site also comes with tools to connect and collaborate and a virtual whiteboard.

AudioBoo: Through this tool, you can record and share audio for your students or anyone else.

Available websites:

http://nroer.gov.in/

www.youtube.com
www.solarsytemscope.com
www.theplanets.org
www.earthquake.usgs.gov
www.kidsastronomy.com
http://www.ncert.nic.in/ncerts/textbook/textbook.htm
http://www.math.nus.edu.sg
www.kidssource.com
www.learnnext.com
http://ncertbooks.prashanthellina.com/
http://www.pbs.org/thestoryofindia/teachers/lessons/
http://rmsahimachal.nic.in/
Central Board of Secondary Education (CBSE)
National Council Of Educational Research And Training (NCERT)
HP School Education Board
Sarva Shiksha Abhiyan
www.easyenglish.com
www.examenglish.com
http://www.learnerstv.com/

Session 6	Introduction to SWAYMSIDHAM, NCERT, NROER portals , registration and login

Swayamsidham Project

Swayamsidham Project has been created by RMSA for qualitative improvement of all the stake holders in the govt. schools in order to make the school self supportive and self reliant. It provides an interactive portal facility to all the schools at (rmsahimachal.nic,in) in order to strengthen the heads , teachers to be instructional leaders in respect of pedagogy (teaching learning process) of all the subjects and to invoke team spirit in the school system. It is equally beneficial to the students also. It provides **Resource Material** of Lesson Indicators, Lesson Plans, Question Banks and queries of the students and teachers. It contains Modules - come- hand Books of teachers for the classes of 9^{th} and 10^{th} classes.

In order to motivate the students for self-study and competitive based examinations, RMSA has entered into a Memorandum-of-Understanding with an academy (ASPIRE IIT/Medical).The said academy has prepared an game-based-question-bank and assessment sheets for the 9^{th} and 10^{th} classes to be uploaded on the portal. The design of the content will be as under:

(1) **Basic and Advance Level Notes** : The assessment sheets are designed to integrate study material, examples and question bank to check the *progress.*

(2) **Question bank**: Question bank based on five levels have been developed in the form of five stage game. These are Root Stage; Take off Stage, Smart Stage, Intelligence Stage and Genius Stage. The game has been designed as follows:

- **Root Stage:** The entry into the root level question bank will be open to all the students. There will only be one question paper to qualify this stage. The students will have to get 80% of marks, then the student will be promoted to next stage. If failed, this level will be locked & the student will be sent to Basic Level Notes (assessment sheets).

  Take-Off-Stage: After qualifying the Root Level Questions, the student will be entitled to enter into the take off stage. There will be 2 question papers in it. On qualifying these with 70% marks, next Level will be unlocked and if failed, this level will be locked & the student will again be sent back to Basic Level Notes (assessment sheets).

Smart Stage: In smart stage, there will again be two question papers. On securing 60 % marks, Intelligence Stage will be unlocked & he/she will be entitled Smart. If failed, this level will be locked and the student will be sent to Advance Level Notes (assessment sheets).

Intelligent Stage: Advance Level Stage: In this stage, there will be three question papers .On securing 60 % marks, Genius Stage will be unlocked & he/she will be
entitled Intelligent .If failed, this level will be locked & student will be send to advance level notes.

Genius stage: In the fifth stage, there will be 2 question papers. On securing 80 % marks, he/she will be entitled Genius. If failed, this level will be locked & the student will be sent to revise advance level notes.

It is to be appreciated that above said e-based study material/question bank for competitive based examinations like JEE /NEET exams have successfully been integrated on RHS of Swayamsidham Portal (rmsahimachal.nic.in) as *On-line competitive test module* .

In order to make portal facility functional for the teachers and students of the schools, having well equipped computer labs and internet facility, the principals of the schools are to execute the following instructions:

1. Submission of data in the attached format of annexure A on rmsaswyamsidham@gmail.com.
2. To ensure the use the **Resource Material (Learning Indicators, Model Lesson Plans , Question Banks) and training modules** already uploaded on the swyamsidham site.
3. To answer the students on-line queries asked on the portal of swyamsidham
4. Implementation of constructivist approach in teaching learning process (annexure 2).
5. In order to create computer friendly environment, organising the in-school training to all the teachers regarding computer literacy such as preparing PPTs, word documents, creating Email ID, browsing on interment.
6. Preparation of soft copies of constructivist lesson plans, question banks based on six levels of learning .
7. The best lesson plans will be rewarded and uploaded on the portal to be displayed in all the schools.

Uploading of the following information will enrol the 9th and 10th class students on the portal:

Deta Format for On-Line Test of the Students									
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
Email /Mobile No	FirstName	LastName	MobileNo	RollNo	Batch	District	School	Division	Student Photo Path

Note1 : Column 1 = Email /Mobile No(whichever is available)

Note2 : Column 2 = Roll No. = UDISE number of the school and 09001(for class 9thClass)
= UDISE number of the school and 10001(for 10th class)

Note3 : Column 6 = Batch = class of the student(9^{th} /10^{th})

Note4 : Division = Block (Edu Block)

Note4 : Student Photo Path = photo of the candidate may be uploaded after the registration of the candidate.

This information is to be sent on **rmsaswyamsidham@gmail.com**

How to Register in RMSA Portal rmsahimachal.nic.in

Pre requirement:-

1. Availability of good internet connection.
2. Active Email account.
3. Active PMIS Emp Code. ; Password of PMIS Emp Code (FIRST THREE LETTERS OF YOUR NAME IN CAPITAL and PMIS number in case of Department of Higher education /123456)(If not active kindly contact ANO IT posted at DDHE of concerned Distt or send the detatail of teachers with PMIS no to rmsaswyamsidham@gmail.com) List enclosed. Following is the flow of instruction to be followed to get registered in the RMSA.

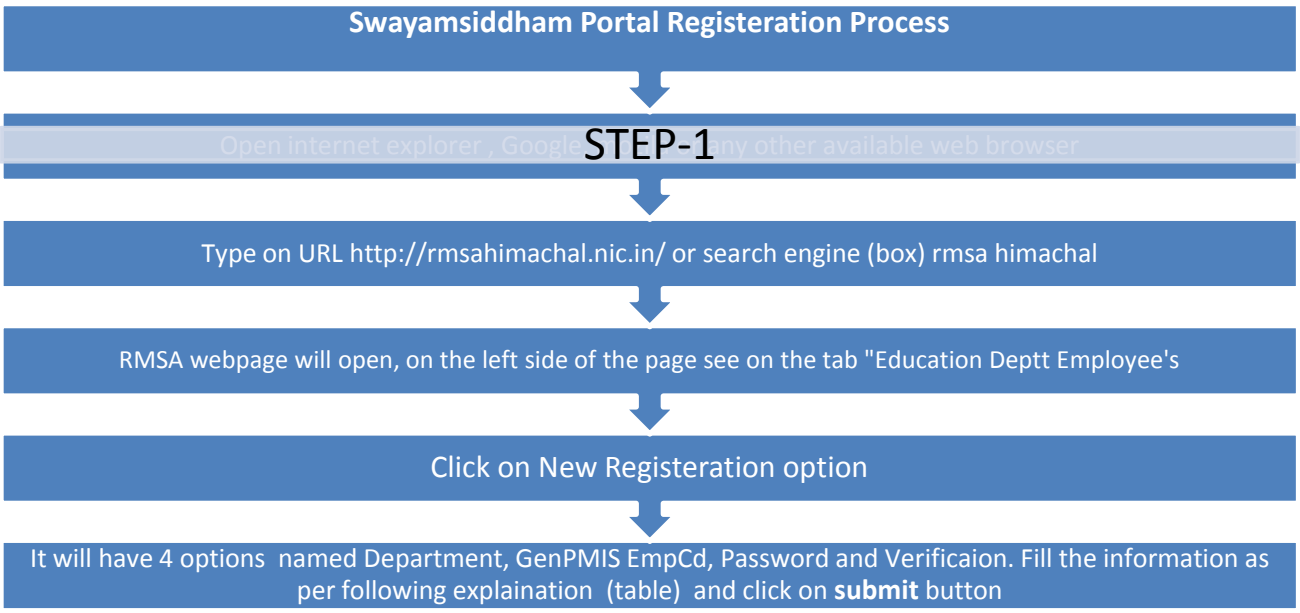

Table-1

Sr. No.	Title/ Option	Explanation
1	Department	Select the Department in which you are serving (Higher Education)
2	GenPMIS EmpCd	Enter the genPMIS Empcode (available in the concerned school office or service book or may be asked from DDHE, DDEE office)
3	Password	Enter the password of genPMIS Empcode(FIRST THREE LETTERS OF YOUR NAME IN CAPITAL and PMIS number in case of Department of Higher education /123456 (available in the concerned school office or may be asked from DDHE, DDEE office)
4	Verification	Enter the text in the box given in the screen

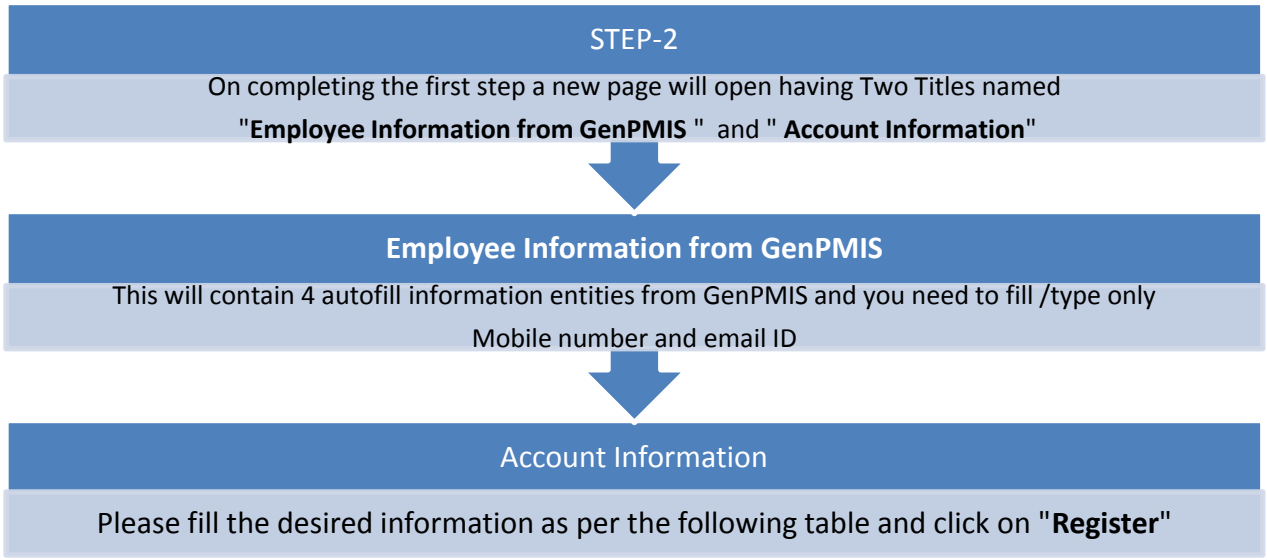

Table-2

Sr. No.	Title/ Option	Explanation
1	Distt.	Select the Distt. In which you are posted.
2	Tehsil	Select the Tehsil In which you are posted.
3	School	Select the School In which you are posted.
4	Subject	Select the subject being taught by you.
5	Role	Select the role being performed by you
6	Nick Name	Type your nick name if any
7	Password	Please Type the password you want to keep for future access of portal
8	Retype Password	Please Re- Type the password for confirmation / avoid mistake
9	Security	This secret question is needed for the case one forgets password.

	Question	This question is to be typed by you. You may type questions example :- your first school, Name of your mother.
10.	Answer	Type here the answer of the above question needed for future reference.

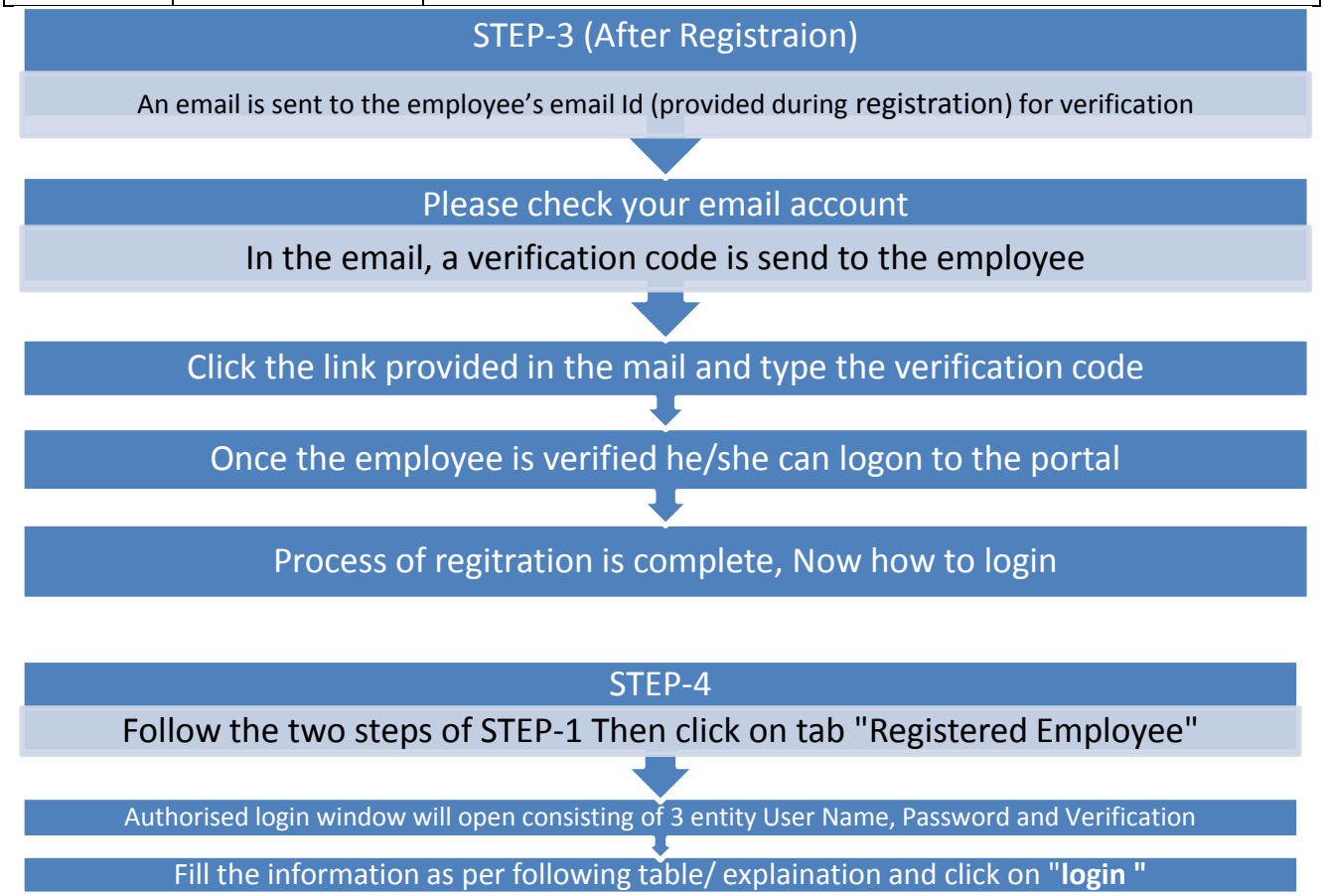

Sr. No.	**Title/ Option**	**Explanation**
1	User Name	User name is the email id provided by the employee during registeration in STEP-2
2	Password	Enter the password kept by you in STEP-2 Table-2 Sr. No. 7
3.	Verification	Enter the text in the box given in the screen

Session 5	Demonstration of various tools for Execution and Evaluation in teaching

Use of Spread Sheet to Evaluate a Topic understanding Student/ Question wise

All Question carry 5 marks each

	Question 1	Question 2	Question 3	Question 4	Question 5	Topic
Student 1	2	3	4	2	4	15
Student 2	1	2	2	1	4	10
Student 3	2	4	4	2	3	15
Student 4	1	2	4	2	4	13
Student 5	2	5	3	1	4	15
	8	16	17	8	19	68

Analysis for Feedback

Student 2 and Student 4 needs more attention

Student found unable to secure good marks for Question 1 and Question 4

Graphical Representation

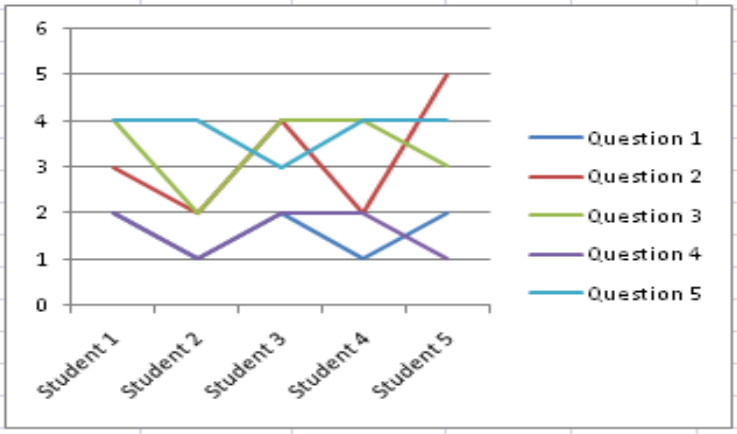

Action Research

Structure

3.1 Introduction

3.2 Objectives

3.3 Action Research: Historical Perspective

3.4 Concept and Genesis of Action Research

3.5 Who can Undertake Action Research?

3.6 Basic Applied and Action Research

3.7 Steps in Conducting Action Research

3.8 Action Cycle

3.9 Format for developing Action Research Project

3.10 Advantages of Action Research

3.11 Summing up

3.12 Unit-End Exercise

3.13 Suggested Reading and References

3. I Introduction

Most of the current theories and programmes in education are the product of researches carried out by the faculty working in universities and other centres of higher learning. The contribution to research by educational practitioners including teachers is almost negligible. It has been realized that the best source of improved knowledge about teaching is the teacher. Action research is a method that taps this source of information and helps practitioners such as principals, teachers, administrators, etc. to bring out improvement in their day-to-day functioning. It also provides administrators the ideas that help them to solve problems related to in-service training, school improvement/management programmes etc.

In education, action research methodology offers a systematic approach to introduce innovations and evaluate their effectiveness in teaching-learning process. In that sense, it is a way of producing knowledge about learning and teaching, and also a powerful way of improving ones own teaching practice.

Action Research conducted in the context of classroom situation is designed to help teachers to find out what is happening in his or her classroom, and to use that information to make meaningful decisions for future application. The four major components of action research

include: 'Action, Reflection, Revision and Revitalization' leading to support and improvement in teaching-learning process.

Dissatisfaction with the existing situation is a pre-requisite for action research. It is a process by which teachers and administrators select the most effective teaching strategies and fine-tune them to fit to their own situations. If used appropriately, action research leads to the maximization of student achievement consequently brings out improvement in the education system.

Minimal skills are required for teachers and administrators to conduct action research. Most of the necessary skills are common to every teacher. Action researcher can take advantage of the data already obtained as part of the teaching-learning process. Action research is a process for determining what works best. It equips every teacher with the necessary skills and with an attitude not to accept the status quo, but to ask, "Is there a better way of doing things?" A teacher or administrator trained in action research feels empowered because he or she is no longer merely the consumer of research which is produced somewhere else, but he/she can determine for himself/herself if the new widget is right or wrong for his/her situation. No matter how conclusive research findings are about a particular innovation, it may not be applicable in every context. Thus, the action research should be used with every new programme to determine if it is valid and if it is better than the previous practice in that particular situation.

Action research has also been employed for various purposes such as for school-based curriculum development, as a professional development strategy, pre-service education, systems planning, school restructuring and policy formulation. Action research can also be used as an evaluative tool, which can assist in self-evaluation of teacher as well as an institution.

3.2 Objectives

After going through the module you will be able to:

- describe the history of action research,
- discuss the salient features of action research,
- differentiate between basic research and action research,
- describe the steps in conducting the action research,
- explain the advantages of action research,
- identify some action research problems in the context of DIETs and their functions,
- evaluate and synthesize information and data from a variety of sources and draw conclusions,

- reflect on their analysis and make appropriate changes to their practices,
- manage personal and professional change,

3.3 Concept and genesis of Action Research

The concept of action research can be traced back to the early work of John Dewey in the 1920s. To describe the simultaneous process of acting and researching, the term was first used by Kurt Lewin, a German-born social psychologist and educator whose work throughout the 1940s in the United States led to the development of the theory and practice of action research. Action research has been used in a variety of contexts where an understanding of complex social situations has been sought in order to improve the quality of life. Kurt Lewin often cited as the originator of action research used the methodology in his work with people affected by post-war social problems. It was Stephen Corey and others at the Teachers College of Columbia University who introduced the term 'action research' in educational context in 1949. Stephen M. Corey (1953) defined action research as the process by which practitioners attempt to study their problems scientifically in order to guide and correct their decisions and actions. Kochendrofer L. (1954) described action research as a teacher based research.

Later in Britain, Lawrence Stenhouse (1975) developed the ideas of the "teacher as researcher". According to him, it is teachers who, in the end, will change the world of school by understanding it, as teachers engaged in action research have a better understanding of the schooling process. What they learn will have great impact on what happens in classrooms, schools, and districts in the future. The future directions of staff development programmes, teachers' preparation of curricula as well as school improvement initiatives will be influenced by the things teachers learn through critical inquiry and rigorous examination of their own practices and school programmes that action research requires. Teachers' action research questions emerge from areas they consider problematic, from discrepancies between what is intended and what actually occurs. The concept of teacher as researcher encourages the teachers to take up action research enabling them to improve their own understanding and to be a better professional. It also empowers them to provide necessary inputs in curriculum planning and development, thus evolving appropriate teaching learning strategies. This conclusively helps in developing comprehensive educational policy. Kochendrofer L. (1954) described action research as a teacher based research.

Kemmis & McTaggart (1982) describe action research as deliberate, solution-oriented investigation that is in group or personally- owned and conducted. It is thus an **emergent** process, which takes shape as understanding increases and also as an **interactive** process, which converges towards a better understanding of what happens. According to Carr and Kemmis (1986), action research is a form of self-reflective inquiry undertaken by a practitioner in social, educational situation. Kemmis' model follows the Cycle of Plan: Act, Observe and Reflect. The prevailing focus of teacher research is to expand the teacher's role as inquirer about teaching and learning through systematic classroom research (Copper, 1990). According to Belanger (1992), action research approach is naturalistic, using participant-observation techniques of ethnographic research, and is generally collaborative, and includes characteristics of case study methodology.

Explain the meaning of Action Research?

3.4 Characteristics of Action Research

The main characteristics of action research are listed as under:

1. Action research is based on scientific inquiry;
2. It involves practical problem solving approach;
3. Action research is perceived dissatisfaction from a situation by the practitioner;
4. It is a small scale intervention and it is contextual in nature;
5. Acton research is collaborative, participatory and self-evaluative;
6. It is seeking to understand social systems and the process of change within them;
7. Action research focuses on problems that are of immediate concern;
8. It bridges the gap between theory and practice;
9. Action research offers formative feedback in respect of objectives and methodology in teaching, evaluation and other school practices;
10. It seeks to deliver usable and sharable outcomes;
11. Action research involves critical analysis and reflections on situations;
12. It provides defensible justification for any educational work being undertaken;
13. Action research employs both qualitative and quantitative methods of analysing information, evidence and data.

What are the main characteristics of action research?

3.5 Who can Undertake Action Research?

A practitioner always undertakes action research. A practitioner in the Indian educational set up could be a classroom teacher/lecturer, a Head Master/Principal of a school or college; a

Block Education Officer; a District Education officer; an Inspector of school or a teacher educator in DIET/Training College etc. Action research can be:

(i) Individual research: Action research can be undertaken by a single teacher.

(ii) Cooperative research: In this case a group of teachers in a school work together.

(iii) Collaborative research: In this situation, a team of teachers works in collaboration with a team of researchers and/or administrators on a project, relatively larger in scope.

Kemmis and McTaggart (1992) have suggested the following personal considerations while commencing action research:

1. involve yourself in the action research;
2. be organised, work hard and start small;
3. ensure supportive work-in-progress discussions are planned for;
4. be persistent about monitoring;
5. ensure sharing of responsibility for the whole process;
6. be reflective on the changes taking place
7. register progress with all interested parties;
8. ensure time to write up your work and
9. be explicit about your findings and continually observe if your work is actually helping you

Q. *Identify three situations in the context of DIETs in which action research can be undertaken by (i) an individual teacher, (ii) a group of teachers in a school; and (iii) a team of teachers / administrators.*

3.6 Basic Applied and Action Research

In the earlier module, you were explained that research can broadly be classified in two categories: basic and applied. Basic research is primarily concerned with the discovery of truths or principles contributing to the existing body of knowledge. Its main purpose is to obtain and use empirical data to formulate, expand or evaluate a theory and making generalizations that will be applicable in a broader perspective. Here, the purpose is generation of new knowledge or bridging the gap in the existing knowledge. Applied research, on the other hand, is directed towards finding the solutions to immediate, specific, and practical problems. For example, if you want to know the reasons for school dropouts, or absenteeism among girl students of a particular locality, you are conducting an applied research. Action research is considered as a specific kind of applied research where the effort of the researcher is not only limited to finding the causes of a particular event or phenomenon, but the

researcher also aims at correcting the situation. The following details will help you to understand various objectives of action research which differentiate it from basic research.

Table 1 **: Difference between Basic and Action Research**

OBJECTIVE	**BASIC RESEARCH**	**ACTION RESEARCH**
Training needed by researcher	Extensive and rigorous	On own or with consultation
Goals of research	Knowledge that is generalizable	Knowledge to apply to the particular problem and situation
Identification of the problem	Review of previous research in depth and detail	Problems or goals currently faced
Sampling approach	Different sampling techniques are used. These include both probability and non-probability sampling.	Students or clients with whom they work
Research design	Rigorous, control, long time frame	Simpler procedures, flexible and quick time frame.
Data Collection	Different tools & techniques used	Simple procedures
Data analysis	Statistical analysis involving both qualitative techniques and quantitative technique	Simple statistical methods and profiles
Application of results	Emphasis on theory development	Emphasis on practical significance

Q. How Action Research is different from basic and applied Research?

3.7 Steps in Conducting Action Research

Now you are familiar with the concept of action research. It is clear from the above discussion that of action research needs to be carried out in a systematic manner. For undertaking this research, you need to understand the following steps:

Step 1: Developing a focus

In action research you need not begin with a problem. Your research topic should reflect an issue of importance to you as a teacher. The theme for the study you choose should make an impact on student learning, a felt need for which a teacher needs solution seek to develop innovative approach among teachers, or address an important issue such as parent or community involvement.

- What is happening?
- In what sense is this problematic?
- What can I do about it?
- How can I do it?

Suppose that you are a language teacher in fifth grade. In spite of your best efforts, you notice that some of the students make a lot of spelling mistakes in writing of English. The first step – developing a focus – here is that you are dissatisfied with the spelling errors and want to do something to improve this situation. Now, you may select a study titled as under:

a. *Title of the Study:* Improving the students productive skills in English visibly speaking and writing.

b. *Statement of the Problem*: In this section you would like to state – the background of the classroom, with particular reference to the questions mentioned above.

Step 2: Analyzing the Problem

While analyzing the problem, one should note down the possible causes underlying the problem. After analyzing the causes, the teacher should explicitly state what causes are under his/her control for which suitable strategy can be developed to improve the situation. In doing so, the teacher researcher need to take care of the following points:

- She/he should choose a topic of felt need
- The topic should have significance and relevance to the school situation.
- The topic should address the improvement of school practices as well as professional improvement
- She/he should not take those issues which are time-consuming and laborious.

In the problem of spelling errors the teacher tries to find out the possible causes underlying the problem – why students are making these mistakes? Some of the causes may be:

(a) Students are not paying proper attention.
(b) Teacher is not able to give sufficient time in the class.
(c) Parents are illiterate and they are not able to help their words.
(d) English spelling system is irrational.
(e) Methods like rule to frame the words, words taught by breakup based on phonics do not ensure pupils learn to frame correct spelling.
(f) Misconception among teachers that spelling can be taught, not caught.

Step 3. Formulating Hypotheses and Research Questions

Since there are so many variables in the complex art of teaching-learning process, formulation of a carefully worded hypothesis is very important which the teacher seeks to test through his/her research. A hypothesis is a testable statement about the relationship between two or more variables. Alternatively, a researcher can develop research questions, which he/she intends to answer through his/her research. Research questions basically help a researcher in setting the focus and suitable strategy.

In the example, the main objective of the study is to enable the pupils to retrieve correct spelling from their visual memory to write and orally spell English words. The teacher formulates spelling errors can be minimized when taught through Visual memory technique. makes the following hypothesis:

Step 4: Developing Action Research Plan

Once you have formulated a hypothesis, you must develop an action research design. You have to concretize as to what you are going to do in your classroom to affect a change. Before you begin your intervention, you will need to gather **baseline** data. Knowing how your students responded or performed before the beginning of your study gives you a starting point for comparing study results. The baseline and post-intervention data must be gathered using tools and techniques that are valid and reliable. **Validity** relates to the truthfulness of the data. It means that the data actually measure the specific phenomenon that you are claiming to study. **Reliability** relates to your claim that the data you

have collected are consistent. While both of these issues are less pertinent in action research than in other types of educational research, these issues may be considered carefully when you are developing your data collection strategy.

The researcher may ask the following questions while developing a comprehensive plan for implementing the study:

- What am I going to do with this problem ?
- What sort of interventions am I are going to introduce?
- How will collect data?
- What baseline and post-intervention data will I collect?
- What instruments are necessary to gather the data?
- How will I analyze and the data and come to conclusion?
- Whether the new technique is effective or not ?
- How I shared the findings with the colleagues and principal?

In the example of spelling mistakes, the teacher may plan his/her intervention in three stages:

1) ***Pre-test*****:** In this phase, the teacher identifies the students committing spelling errors and also spots the words where pupils have difficulty. This is known as the baseline data. Knowing how students performed before beginning of the study gives a starting point which is used for comparing later results. Depending upon the nature of the study, the source of baseline data may vary and it may cover students, teachers, parents, community etc.

2) ***Intervention*****:** The action research design would involve the development of a suitable intervention programme, which may employ a pre-post experimental design, experimental/control group design, survey research and so forth. The researcher also needs to select an appropriate tool or technique of data collection. He or she may employ a questionnaire, an interview, an observation method, a case study method, and so on, for collecting the required information. In the present study, the teacher has decided to teach these students with 'Visual memory technique' in which the student visualizes the spelling and creates a mental image of the word accompanied by feeling of familiarity. First, teacher teaches the pupil to become aware of making and remembering visual images. *Some games like the following are initiated by the teacher:*

- Telling them to remember their room at home. What colour is the floor, the bed cover, the wall, etc?
- Asking them to remember things they have seen, e.g. Puppets, dolls, etc.

- Telling children to close their eyes and imagine a red square, a green circle on the right next to it, and blue triangle right next to that. Then ask questions - which are first, then second?
- After they have increased their visual imagery, teacher shows them how they can use their good memory in spelling.
- Teacher also gives proof reading exercises
- Spelling backwards for visual memory

Other steps involved are:

- *To look at the word*
- *Cover the spelling*
- *Write the spelling*
- *Check the spelling (If the spelling wrong get back to step one)*

The teacher may decide that she/he will give these exercises one hour for four days in a week for three months.

C) Post Test: The teacher may evaluate the improvement in spelling periodically and draw comparative improvements over a period of time. Post-testing is concerned with examining the impact of intervention which can be conducted at periodic intervals as well as towards the end of the intervention.

Step 5. Analysis of Data and drawing Conclusions

After the data are collected the next step is the analysis and interpretation of the data using appropriate methods . You need to evaluate the impact of the action taken to enable you to draw conclusions and take decisions. For this you may require to compare the previous performance of the students with their current performance. In order to make it easily understood by others, you may use some simple statistical measures like percentage, median, mean, standard deviation, correlations, t-test etc. You may also use graphical representation of data.

Baseline data (or Pretest) in the example of spelling errors is the students who are making errors and the words where students are having problems. Post testing is concerned with examining the impact of intervention, which can be conducted at periodic intervals as well as towards the end of the intervention. In the case of example of spelling errors, you can show the periodic improvements in performance by preparing graphs. Graphical representation is the simple way of showing variations in performance from pre-test to post-test. If the researcher is satisfied, it can be inferred that the new stragety is effective when there is consistent

improvement in the results, with the result, it is fine. If not the researcher may repeat the process with new set of interventions until she/he is satisfied with the improvement.

Step 6. Report writing and sharing of the findings

The research study must be documented using an appropriate format. The teacher may share the results of the study with fellow teachers, administrators, and other functionaries who may find the study useful. The results of the study can also be shared by way of presentations in seminars, conferences at different levels, and also by publication in journals, newsletters etc.

Step 7. Personal Reflection on the Action Research Process

After the action research has been completed, the teacher should take stock of the whole situation, the interventions made and the results achieved. Did the researcher get the desired results? Is he satisfied with the results? If yes, how and to what extent? If not, why? Is she/he going to repeat the process with new set of interventions or a new strategy? The Action Research process not only targets towards improvement among learners but also reflects on for the teachers empowering and enriching them with new experiences.

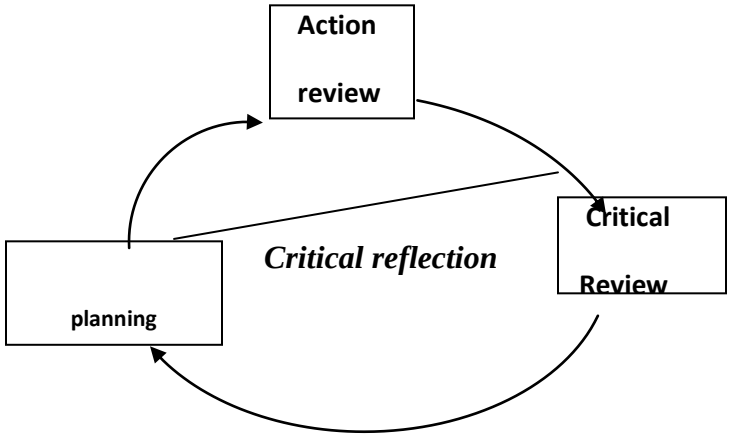

The teacher may ask the following questions towards self-reflection.

- What was the most interesting component of the study?
- What was the most challenging aspect of the project?
- Will he do it again? If so, why? If not, why not?

- Did this experience affect his feeling of professionalism?
- What did the researcher learn about himself/herself in the process of completing this project?

How Action Research project is implemented?

3.8 Action Cycle

Action research is a cyclic process and thus critical reflection brings about refinement and improvement in the results with each cycle. It alternates between action and critical reflection as it moves forward. The reflection begins with critical review of the situation and of past actions. It is followed by informed planning of the next action. There are cycles within cycles. In each cycle there is action and critical reflection. During reflection people first

examine what happened previously – they "review". They then decide what to do next – they "plan". So action is followed by critical reflection: What worked? What didn't? What have we learned? How can we improve by doing it differently next time? Reflection is followed by another action. The understanding achieved, the conclusions drawn, the plans developed are tested in action. Critical reflection in each cycle provides many chances to correct errors.

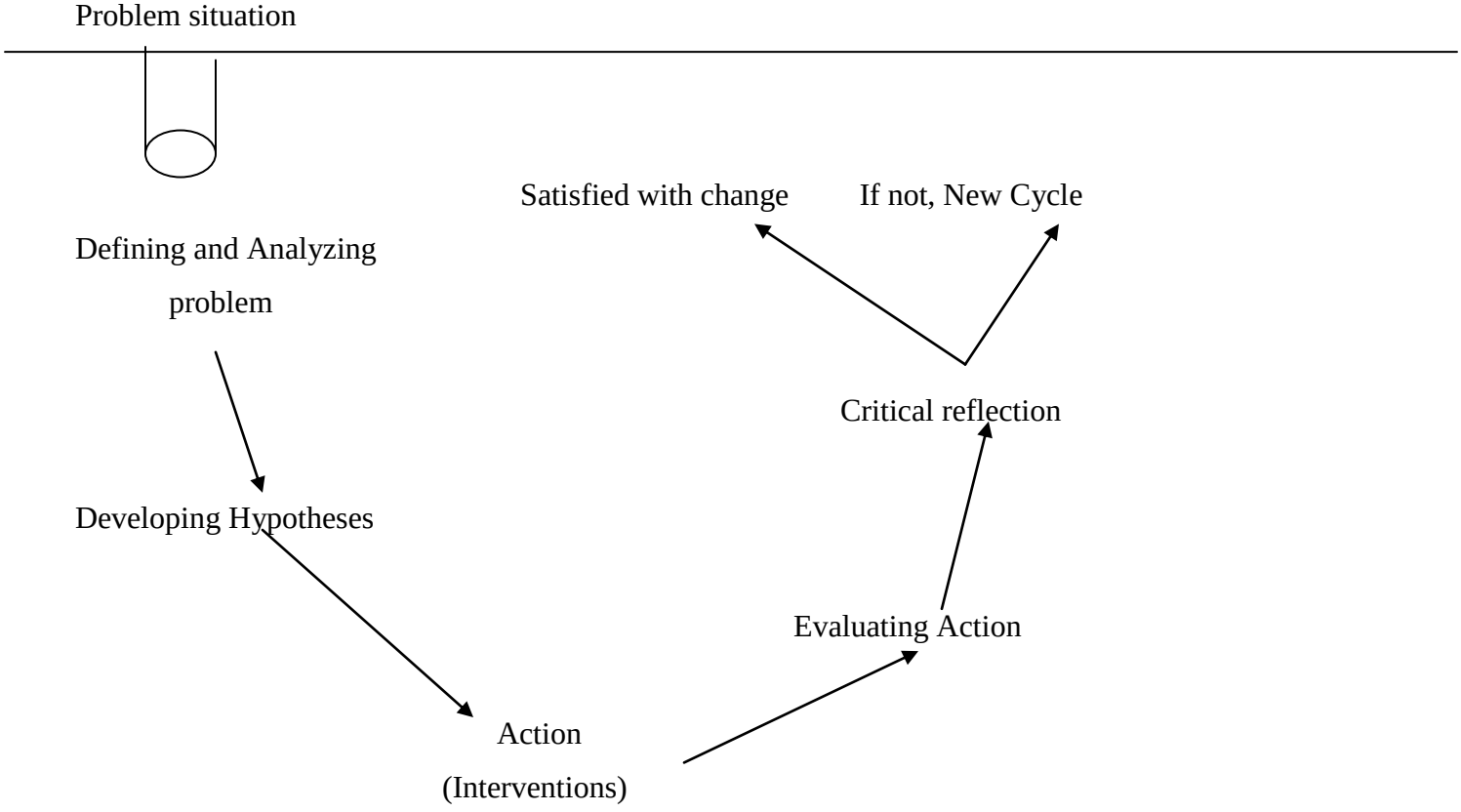

Understanding and dealing with adolescent learning

''किशोर अवस्था अधिगम आवश्यकताये व प्रक्रिया''

प्ररिचय :– राष्ट्रमाध्यमिक शिक्षा अभियान 2013 का मुख्य उद्धेश्य समाज के सभी वर्गो को शिक्षा का समान अवसर उपलब्ध करवा कर उत्तम शिक्षा प्रदान करना है।

किशोर अवस्था बाल अवस्था व युवा अवस्था के बीच का संक्रमण काल हैं किसी भी बालक /बालिका को 13 वर्ष से 19 वर्ष तक किशोर कहा जाता हैं इस अवस्था के आरम्भ होते ही बालक में शारिरीक, मनौवैज्ञानिक व बौद्धिक परिवर्तन होने प्रारम्भ हो जाते है और वह अपने ज्ञान और संस्कार के आलोक मे अपने आस–पास के परिवेश को समझने का प्रयास करता है किशोर के व्यक्तित्व विकास मे समाज, संस्कार और शिक्षा प्रमुख घटक है। किशोर अवस्था में जहां प्राणी उर्जा और आशा से परिपूर्ण होता है

वही पहचान का संकट, अस्तित्व को चुनौती व उसके द्वारा आलोजना उसके कोमल मन को आहत कर इसमे नकारात्म भावनाओं का समावेष करती हैं सकारात्मक और नकारात्मक भावनाये उसके शैक्षिक काल में अधिगम प्रक्रियाओ का प्रभावित करती ळें

क्रिया कलाव –1 ग्रुप अ– दो लडके और लडकी

ग्रुप ब– तीन लडकिया और एक लडका

ग्रुप अ के सदस्यो को रंगोली बनाने का कार्य दिया जायेगा।

ग्रुप ब के सदस्यो को भार उठाने का कार्य देना

प्रत्येक ग्रुप को 1 घटे में अपना कार्य सम्पन्न करने का समय देना ।

कार्य सम्पन्न होने पर दानो ग्रुपो से प्रत्येक लिग के योगदान बारे लिखने के लिये निर्दिष्ट किया जाना।

इस क्रिया कलाप के बाद विधार्थियों को यहां बताया जाग्रेा कि हर लिंग की भावनात्मक व शारीरिक क्षमतायें भिन्न–2 है। साथ ही दोनो लिंगो में समानता पर भी प्रकाश डाला जायेगा और विद्यार्थियो को समझाया जायेगा कि दोना लिंग एक दूसरे के पूरक है।

कुछ क्षमताओ में अभ्यास और लगन के साथ दक्षता प्राप्त की जा सकती है परन्तु शारीरिक भिन्नताओं का प्रबन्धन व कुदरत द्वारा दिया गया वरदान मान कर उन क्षमताओं का व्यक्तित्व विकास में प्रयोग करना।

उद्धेश्य :–

1. किशोर अवस्था की अवधारणा को समझना
2. सूचना क्रांति के नकारात्मक क्रिया कलाप का किशोरो पर प्रभाव व निराकरण
3. किशोरो में सृजनात्मकता Critical thinking व सहयोग(cooperation) का विकास करना
4. किशोर को नशे व यौन रोगो के बारे में अवगत करवाना तथा उनसे दूर रहने के लिए नैतिक बल प्रदान करना।

क्रिया कलाप –1

1. शारीरिक बदलावो को नोट करना
2. विद्यार्थिया के व्यवहार में आये परिवर्तन को ध्यान से देखना तथा विपरीत लिंग के प्रति उनके व्यवहार व दृष्टिकोण को जांचना
3. विपरीत लिंग के प्रति सहयोग और सम्मान की भावना पैदा करना ।
4. छात्राओं को विशेष सलाह व स्वास्थय सफाई के बारे में विस्तार से बताना।
5. क्या आधुनिक भोजन प्रणाली किशोर अवस्था के प्रारम्भिक काल को कम तो नही कर रही है। इसका अध्यापक योजना सम्बन्धी सलाह देना।

क्रिया कलाप –2

घर में उपस्थित सूचना उपकरणो जैसे कम्पयूटर, मोबाइल व डिजीटल टीवी से निबधि –सूचनाओ का आदान प्रदान हो रहा है मल्टी मीडिया के इस युग में किशोर की अपने सहभागियो से प्रत्यक्ष संवाद में कमी आई है तथा वर्चुअल संसार के माध्यम से वह संवाद मे व्यस्थ है। वह सकारात्मक सूचनाओ के साथ–सारि नकारात्मक व अश्लील सामग्री के सम्पर्क मे आ रहा है।

यदि किशारे के व्यवहार में चिढ़चिढ़ापल ग्रह कार्य में कमी, देर तक सोना, साथियो के साथ न्यूतम सम्पर्क जैसे लक्षण दिखाई दे तो किशोरो के अभिभावको से बात करे। उसकी अनावश्यक गतिविधियो को नियन्त्रित करने का प्रयास करे।

किशोरो में का विकास करना

आज के युग में कोई भी सूचना इंटरनेट के माध्यम से समेकित की जा रही है इससे कट पेस्ट संस्कृति को बढ़ावा दिया है।

जिससे की किशोरो की अधिगम क्षमता और बौधिक विकास की क्षमता अवरूद्व हसे रही है। अब तीन आर रिडिग, राईटिग एवं रीदमेटिक का युग पुराना पढ चुका है इसके साथ पर हम किशोर को तीन सी के लिए प्रवृत करना होगा ये तीन सी है creativity co-operation and critical thinking .

विद्यार्थियों को ऐसा परिवेश दिया जाये कि वे अपनी सोचन, समझने की क्षमता का विकास किसी बाहरी एजैसी के बिना कर सके । जैसे दूध का पैकट तो बच्चा रोज देखता है परन्तु गाय को दूध देते उसने शायद ही देखा है।

विद्यार्थियो को ऐसा क्रिया कलाप दिए जाये जिसमे उनके अपने साथियो के सहयोग की आवश्यकता पड़े। इससे उनका सामाजिक विकास होगा ओर सहयोग और समरसता के गुण विकसित होगेः

क्रिया कलाप

किशोरो व युवाओ को इस युग में तीन मुख्य रूप से तीन चुनौतियो का सामना करना पड रहा है ये है आतंकवाद नशीले पदार्थ व aids शिक्षा केन्द्र का इन चुनौतियो को लेकर मौन रहना असम्भव है इनके बारे मे चर्चा करना व जानकारी देकर युवाओ तथा किशोरो का जागरूक करना अनिवार्य है।

सूचनाओ का निबधि प्रवाह व अपरिपक्वता तक उमग के साथ उपजी मौन संवेदनाये इन्हें गलत रास्ते की ओर आकर्षित करने में बड़ी तीव्रता से अग्रसर हो रही है और बाल यौन उत्पीड़न की घटनाओ में उत्तरोतर वृद्वि हो रही है। शिक्षा व्यवस्था में एक ऐसा परिवेश तैयार करने की आवश्यता है कि किशोरो की शक्ति कार्य रूप में परिणित हो जाये ना कि वह भावुकता मात्र में पर्यवसित हो कर क्षय हो जाये।

किशोरो के प्रति विद्यालय ओर अभिभावको के कर्त्तव्य

1. किशोरो में सकारात्म स्वंय पौरूष का विकास करना।
2. बालको की सही गतिविधियो की सराहना करना तथा गलतियो को बार बार उद्वत न करना।
3. बालको की प्रशंसा मे उदारता बर्तना
4. व्यक्तिव विकास के लिए अलोचना करना न कि बालक को अपमानित व शर्मिदा करने के लिए उसका उपहास उडाना।
5. निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना और सही निर्णयो की सराहना करना।
6. किशोरो का अत्याधिक संरक्षण उनकी निर्णय सम्बन्धी क्षमता को बाद्वित कर सकता है। उन्हे निर्णय लेने में सहायता दे तथा उन्हे उत्साहित करते रहें
7. उनकी स्वतन्त्रता, पहचान व जिम्मेवारी के मुद्दो को प्राथमिकता दे।

किशोरो का घरेलू व सामाजिक परिवेश उनकी अधिगम क्रिया को प्रभावित करने मे एक मुख्य कारक है। अनुवांशिक एवं परिवेश का किशोरो की अधिगमन क्रिया पर मुख्य भाव डालती है। घरलू समस्यो के प्रति किशोरो का संवेदनशील होना तथा उनका उन समस्याओ के निदान मे असमर्थ होना उनकी अधिगम क्रिया व प्रसन्नता पर गहरा असर डालता है।

पाठ्यक्रम में उन महान विभूतियो की जीवनी को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो समस्याओ की भट्टी में तप कर कुन्दन हुए है।

प्रत्येक प्राणी इकाई की क्षमताये अलग–2 होती है क्षमताओ की ये विभिन्नता ही सामूहिक प्रयासो की अवधारणा को प्रबल कर समाज में प्रगति का भाग प्रश्स्त करती है।

पाठयक्रम में कौशल विकास का सम्मिलन किशोरो को अपनी प्रवीणता व पदजमससपहमदब को सही दिशा मे उपयोग करने के अवसर प्रदान करेगी। शिक्षा पाठयक्रम में विकास skill development को शामिल करना किशोरो की आत्मनिर्भरता के लिए उठाया गया एक सराहनीय कदम है। किसी विशेष विद्या से परिपूर्ण किशोर कर्म सम्मान dignity of learner के मूल्य को समझेगा तथा एक किशोर, आत्मविश्वास आत्म सम्मान और आत्मरिर्भरता के साथ समाज में अपना स्थान बनायेगा और राष्ट्र और विश्व उत्थान में अपना योगदान सुनिश्चित करेगा ।

कुशलता एवं वैज्ञानिक प्रणाली से कार्य करना ही कर्म योग है। कर्मो का उद्धेश्य पहले से निहित शक्ति को प्रकट करना होता है। हर व्यक्ति के भीतर पूर्ण शक्ति और पूर्ण ज्ञान विद्यामान हैं भिन्न–2 कर्म इन शक्तियों का जागृत कर बहार प्रकट कर देने के लिए झटके का काम करते है।

किशोर एवं युवा हमारी जनसंख्या संरचना का प्रमुख घटक है। इनका सुसंस्कृत ,शिक्षित व कौशल युक्त होना ही भारतीय दर्शन की अवधारणा ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्व सन्तु निरामय सर्वे भाद्राणि पश्यन्तु मा को प्रबल करेगा।

नई दिल्ली:सिविल सर्विस एग्जाम 2015 में देशभर में टीना डाबी ने टॉप किया। टीना ने अपनी सफलता का श्रेय मां हेमाली डाबी को दिया। टीना ने बेशक पहले अटेंप्ट में ही यह परीक्षा क्लीयर कर ली इस फस्ट अटेंप्ट के पीछे जो तपस्या है उसको जानकर आप भी कहेंगे वाह टीना वाह।

टीना का जन्म भोपाल में हुआ। जब टीना सातवीं में थी तभी उसके माता-पिता ने उसके करियर को लिए एक प्लानिंग कर ली थी। बस फिर क्या था माता-पिता और छोटी बहन के साथ टीना दिल्ली आ गई। यहां आकर कान्वेंट स्कूल में टीना ने स्कूल की पढ़ाई पूरी की और 11वीं में आर्ट्स के साथ टीना ने आगे की पढ़ाई शुरू की। इस लड़की का

ह्युमैनिटीज ग्रुप में दाखिला लेना ही इस बात की निशानी है कि इसके माता-पिता सिविल सर्विस एग्जाम के लिए कितने गंभीर थे। टॉप करने की आदत टीना का पहले से ही थी। वे स्कूलिंग और कालेज लाइफ के दौरान भी कई बार टॉप कर चुकी है।

8 से 10 घंटे तक पढ़ती थी टीना

टीना की सफलता की कहानी में उसकी मेहनत तो है ही। अपनी मेहनत के बारे में टीना कहती हैं कि वे आठ से 10 घंटे तक रोज पढ़ती थी। श्रीराम कालेज से पालिटीकल साइंस की छात्रा रही टीना को घूमना बेशक पसंद था लेकिन अपनी लक्ष्य को पाने के लिए उसने घूमना भी बंद कर दिया।टीना की मां हेमाली डाबी टेलीकॉम कंपनी में जॉब करती थीं और बेटी की पढ़ाई के लिए उन्होंने वीआरएस ले ली।

इतने सालों की कड़ी मेहनत का फल

टीना को अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए 9 साल लगे। नौवीं से 12वीं तक चार साल। ह्ययुमैनिटीज ग्रुप की उसने पढ़ाई की। इसके बाद ग्रेजुएशन में उसे 3 साल लगे। इस दौरान सिविल सर्विस के लिए वे रोजाना नियम के तहत पढ़ाई करती थी। ग्रेजुएशन के दो साल बाद भी रोजाना आठ से दस घंटे पढ़ाई के साथ सिविल सर्विस के लिए टीना ने कोचिंग ली। यानि कुल मिलाकर हो गए 9 साल। बताते हैं कि टीना बचपन से ही कहती थी उसने आईएस बनना है।

PROFESSIONAL DEVELOPMET

i) ORGANISING SUCCESSFUL EDUCATION TRIP
ii) FINANCIAL LITERACY

Continuous Professional Development

Instruction: - Continuous professional development for teachers is about reinforcing all devotions of good teaching thought teacher's career.

Its concern is about making subjects relevant to the life of students. Teacher needs to learn to create suitable instructional environment & employ strategies. It requires identification of issues and answer by students. Teachers need to be able to encourage students to challenge the information presented and discuss. Its relevance Development of these abilities involves teachers in teaching learning process. It service teacher education plays a significant role in the professional growth of teachers and helps in improving the school related practices and improve their processional skills.

The National Curriculum Framework -2005 proposes major shift in teacher education program and emphasizes on giving priority to learner. It further focuses on shifting teachers role form being a source of knowledge to a facilitator and supporter for enhancing leaerning through multiple experiences and encouraging the learner to continuously observe his/ her educational goals.

Major Shift Emphasized by NCF-2005

From	To
• Teacher centric, stable design process • Teacher guidance monitoring encouragement • Passive reception • Learning within the four walls of the classroom. • Knowledge as 'given' fixed created • Disciplinary focus • Appraisal, short, few	• Learner centric flexible • Facilitation, support • Active participation • Learning in the walls of wider social context • Knowledge as it evolves and is. • Multidisciplinary, educational • Multiple and divergent • Multi furious, Continuous

Definition of Professional Development:- Professional Development is a process by which teachers strive to improve their work as teachers which they give in their profession. The professional growth is based on inquiry into own teaching, which leads to research and action.

It is the process by which, alone and with others, teachers review, renew and extend their commitment as change agents to the moral purpose of teaching and by which they acquire and develop critically the knowledge, skills and emotional intelligence essential to good professional thinking, planning and practice with children, young people and colleagues through each phase of their teaching lives.

OBJECTIVES:- Following are the important objectives of professional development of a teachers:-

i) Updating content with emerging curricular trend.
ii) One will become capable for creating their own teaching, learning material on identified themes and also planning.
iii) One will became aware about demonstration of their own lessons before their fellow teachers.
iv) It will make individuals involvement in conducting and facilitating training sessions.
v) Instruction with community and involving community in school.

Methodology for Professional Development of Individual:- Professional Development of individual can be ensured through classroom teaching, setting examples, through role playing, storytelling, use of ICT, organizing field trips, organizing seminars, training programs, refreshers and exchange programs.

Requirements:- Requirements for the professional development of teachers or individual depends upon the activities which is to be organized inside or outside the campus e.g.

It professional development in the field of ICT to be ensured then for this well equipped ICT Lab is needed which must consist of:-

i)Learned facilitator

ii)Internet facility

ii) Computer Systems (Monitor, Keyboard, Mouse CPU& Soft ware)

Activity For Professional Development of Teachers in the field of ICT can be ensured when the teacher or individual will attend ICT Lab and will gain the knowledge about different components of computers as first hand information. They have to interact with facilitator in lab and will gain knowledge about hardware & software of computer system, later on he will become capable to operate the system. It will make him capable to correlate his subject learning with ICT.

FORMATIVE ASSESSMENT:- In order to achieve the objectives of professional development there are many different activities insides or outside the school. ICT is one of the activity that can be performed inside computer lab. Any individual or group can organize one or more activities for professional

ACTIVITY

(I) ORGANISING A SUCCESSFUL EDUCATIONAL TRIP:-Co curricular activity in any school is most important part for all round development of students. There are various co-curricular activities for learning organizing a successful educational trip is one of them. It is not only useful for student but it also ensure the professional development of teachers as well. To organize a successful educational trip first step is to plan the trip and then decide its objectives and for the achievement of objectives organize activities

Eg:- It a teacher want to give firsthand knowledge to the students about wheat crop, then first he will inform the principle and SMC of school and timing of visit to this educational trip. The teacher will frame a short answer questionnaire related to the topic students will interact with tell farmer and can make related queries. The farmer will tell the whole procedure of sowing,

cultivating and harvesting of that crop. The teacher who is accompariting the students will also guide the students and lastly will distribute the questionnaire to the students. The student will submit their answer in writing and simultaneously short quiz related to this can be organized.

(II)Financial literacy is one of the component for professional development. By the practical knowledge of management of available funds and grants the individual became fully confident. For a man profit organization like school and colleges have limited sources of funds an there is needed to maintain books of account for this. In order to manage the flow of funds of this instruction basic knowledge of account in necessary, finance, literacy, will equip an individual.

Def of financial literacy:- financial literacy in the ability to understand how many worker in the world how someone mange to earn or make it how that person manages it how he/ she invests it (turn it into more) and how that person donate it to help others.

Objective of financial literacy:- financial literacy in the ability to understand how money works in the world how someone manage to earn or make it, how he/she invests it (turn it into more) and how that person donates it to help others.

Objective of financial literacy:-

i) To make one are about the various funds of school.
ii) To give the knowledge about out floor
iii) Of available funds and grants.
iv) To impart practical knowledge to maintain cashbook and ledger of nonprofit organization.

Methodology:- knowledge of maintained of funds and grants will be imparted him normal classroom through lecturer method use of ICT and demonstrator method.

Requirement:- for effective presentation of the topic their need of

I) Dummy copy of bill
II) Dummy copy of cash memo
III) Dummy copy of receipt
IV) Dummy copy of cash book
V) Dummy copy of ladger
VI) ICT tools

Activities:- for the fixation of knowledge participant will be firstly will be introduce about flow of funds of an nonprofit organization i.e. school and calieges etc.

Under RTE 2009 on any kind funds feces can be charged up to the students of 8^{th} standard. Schools have limited sources of money funds and grants received from students of secondary and senior secondary

classes and from government. Builaly, amglgmeted, science, sports, sports equipments, senior guide. Examination etc kinds of funds received form students. School grants, planning grants are received from govt. under RMSA Rs.50,000 as school grants for meeting out miscellanies expenditure and nominal school grant are received under SSA every teacher must have knowledge to merge these funds and grant.

How to manage school funds and grants

i) Firstly make the list possible expenses and pass resolution in the meeting of SMC
ii) Purchase the require material as per norms from market
iii) Procure related voucher of the material eg. Specimens of bill attached (Anaxure-I)

Def. Voucher:-Written instrument that sever to confirm or witness (voucher) for some fact such as a transaction. Commonly a voucher is a document that show goods have brought or services have been rendered. authorizes payments and indicates the ledger accent in which these transaction have to berecorded examples- bill cash memo, receipt, bill of exchange etc.

Def of bills :- Bill in a commercial document issued by a seller to buyer, relating to transaction and indicating the products, quantities, and agreed prices for products or services the seller had provided the buyer. Payment term is usually stated on the invoice.

Payment of bill:- shake the payments of pending bills from the respective funds or grants within financial year and procure the receipt from the seller and make its entry in the cash book.

Specimen of cash receipt- (Annexure-2)

Now the payments will be made through RTGEs or NEFT, by cheaque.

Cash Book: - A book is which receipts and payments of money are recorded. Specimen of cash book (simple) - Annexure-3

How to maintain cash book:- there are two sites in cash book of a nonprofit organization left side is receipt right side payment side. Various grants received from different servers to enter in receipt side

wit dt. And description and related expenses enter the payment side with detainee. At the end of month close close the cash book and carry forward the debit balances to next month.

Ladger:- A book or other collection of financial accounts specimen of ladger- Annexure-4

Process of writer ladger in a cash book there are different kinds dairy of receipt of funds and grant and are of different nature for these different account to be maintained in ladger for example-1for school grant and for maintains grant different account in ladger to be from:- steps for ledger accounts:- there seven cullumes in ladger accaint shown in Annexure-4 In collum2 date of transition to beeted, collum – 3 about particular, colllum-4 follow in this page number of cash book to shown about the related tranction in column-5. Debit entry of all payments collum-6 calculate entry of all payments column-7 calculate the debit or credit balance.

Benefits of financial literacy:-

1) Reloginaze trand
2) Prepure for retirement
3) Seek out help when needed
4) Learn how to cope
5) Get educated by expert
6) Helps enlanced your money management skills
7) Assist you with manging your debt more effectively
8) You become part of an important national drive to develop consumer skill knowledge and behavior in relation to money.

   Example:- suppose a grant of Rs 10,000 recive from RMSA shimla at 2nd march 16 as this Rs 5000/- in for school grant Rs 5000/-for maintaince grants out of school grant we have purchaged startinary of Rs 2000/- from sunstar book dept. shimla out of school grants on 25th march2016, Rs 3000/- paid for refreshment of SMC training to Ram singh, shopkeeper of village xy. Grant on dated 26 march 2016, make its entry in cashbook and make ladger accurate payments of bill were made on 29th march 2016.

(Annexure-1)

Bill No. _____ Date :- _____

M/s. _____

ITEM	MODEL	QTY.	RATE	AMOUNT
			G. Total	

Rupee_____

Receiver's Sign. For, JP info System

(Annexure-2)

Cash Receipt

Receipt Number:_____

Date:_____

Received from _____the amount of Rs. _____

For_____

Current Balance :Rs. _____

Payment Amount: Rs. _____

Balance Due: Rs. _____

	Cash
	Cheque
	Mony Order

Received By: _____

Cash Receipt

Receipt Number:_____

Date:_____

Received from _____the amount of Rs. _____

For_____

Current Balance :Rs. _____

Payment Amount: Rs. _____

Balance Due: Rs. _____

	Cash
	Cheque
	Mony Order

Received By: _____

Cash Book (Annexure-3)

Receipts					
Sr. No.	Date	Particular	Voucher No.	Amount	Net Amount.

Payments					
Sr. No.	Date	Particular	Voucher No.	Amount	Net Amount.

Ledger Amount (Annexure-4)

Sr. No.	Date	Particular	Folio	Debit Amt.	Credit Amt.	Dr/Cr Bal.

Voucher No. 1/2016

Bill No. _____401_____ Date :- _____25/03/2016_____

M/s. Sanstar Book Dept. ShimlaMobile :- _____

To Principal DIET ……..

ITEM	MODEL	QTY.	RATE	AMOUNT
Pens	Sarkar 2014-15	100	20	2000/-
			G. Total	2000/-

Rupee :- Two thousand only

Receiver's Sign. For, JP info System

(Annexure-2)

Cash Receipt

Receipt Number:_____

Date:_____

Received from _____Principal DIET_____the amount of Rs. _____2000/-_____

For Bill No. 401 of dated 25/03/2016 by cash.

Current Balance :Rs. _____

Payment Amount: Rs. _____

Balance Due: Rs. _____

	Cash
	Cheque
	Mony Order

Received By: _____

M/s Sanstar Book Dept. Shimla (H.P)

Cash Book Month March -2016 **(Annexure-3)**

Receipts							**Payments**						
Sr. No	Date	Particular	Voucher No.	Amount	Net Amount.		Sr. No	Date	Particular	Voucher No.	Amount	Net Amount.
1	1/3/16	Opening Balance					1	29/3/16	Paid to sun star Book Dept. Shimla	1/2016	2000/-	2000/-
2	2/3/16	Received from RMSA Shimla		10,000/-	10,000/-		2	29/3/16	Paid to Ram Singh Shoopkeeper village shamlaghat	2/2016	3000/-	3000/-
3	31/3/16	Total Income of Month			10,000/-		3	31/3/16	Total Expenditure			5000/-
4	31/3/16	Total Expenditure			5000/-		4					
5	31/3/16	Closing Balance			5000/-		5	31/3/16	Closing Balance			5000/-
6	1/4/16	Opening Balance			5000/-		6	31/3/16	G. Total			10,000/-

Ledger Amount **(Annexure-4)**

Name of accounts _____ School grants

Sr. No.	Date	Particular	Folio	Debit Amt.	Credit Amt.	Dr/Cr Bal.
1	2/3/16	Received from RMSA Shimla	03	5000/-	-	-
2	29/3/16	M/s Sunstar Book Dept. Shimla	03	-	2000/-	3000/-
3	29/3/16	Ram Singh Shoop keeper	03	-	3000/-	-
4	31/3/16	Total		5000/-	5000/-	NIL

Gender issue in education **" अध्यापको में लैंगिक संवेदनशीलता का सृजन" 1**

जब विद्यार्थी माध्यमिक स्तर की शिक्षा मे प्रवेश करते है तो इस समय उनके संवेग शिखर पर होते है यह कहा जा सकता है कि किशोरअवस्था दवाब, संघर्ष का समय होता है इसलिए इस अवधि कि शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 में भी माध्यमिक स्तर कि शिक्षा के महत्व को व्यक्त क्यी गया है। लैंगिक के संदर्भ में इस नीति में उल्लेख किया गया था कि लिंग आधारित व्यवसाय व पाठयक्रमों को हटाया जाए, बालिकाओं को गैर परम्परागत वयवसाय में भागीदारी हेतु और आधुनिक प्रोद्योगिकियों के लिए प्रोत्साहित किया जाए। सार्वभोमिकरण हेतु कहा कि 2015 तक अभी 16 वर्ष व 2020 तक सभी 18 वर्ष कि बालिकाओं व बालिकों को उच्च गुणवता वाली8 माशयमिक शिक्षा प्रदान कि जाए राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा 2005 में भी कहा गया है कि माध्यमिक स्तर कि अवस्था मे बालकों में कई शारीरिक मानसिक संवेगात्मक व सामाजिक परिवर्तन होते ही विद्यार्थियों मे अमूर्त तर्क और तार्किक क्षमता को विकसित करने के अवसर प्रदान करने चाहिए जिससे ज्ञान का सृजन हो सके। भारत सरकार द्वारा माध्यमिक शिक्षा के सार्वभोमीकरण के लिए 2007 के स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान कि घोषणा कि गई।

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का लक्ष्यसभी माध्यमिक सकुलों को निर्धारित मानको के अनुरूप बनाते हुए महिला पुरुष भेदभाव, सामाजिक आर्थिक और नि:शकतत्ता वाधाओं को मिटाना है 2017 तक माध्यमिक स्तर कि शिक्षा कि व्यापक सुलभता कि व्यवस्था सुनिश्चित करना, 2020 तक सभी बच्चों को स्कूल मे बनए रखना तथा माध्यमिक शिक्षा कि गुनवता मे सुधार करना है।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में विशिष्ट सुधार लाना तथा स्कूल में समेकित शिक्षा हेतु सभी संबन्धित गतिविधियों को बढ़ावा देना राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का केंद्र विंदु है (मुख्य फोकस) इस उदेश्य कि पूर्ति के लिए अध्यापकों कि अहम भूमिका है। अत: अध्यापकों का स्वयं लैंगिक संवेदनशील हों अनिवार्य है।

इस मॉड्यूल द्वारा अध्यापकों का स्वयं लैंगिक संवेदनशील बनने का प्रयास क्यी है तथा शैक्षणीक प्रक्रियाओं में लैंगिक समवेशी बनाने का प्रयत्न किया है।

उदेश्य: (OBJECTIVES)

इस मॉड्यूल द्वारा अध्यापक

- लिंग व लैंगिगता के अर्थ को स्पष्ट करने मे सक्षम होंगे।
- विद्यालय परिवेश तथा कक्षा कक्ष में लैंगिक विभेदीकरण को पहचान पाएंगे
- कक्षा कक्ष के वातावरण को लैंगिक समेकित बनाने मे सक्षम होंगे।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भेदभाव रहित सहभागिता विधि को अपना सकेंगे।

विधियाँ) :MATHODOLOGY)

निम्न विधियों को अपनाया जाएगा

- सहभगिता
- विचार विमर्श
- समूह कार्य
- अनुभव
- पारस्परिक बात चित करना

क्रियाकलाप:

1. कुछ कार्डों पर महिला व पुरुष के व्यवसाय, भाव, गुण तथा वस्तुएं जिन्हे हम प्राय : नर्स -:इनके साथ जोड़ते ही लिखे जैसे, डाकीय, बार्वी, गुड़िया, खिलौने कि कर बच्चों का पालन, दाड़ी, बहादुर निर्माण कार्य इत्यादि।
2. सभी कार्डों को प्रतिभागियों को बाँट दें।
3. श्यामपट पर दो कॉलम स्त्री व पुरुष लिखें
4. प्रत्येक प्रतिभागी को कार्ड पर लिखें शब्द को स्त्री या पुरुष के नीचे लिखने को कहें।
5. प्रश्न पूछें कि इस वर्गीकरण का आधार क्या क्या है? क्या यह वर्गीकरण वैद्य है?
6. लिंग)SEX) व लैंगिक)GENDER) का की अर्थ है? इसके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए निम्न गतिविधि आफ्नै जाएगी।

   ACTIVITY:

कुछ कथनो को Flipchart पर लिखने के बाद प्रतिभागियों को लिंग या लैंगिक में विभक्त करने को कहें जैसे:-

- पुरुष कि आवाज किशोरावस्था में बदल जाती है।
- महिलाएं शिशु कि देखभाल पुरुष कि अपेक्षा अच्छा करती है।
- महिकला बालक को जन्म देती है।
- मृत का पोस्टमार्ट्म पुरुष डाक्टर कर्ता है।
- पुरुष बहादुर सैनिक होते है।
- महिलाएं नाजुक व भावुक होती है इत्यादि।
- लिंग व लैंगिक का अर्थ:

लिंग: यह जैविकिय विभिन्नता पर आधारित स्त्री या पुरुष शब्द है।

यह अपरिवर्तनशील (श्ल्यचिकित्सा के बिना) है।

यह जन्म पर आधारित है।

लैंगिक यह समाज द्वारा निर्मित है जो लड़की, पुरुष/ स्त्री कि भूमिका उतरदायित्व, अवसर प्रावधान व अपेक्षाओं से संबन्धित है तथा समाज द्वारा र्जित कि जाती है। अत: लैंगिक परिभाषा को परिवर्तित क्यी ज सकता है। ताकि समाज लैंगिक संवेदनशील बन जाए और सभी लाइगिक विषमताओं को दूर केआर सके।

<u>लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ने वाले उदाहरण</u>

अध्यापक कक्षा में निम्नलिखित प्रकार के उदाहरण देकर यह दर्शाएगा कि कोई भी कार्य लैंगिगता पर आधारित नहीं है।

1. अन्तरिक्ष यात्री कल्पना चावला व सुनीत विलियमस।
2. वायु सेना में महिला पायलट
3. संजीव कपूर एक प्रसिद्ध शैफ है।(खाना बनाने वाले)
4. सिलवि, भारत गोदम्बे हबीव बॉलीवूड के प्रसिद्ध पुरुष beautician है।
5. अम्बिका पिल्लई हमारे देश कि प्रसिद्ध hair Dresser है।
6. सीमा ठाकुर HRTC कि पहली महिला चलाक है।
7. बहुत सी महिलाएं कंडक्टर का कार्य कर रही है।

ACTIVITY: प्रतिभागिय्यों को समूहों मेन बांटने के पश्चात उन्हे स्कूल व कक्षा कक्ष की लैंगिक संबंधी गतिविधियों को लिखने के लिए कहा जाएगा।

ग्रुप.1 केवल छात्रों द्वारा अक्सर कारवाई जाने वाली गतिविधियां।

ग्रुप.2 केवल छात्राओं द्वारा कारवाई जाने वाली गतिविधियां।

ग्रुप.3 कक्षा कक्ष की ऐसी गतिविधियां जिसमे लैंगिक पक्षपात झलकता है।

प्रत्येक समूह कार्य का प्रस्तुतिकरण किया जाएगा तथा उस पर चर्चा की जाएगी।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मेन लैंगिक समेकिता:-

शिक्षक स्वयं लैंगिक संवेदनशीलता के महत्व को भली भांति समझकर कक्षा कक्ष में शिक्षणअधिगम प्रक्रिया के दौरान अपने व्यवहार द्वारा विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशील का सृजन करें जिससे विद्यार्थियों में एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना का विकास हो न की एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की भावना।

क्रिया -कलाप (in class room by teacher)

पाठशाला मेन निन्म्लिखित लिंग संवेदनशीलता को बढ़ावा देने वली कुछ गतिविधियां नीम प्रकार से है :-

1. बच्चों को संबोधित करने के लिए भाषा का उपयोग।
2. शारीरिक भाषा
3. टच छूना /
4. आँख से संपर्क सभी विद्यालय से एक समान
5. लड़के और लड़कियों को संबोधित करने के लिए विशेषण का उपयोग ध्यानपूर्वक किया जाए।
6. वाडी जैस्टर
7. विभिन्न पाठयक्रम गतिविधियों के दौरान एवं पढ़ाई के दौरान अपने चलने फिरने का खास ख्याल रखा जाए।
8. पाठशाला एवं इसके बार बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक विरोधाभासों का निपटारा करते समय लैंगिक समानता को धायन मेन रखा जाए।
9. किशोरावस्था के दौरान होने वाले विभिन्न प्रकार के ज़्यादतियों के संदर्भ मे वाताने हेतु। विद्यार्थियों को इकट्ठे जीवन शैली के बारे मे नाटक चल चित्र के माध्यम से वताना।
10. लड़कियों के लिए उपयुक्त किए जाने वाले विशेषण जैसे beautiful, pretty, obedient, submissive का प्रयोग न करना इसी प्रकार लड़कियों के लिए बहादुर उत्साही ताकतवर जैसे शब्दों का प्रोयोग न करना।
11. उतसहवर्धन के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्द जैसे अतिउतम)excellent), good, well done इत्यादि का प्रयोग लड़का लड़की के लिए सम्मान रूप से कर्ण
12. विद्यार्थियों से उनके विचार सांझा करना
13. उन कारणो का पता करना जिनके कारण पाठशाला की गतिविधिओं में यदि लड़कियां भाग न ले रही हो।
14. कक्षा मे क्रिया कलाप अथवा गतिविधियों के लिए छात्र छात्राओं के मिश्रित समूहों का निर्माण करें।

क्रिया:-

"पाठयपुस्तक और जैणडर"

भारतीय संदर्भ में पाठ्यपुस्तकें ज्ञान का मुख्य स्त्रोत है क्योंकि यह अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण शिक्षण अधिगम सामग्री है। पुस्तकों के सम्बन्द में निम्नलिखित बातें ध्यानार्थ होनी चाहिए।

1. क्या पाठयपुस्तकें सामाजिक वास्तविकताओं को प्रतिबिम्बित करती है।
2. क्या यह समाज के विभिन्न वर्गों के मुद्दों को उजागर करती है।
3. विषय वस्तु चित्रों और अभ्यास मे लैंगिक समेकिता दर्शाई गई है अथवा नहीं।

अतजैण) पुस्तकों के विश्लेषण हेतु प्रतिभागियों को माधायमिक स्तर की विभिन्न :डर परिप्रेक्ष्य निन्म्लिखित टूल दिया जाएग। (

1. पाठयपुस्तक का शीर्षक
2. कक्षा
3. विषय
4. लेखक < महिलाओं की संख्या / पुरुषों की संख्या
5. संपादक < महिलाओं की संख्या / पुरुषों की संख्या
6. आवरण पृष्ठअंतिम पृष्ठ में जैणडर परिप्रेक्ष्य /

   दृश्यावली ल विविरण

   विषय वस्तु का विवरण

7 विषय वस्तु का विवरण

8 लड़का लड़की, स्त्री / पुरुष के लिए अलग विश्लेषणों का प्रयोग।

9 जैणडर के व्यवसाय से संबन्धित भिन्नता

10 लड़का लड़की, स्त्री / पुरुष दोनों को सुनिश्चित भूमिका।

11 लड़का लड़कियों, स्त्री / पुरुष की या दोनों के योगदान व उपलब्धियों का weight age

Active Role
Passive Role

12 पुरुष/ महिलाएं <

13 विषय वस्तु व दृश्यावली में कुल पात्र

I. पुरुष

II. महिला

III. दोनों के लिए जैसे मनुष्य), वे, उनको, लोग आदि

14 अभ्यास/ प्रोजेक्ट्स। गतिविधियों जैणडर सहभागिता को दर्शाती है अथवा नहीं।

पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण का निष्कर्ष

I. लैंगिक पक्षपात पर आधारित

II. लैंगिक रूढ़िबादिता पर आधारित

III. लैंगिक समेकित लैंगिक पक्षपात रहित

उपरोक्त निष्कर्ष पीआर प्रत्येक समूह के प्रतिभागी पर प्रकाश डालेंगे।

निष्कर्ष

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों क भावनात्मक विकास, कार्य करने की क्षमता व लग्न चरम पर होता है किसी भी प्रकार का भेद भावपूर्ण रवैया उनकी क्षमता को दीमक की तरह खोखला करता चलता है। आज के परिप्रेक्ष्य में इस बात की जानकारी कि सैक्स और जैणडर दो अलग अलग विषय है, होना अति आवश्यक है विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास कि जिम्मेवारी काफी हद तक अध्यापकों पर है । किसी कार्य विशेष कि तुलना स्त्री पुरुष के कार्य के रूप में किया जाना कदापि तर्कसंगत नहीं है। कार्यों के आधार पर भेद भाव कि स्थितियों को समझना और कुशलतापूर्वक निपटारा करना एक आदर्श अध्यापक के लक्षण प्रकट करता है । RMSA लगातार लैंगिक भेद्भव को दूर करने में प्रयत्नशील है यह प्रयास किसी लड़की को लड़का या लड़के को लड़की

बनाने का नहीं है बल्कि उन्हे विना किसी भेद भाव के समान रूप से उपर उठाने के ही। जीवन में चुनौतियों का सामना हर स्त्री पुरुष को समान रूप से तथा निजि स्तर पर करना पड़ता है । प्रयास लैंगिक विविधता को एकीकृत किए जाने के लिए किया जाना चाहिए। सभी कि क्षमता का प्रयोग समाज कि उन्नति के लिए किया जाना चाहिए। इसके लिए स्कूल परिवार व समाज तीनों को मिलकर सांझे मंच पर कार्य करना अति आवशयक है। लैंगिकता कि संकीर्ण सोह से उपर उठ कर सभी को मुख्य धारा से जोड़ा जाना चाहिए। लैंगिक एकीकरण को सभी विषयों के साथ जोड़ जाना चाहिए। आज समकालीन चुनौतियों पर फिर से विचार करने कि जरूरत है। लैंगिक एकीकरण के अध्ययन में अनुसंधान के बहुत से सुझाव है। लैंगिक आधार पर एकीकृत कर समान रूप से अवसर प्रदान किए जाने पर एक स्वस्थ और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण किया जा सकेगा।

मूल्यांकन:-

लैंगिक संवेदनशीलता के आंकलन हेतु निम्न प्रकार से प्राशन पूछें जाएंगे।

1. रीति रिवाजों जो लिंग भेद पर आधारित है, के संबंध में प्रश्न पूछे जाएँ । जियसे बाब बालक नाथ मंदिर में प्रवेश महिलों के लिए निषेध इत्यादि।
2. ऐसे शब्दों के विषय में पूछें जो लैंगिक भेद दर्शाते हों जैसे)policeman, Manpower, mankind
3. ऐसे शब्दों के विषय मे पूछे जो लैंगिक समेकित हो जैसे -:Police Officer, Human kind, work force etc.
4. समाज के विभिन्न क्षेत्रों मे महिलाओं व पुरुषों के योगदान कि जंकरि इकट्ठा करना प्रोजेक्ट कार्य), Scrap- Book तैयार करना etc.

समावेशित शिक्षा

भूमिका:- समावेशित शिक्षा के विस्तृत विवरण मे न केवल अक्षमता युक्त बालकों पर अपितु समाज के तिरस्कृत वर्ग एवं उपेक्षित श्रेणी के बच्चों को भी शामिल किया जाता है। जीनेव कोन्फ्रेंस 2008 में भी विद्यार्थियो की उनकी विभिन्नताओं अकवश्यकताओं, विशेषताओं व अधिगम अपेक्षाओं के सम्मान करते हुए गुणात्मक शिक्षा प्रदान करने पर बल दिया जाता है तथा सभी तरह के भेदभाव को दुज करने पर बल दिया है ।

समावेशित शिक्षा नियम कारणो से आवश्यक है।

1. शिक्षा सभी बच्चों के विकास के लिए एक आवश्यक अंग है। अतसभी बच्चों को शिक्षा मिलनी : चाहिए ।
2. बड़ा होने पर सभी बालकों को समाज में शामिल होना है अतएव विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय समाज के इन बच्चों की स्वीकारोंती के लिए एक उतम माध्यम है। क्योंकि विशेष स्कूलों की संख्या काफी कम है तथा सभी अभिभावकों की पहुँच नहीं है और सामान्य स्कूलों की संख्या अधिक भी है तथा सभी को पहुँच मे अंडर भी ही ।

   हमेशा से ही विशेष आवश्यकता युक्त बच्चों को एक हाशिए पर ही रखा जा रहा है। अत : आवश्यकता है इन बच्चों को सभी बच्चों के साथ समावेशित करने की।

   विभिन्न विभिधाताओं द्वारा भी समावेशित शिक्षा को शामिल करने पर ज़ोर दिया गया है। उदाहरणतया राष्ट्रीय पुनर्वास परिषद (1992)द्वार ऐसी सभी संस्थाओं को मान्यता देने की बात की गई है । जो विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाती है इसके साथ इस परिषद द्वार यह सुनिश्चित किया जाता है की विशेष बालकों के साथ काम करने वाले सभी व्यक्ति राष्ट्रिय पुनर्वास परिषद द्वारा नामांकित हो। परिषद द्वारा स्वयं किसी भी तरह प्रशिक्षण प्रदान नहीं दिये जाते।

   PWD Act 1995 का अध्याय V व सेक्शन शिक्षा के ऊपर केन्द्रित 26PWD Act द्वारा 7 ध्यपकों को शामिल किया गया है जैसे अध्यापन दृष्टि व्फ़िता श्रवण वफिटा चलने संबंधी अक्षमता, मानिदिक मन्द्ता कोढ़ ग्रसित व मानसिक बीमारी इत्यादि PWD Act निंम विंदुओं पर ज़ोर डालता है।

a. प्रत्येक राज्य सरकार यह सुनिश्चित करें की सभी अक्षम बालकों को साल की आयु पूरी होने 18 तक मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा प्द्न की जाए।
b. प्रत्येक राज्य सरकार यह सुनिश्चित करें की अनेक तरह की अक्षमताओं युक्त बालकों को अबरोधक रहित वातावरण मे शिक्षा प्रदान की जाए।

c. राज्य क्सरकार प्रत्येक बालक की सुविधानुसार विशेष सकुलों के खोलने का प्रबंध करें।

d. प्रत्येक स्कूल मे रोजगार युक्त शिक्षा प्रदान की जाए ताकी बच्चेन उसमें लाभान्वित हो सके।

राष्ट्रीय न्याय (1999) :- चार तरह की अक्षमताओं पर ज़ोर डालता है जैसे प्रयस्तिष्क घाट, औटीजम, मानसिक मंदता व मिश्रित अक्षमताएं सष्ट्रीय न्याया बच्चों के पुनर्वास में परिवार समुदाय व सरकार की भागीदारी को सुनिश्चित करता है।

समावेशित शिक्षा का उदेश्य न केवल विशिष्ठबालकों का समावेश करना है अपितु इसमें अन्य सभी बंचीत श्रेणी के बालक बालिकाओं तथा अन्य पिछड़े वर्गों का समावेश शामिल है।

प्रस्तुत मौड्यूल के निंम्न उदेश्य प्रमुख है:-

उदेश्य:-

- अध्यापकों को समावेश का अर्थ स्पष्ट करवाना
- अध्यापकों को अक्षमता युक्त वंचित श्रेणी व हाशिए पर उपस्थित बालक बालिकों की समस्याओं को समझने में सक्षम बनाना।
- अध्यापकों को विभिन्न विषयों व उपविषयों को समझने हेतु विभिन्न प्रकार की शिक्षण स्संगरिका प्योग करने हेतु जानकार उपलब्ध करवाना।
- विभिन अक्षमतों से प्रभवित बच्चों को शिक्षण प्रदान करने में आने वाली विभिन्न चुनौतियों को अनुभव करने व स्वीकारने में शिक्षकों को अवगत कारवां।
- अध्यापकों को विभिन्न श्रेणी के बालकों की आवश्यक समस्याओं को समझने संवेदनशील बनाना
- आधुनिक शिक्षण प्रणाली द्वारा उपलब्द विभिन उपकरणों प्रयोग को अध्यापको द्वारा उपयोग किए जाने को सुनिशिचित करना|
- अन्य बालको को विशेष बच्चो की समस्याओं के योग्य बनाना एंव एक दूसरे की सहायता करने मे सक्षम बनाना |
- माता - पिता एंव समुदाय की भागीदारी का उपयोग करने में आधायपक की सहायता करना |

विधि :

समायोजित शिक्षा प्रदान करने के लिए सबसे पहले कक्षा प्रबंधन का होना का आते आवशकता है | कक्षा कक्ष ऐसा होना चाहिए जिसमें प्रत्येक बालक को बेठना सुविधाजनक हो | कक्षा कक्ष खुला हवादार व प्रकाशित होना चाहिए | लिखने वाले बोर्ड पर प्रयाप्त रोशनी होनी चाहिए| शब्दो का आकार बहुत छोटा या बड़ा नहीं होना चाहिए | अधायपक की आवाज न तो अत्यंत तीव्र होनी चाहिए ओर न ही अत्यंत धीमी

होनी चाहिए। अध्यापक के चहरे पर भी रोशनी पढ़नी चाहिए । कक्षा कक्ष में अध्यापक का ध्यान सभी बालको पर होना चाहिए । सभी बच्चो को एक दूसरे की सहायता करने की प्रवृति होनी चाहिए ।

इसके अतिरिक्त विभिन विषयो को पढ़ाते हुए अध्यापक निम्न बातों को ध्यान में रख सकता है ।

- विज्ञान व सामाजिक विज्ञान इत्यादि विषयो को पढ़ाते हुए अध्यापक प्रदर्शन , एवं करके सीखना एवं अन्य मनोरंजक विषयो का प्रयोग केर सकता है |
- बच्चों की अक्षमताओं व आवशकयताओं लो ध्यान मे रखते हुए अध्यापक विभिन्न प्रकार के चार्ट , मॉडल जो की उभरे हुए भी हो सकते है व सामान्य भी हो सकते है का प्रयोग कर सकता है।
- दृष्टि वाधित बालको की सुविधा के लिए श्रवण पुस्तकों व श्रवण सामाग्री का प्रयोग किया जाता है |
- भाषा का ज्ञान देते समय श्रवण वधित एवं दूषित वधित बच्चो को अन्य समान बच्चो के साथ Visual aids एवं Audio aids का प्रयोग किया जाना चाहिए | यह सभी व अन्य और कई प्रकार की सहायक सामग्री प्राप्त केरने हेतु अध्यापक NCERT की website पर nrose.gov.in पर search कर सकते है |
- इसके अतिरिक्त अध्यापक अपनी आवशयकता - नुसार उचित माध्यम , आधुनिक उपकरण व अन्य सामाग्री का चयन भी कर सकता है तथा साथी बालको को भी दूसरे बालको की सहयाता करने हेतु संवेदनशील बना सकता है |

विषय – प्राथमिक उपचार

उद्देष्य :– किसी दुर्घटना के पश्चात अध्यापक द्वारा दृष्टिवाधित, श्रवणबाधित छात्रों को समेकित कक्षा में पीडित को प्राथमिक उपचार देना बताना

विधा (Methodology)

1. प्राथमिक उपचार के लाभ बताना।
2. मॉडल के माध्यम से बताना।
3. निदर्शन (Demonstration)के माध्यम से बताना।
4. व्याख्यान विधी से बताना।

आवश्यक सामग्रीः– प्राथमिक उपचार किट

कियाकलापः–

1. प्राथमिक उपचार किट में प्रयोग में लाई जाने वाली सामग्री की जानकारी।
2. दृष्य–श्रव्य सामग्री की सहायता से बताना

3. प्रत्येक सामग्री का कार्य व उपयोग चरणवद्व तरीके से बताना।
4. दृष्टिबाधित छात्रों को उभरे हुए अक्षर वाली प्राथमिक उपचार किट के बारे में बताना।
5. श्रवणबाधित छात्रों को ईशारों से व सांकेतिक भाषा द्वारा बताना।
6. प्राथमिक उपचार किट का समय समय पर नवीकरण करना।

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment):–

1. प्राथमिक उपचार देना क्यों आवश्यक है ?
2. प्राथमिक उपचार के क्या लाभ है ?
3. हल्के कटने छिलने या जख्म होने पर क्या प्राथमिक उपचार देना चाहिए ?
4. प्राथमिक उपचार के समय उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री का इस्तेमाल कैसे किया जाता है ?

योगात्मक मूल्यांकन (Summative Assessment):–

1. सांप के काटने पर क्या प्राथमिक उपचार देना चाहिए ?
2. हड्डी टूटने पर क्या प्राथमिक उपचार देना चाहिए ?
3. प्राथमिक उपचार किट में क्या क्या सामग्री होनी चाहिए ?
4. प्राथमिक उपचार किट का समय समय पर नवीकरण क्यो आवश्यक है ?
5. क्या प्राथमिक उपचार किट की एक निश्चित जगह होनी चाहिए या नहीं ?

निर्माण :–

मनोज कश्यप (कला सनातक) रा.व.मा.पा. (छात्र) नाहन
राजीव शर्मा (कला सनातक) रा.उ.पा. मूमता, कांगड़ा।

Training Module on Inclusive Education (समावेशित शिक्षा)

विषय: अम्ल

उप विषय: अमलों के गुण

विषय का परिचय:

अम्ल महत्वपूर्ण पदार्थ हैं। हम इन्हें अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। जितने भी खट्टे पदार्थ हम अपने आसपास देखते हैं उन सभी में अम्ल विद्यमान होते हैं जैसे कि दही में लैक्टिक अम्ल, नींबू और संतरे में सिट्रिक अम्ल, सिरके में ऐसीटिक अम्ल, टमाटर मे ओक्सैलिक अम्ल, इमली में टार्टरिक अम्ल

पाया जाता है । इसके अतिरिक्त कई ऐसे अम्ल हैं जो हानिकारक भी हैं जैसे कि चींटी के डंक और में नेटल के डंक में विद्यमान फार्मिक अम्लजहरीले अम्ल हैं ।

उद्येश्य :

अध्यापक समावेशित कक्षा में विद्यार्थियों को अम्लों के महत्वपूर्ण गुणों को बताने में सक्ष्म होगा और दैनिक जीवन में अम्लों की उपयोगिता समझाने के योग्य होगा ।

शिक्षण विधि :

1. लैक्चर विधि व्याख्यान विधि /
2. निरूपण विधि)Demonstration method):
    - श्रवण बाधित विद्यार्थियों के लिए चार्ट :, श्यामपट, ICT स्मार्ट कक्षा, facial expressions, ISL(Indian Sign Language) के कुछ संबधित चिन्हों का उपयोग ।
    - दृष्टि बाधित विद्यार्थियों के लिए :Audio-aids, Embossed pictorial charts, ICT Solutions.

आवश्यक सामग्री :

सिट्रस फल (नींबू, संतरा , इमली), सिरका , दहीं , pictorial charts, ICT smart classrooms, AV aids, श्यामपट।

अध्यापक अध्यापन कार्य शूरू करने से पहले अम्लों से संबधित प्रशन पूछकर छात्रों के पूर्व ज्ञान का परीक्षण करेगा जैसे कि जब चींटी काटती है तो जलन क्यों महसूस होती है , नींबू का स्वाद कैसा होता है?

क्रियाकलाप :

अध्यापक विद्यार्थियों को अम्लों के निम्न गुणों के विषय मे बताएगा :

- अमल स्वाद मे खट्टे होते हैं :
  छात्रों से फलों को चखने के लिए कहा जाएगा ।

- अमल स्पर्श मे पानी जैसे होते हैं :

  छात्रों को फलों के रस को उंगलियों के बीच स्पर्श करने के निर्देश दिये जाएँगे ।

- अम्लों का उपयोग सफाई मे किया जाता है :

  अध्यापक छात्रों को Toilet Cleaner/cleaning agents का उपयोग करके दिखा सकता है ।

रचनात्मक मूल्यांकन (Formative Assessment):

1. सिट्रिक अम्ल उपस्थित है :

a) नींबू b) आंवला c) इमली d) टमाटर

2. दहीं मे उपस्थित अम्ल का नाम _____ है ।
3. ओकसालिक अम्ल इमली मे पाया जाता है ।(गलत / सही)
4. सफाई करने वाले रंजकों मे _____ पाया जाता है ।
5. मिलान कीजिये :

अम्ल का नाम	**जिसमे पाया जाता है**
ऐसीटिक अम्ल	संतरा
मेथेनोइक अम्ल	दहीं
टार्टरिक अम्ल	इमली
सिट्रिक अम्ल	चींटी का डंक

योगात्मक मूल्यांकन (Summative assessment):

1. अम्लों के तीन गुणों की वायाख्या कीजिये ।
2. दैनिक जीवन में अम्लों के तीन उपयोग बताइये ।

स्त्रोत (Sources) :

1. दृष्टि बाधित विद्यार्थियों के लिए Jaw talking software .

2. Virtual Lab for science material.

3. NCERT → Educational Resources → NREOR.

Prepared by:

समावेशित शिक्षा की चुनौतियाँ एवं सुझाव :

चुनौतियाँ:

समावेशित शिक्षा प्रदान करना अपने आप ही किसी चुनौती से कम नहीं| अध्यापक को समावेश शिक्षण प्रदान करने मे बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें से कुछ निम्न है?

- समायोजित शिक्षा मे अध्यापक अपने आप को पूरी तरह से सक्षम नहीं होता है| अध्यापक बहुत तरह की समस्याओं को समझने मे सक्षम नहीं होता |
- प्रशिक्षण के अभाव मे अध्यापक विशेष बालको विशेष तौर पर दृष्टि वाधित एवं उन्हे सभी विषयो को सही प्रकार से वर्णित नहीं कर पता है |
- समावेशित शिक्षा प्रणाली में विशेष अध्यापको की आवशयकता बनी रहती है परंतु आधिकतर शिक्षण संस्थानो में इनका अभाव रहता है |
- बहुत बार विशेष बालकों के माता पिता या अभिभावक इन बच्चो की समस्याओं को समझ नहीं पाते तथा अध्यापको व बच्चो से ज्यादा उपेक्षाएं रख लेते है |
- कभी - कभी समुदाय के सहयोग का भी अभाव रहता है |
- कई प्रकार की समस्याओं की वजह से कई बार आधुनिक उपकेरणों का पप्रयोग भी संभव नहीं हो पता है क्योंकि सभी स्कूलो मे Information Technology उपलब्ध नहीं होता |

सुझाव :

-: समावेशित शिक्षा को आधिक सफल बनाने हेतु निम्न सुझाव दिए जा सकते है

- सभी अध्यापको को जहां तक संभव हो सके विशेष तोर पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे बच्चों की समस्याओं को समझते हुए उन्हे सही शिक्षण प्रदान कर सके |
- विभिन्न स्कूलो मे विशिष्ट अध्यापको का प्रबंध देना चाहिए ताकि अन्य अध्यापक उनसे सहयोग प्राप्त कर सके |
- माता पिता व अभिभावकों को भी इनके बच्चों की समस्याओं को सही प्रकार समझने मे सक्षम बनाने हेतु विशेष प्रशिक्षण अवश्य दिया जाने चाहिए

विज्ञान व सामाजिक विज्ञान इत्यादि विषयो को पढ़ाते हुए अध्यापक प्रदर्शन , एवं करके सीखना एवं अन्य मनोरंजक विषयो का प्रयोग केर सकता है |

- बच्चों की अक्षमताओं व आवशकयताओं लो ध्यान मे रखते हुए अध्यापक विभिन्न प्रकार के चार्ट , मॉडल जो की उभरे हुए भी हो सकते है व सामान्य भी हो सकते है का प्रयोग कर सकता है।
- दृष्टि वाधित बालको की सुविधा के लिए श्रवण पुस्तकों व श्रवण सामाग्री का प्रयोग किया जाता है |
- भाषा का ज्ञान देते समय श्रवण वधित एवं दूषित वधित बच्चो को अन्य समान बच्चो के साथ Visual aids एवं Audio aids का प्रयोग किया जाना चाहिए | यह सभी व अन्य और कई प्रकार की सहायक सामग्री प्राप्त केरने हेतु अध्यापक NCERT की website पर nrose.gov.in पर search कर सकते है |
- इसके अतिरिक्त अध्यापक अपनी आवशयकता - नुसार उचित माध्यम , आधुनिक उपकरण व अन्य सामाग्री का चयन भी कर सकता है तथा साथी बालको को भी दूसरे बालको की सहयाता करने हेतु संवेदनशील बना सकता है |

योजना क्या है?

योजना किसी विशेष कार्य में सुचारु एवं क्रमबद्ध रूप से पूरा करने के लिए एक नियमबध्द कार्यक्रम है। इसमे किसी विस्तृत कार्य को छोटे छोटे सोपानों में बांटा जाता है और प्रत्येक सोपान को निश्चित समय में वैज्ञानिक ढंग से पूर्व निर्धारित विधि से पुरा किया जाता है।

किसी भी संस्था की उन्नति को निम्न तत्व निर्धारित करते है।

- प्रभावी योजना)Sound Planning)
- उपयुक्त कार्यान्वयन (Efficient Execution)
- अच्छा दिशा निर्देश (Good Direction)
- पर्याप्त धन (Proper Economy)

- **प्रभाव योजना**) Sound Planning)

एक प्रभावी योजना बनाने से पहले यह अवश्य सोच लेना चाहिए कि:-

(क) कार्य क्यों किया जना?

(ख) क्या किया जाना?

(ग) कैसे किया जाना ?

(घ) कब किया जाना?

- **उपयुक्त कार्यान्वयन (Efficient Execution)**

  योजना चाहे कितनी अच्छी हो यदि उसका क्रियान्वयन दक्षता पूर्ण न किया जाए तो वह योजना भी सफल नहीं हो सकती।

- **अच्छा दिशा निर्देश (Good Direction)**

  योजना के उचित व क्रमबद्ध क्रियान्वयन के लिए अच्छा दिशा निर्देश भी अनिवार्य है। गलत दिशा मे वीएच दिशाहीन योजना उदेश्य प्राप्ति मेन बाधक हो।

- **पर्याप्त धन (Proper Economy)**

  योजना अधिक महत्वकांक्षी नहीं होनी चाहिए। योजन बनाते समय आर्थिक संसाधनो का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त धनराशि जुटाने के लिए समुदाय या सरकार की एजेंसियों से सहायता लेनी चाहिए जो यथासंभव धन का प्रावधान करने मे सहायक हो सके।

योजना को इतना अधिक महत्व क्यों दिया जाता है।

- जनसंख्या मे निरंतर वृद्धि के कारण।
- ज्ञान में वृद्धि के कारण
- प्रकृतिक संसाधनो में बढ़ती कमी के कारण।
- वैज्ञानिक तरीको का शी समयानुसार उपयोग न होने के कारण।

योजना की विशेषताएँ:-

- योजना भविष्य के लिए होती है।
- योजना उदेश्यमूलक होती है।
- निश्चित समयवधि में निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए योजना बनाई जाती है।

इन कारणों एवं विशेषताओं को मध्यनजर रखते हुए आज हर क्षेत्र मे योजन की बात की जाती है। शिक्षा के क्षेत्र मे भी इसका एक अलग स्थान है।

शिक्षा के क्षेत्र मे योजना के स्तर:-

(क) वृद्ध स्तरीय नियोजन (Macro Level Planning)

(ख) सूक्ष्म स्तरीय न ईयोजन (Micro Level Planning)

(क) वृद्ध स्तरीय नियोजन:

- वृद्ध स्तरीय नियोजन ऊंचे स्तर पर व बड़े क्षेत्र के लिए बनाई जति है। जैसे जंगल मे निहित सभी प्रकार की वनस्पति के लिए जिला मे पाठशालाओं क खोलन व प्रशासनिक व्यवस्था निर्धारित करना आदि।

(ख) सूक्षम स्तरीय नियोजन -:

- सूक्षम स्तरीय नियोजन निम्न स्तर पर व छोटे क्षेत्र के लिए बनी जाती है जैसे एक जंगल मे एक प्रजाति के वृक्षों के संरक्षण के लिए या शिक्षा के क्षेत्र में एक पाठशाला के विकास के लिए वहीं के लोगो के सहयोग से बनाई गयी योजना, सूक्षम स्तरीय नियोजन कहलाता है।
- इस प्रकार की योजनाएँ स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होती है। जिसमें डा॰ अमर्त्य सेन की 'sharing and Curing' सिधान्त के अनुसार, समुदाय के हर व्यक्ति को महत्व दिया जाता है।
- इसमें लोगों की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं के आधार पर स्थानीय संसाधनो भौतिक), मानवीय एवं वित्तीयके प्रयोग पर बल दिया जाता है। (
- सूक्ष्म स्तरीय योजना वास्तविकता के कफी निकट होती है।

नोट :कोई योजना वृहद स्तरीय एवं सूक्ष्म स्तरीय दोनों प्रकार की हो सकती है जैसे राज्य स्तरीय योजना केंद्र स्तरीय योजना की तुलना में सूक्ष्म स्तरीय है परंतु वही योजना जिला स्तरीय योजना की तुलना में वृहद स्तरीय है।

शिक्षा के क्षेत्र में सूक्ष्म स्तरीय नियोजन के उदेश्य:-

- प्रत्येक बच्चे को गुणात्मक शिक्षा की उपलब्धता प्रदान करवाना, जिसमें शत प्रतिशत नामांकन, ठहराव की समस्या को हल करना।
- स्थानीय समुदाय को प्रत्येक शैक्षणिक कार्यक्रम में सहभागिता हेतु अभिप्रेरित करना।
- शिक्षा संस्थानोतु पाठशाला और समुदाय में परस्पर सामंजस्य स्थापित कर पाठशाला के विकास हे / सहयोग सुनिश्चित कर्ण।
- स्थानीय संसाधनो की उपलब्धता के आधार पर विद्यालय के शैक्षिक, भौतिक स्तर में सुधार हेतु समुदाय को गतिशील बनना।

- उपलब्ध संसाधनो का आवंटन एवं समुचित उपयोग।
- नियमित रूप से विद्यालय का संचालन सुनिश्चित करना तथा विद्यालय मे सीखने सीखने की प्रक्रिया का वातावरण तैयार करना।
- सर्वेक्षण के माध्यम से विश्वसनीय आंकड़ो का एकत्रीकरण कर योजना निर्माण हेतू उनका उपयोग सुनिश्चित करना।

उपरोक्त उड़ेश्यों की प्राप्ति हेतु हमारे सामने सूक्ष्म तरीय नियोजन से संबन्धित कुछ प्रश्न पैदा हो सकते है।

- पाठशाला को कैसे सामुदायिक आधार दिया जाए?
- संबन्धित समुदानी के प्रति पाठशाला की प्रतिबद्धता को कैसे सुनिश्चित किया जाए?
- सांजीक शक्तियों को किस तकनीक से पाठशाला के विकास प्रक्रिया में जोड़ा जाए?

क्योंकि यह एक सांजीक कौशल है इसलिए समुदाय की सहभागिता प्रपट करने के लिए हमें उनके सामूहिक मुद्दों के लिए उनके बीच जाना होगा। सामूहिक मुद्दों को लेकर उन्हे एक मंच पर इकट्ठा करना तथा समाधान हेतु प्रेरित करना होगा।

- पाठशाला में आयोजित इन कार्यक्रमो में स्कूल प्रबंधन स्निती के सदस्य एवं अध्यापक सभी पनि भागीदारी सुनिशचित करे ।
- अभिभावकों से स्कूल स्तर पर होने वाली बेठकों में शिक्षा के महत्व पर चर्चा करे ।
- बालिका शिक्षा का महत्व बतायें तथा माता पिता को इसके लिए प्रेरित करे । -
- पाठशाला के विकास में जनसहयोग लेना ताकि आवशयकतानुसार पाठशाला के लिए सुविधाएं जुटाई जा सकें ।
- पाठशाला के गुणात्मक शिक्षा के प्रयासो को बल देने के लिए स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्यों में निरन्तर बातचीत होनी जरूरी है।
- पाठशालों में शोचलयों विशेषकर बालिका शोच निर्माण को प्राथमिकता दें ।
- स्कूल प्रबंधन समिति की बेठकों में शिक्षण - अधिगम संबंधी समस्याओं पर बातचीत करना तथा उनका समाधान निकालना ।
- मूल्यांकन को सही ढंग से क्रियान्वित करवाना ।
- स्कूल प्रबंधन समिति के सदस्यों में निरंतर बातचीत होना कि वे घरेलू कार्यो में बच्चो का सहयोग स्कूल समय पर न लें । उसे बार - बार स्कूल से छुट्टी ना लेने दें ताकि वे पाठ्यचर्या को सीखने में न पिछड़े ।

- स्कूल प्रबंधन समिति विशेष आवशयकतों वाले बच्चों की विशेषकर जरुरतों की पूर्ति के लिए निरन्तर प्रयास करें । उपरोक्त प्रयासो से बच्चो की स्कूल छोड़ने की प्रवृति को रोका जा सकता है ।

विद्यालय विकास योजना

हिमाचल प्रदेश सार्वभोमिक उच्च माध्यमिक शिक्षा का लक्ष्य हासिल करने की दिशा में पुरजोर अग्रसर है । इस दिशा में शिक्षा के विकेंद्रीयकरण पर विशेष बल दिया गया है । इसके लिए जिला स्तर विशेषकर स्कूल की आवशयकता के अनुरूप शिक्षा के नियोजन एवं प्रबंधन का विकेंद्रीयकरण किया गया है । राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की शुरुआत में ही प्रदेश में विभिन स्तरो पर नियोजेन एवं प्रबंधन क्षमताओं में सुधार की आवश्यकता महसूस हुई जिसके लिए स्कूल स्तर पर स्कूल विकास योजना बनाना आवश्यक एवं महतपूर्ण है । स्कूल विकास योजना में निहित पहलू इस प्रकार है -:

(स्कूल विकास योजना में स्कूल विकास से जुड़े हर एक पहलू का समावेश होता है)

- स्कूल का इतिहास
- स्कूल में उपलब्ध सारंचनात्मक ढांचा
- कक्षावार छात्र नामांकन
- आयुवर जनसंख्या आंकड़े
- शिक्षा के एक स्तर से दूसरे द्तर में स्तरोनीति
- ड्रॉप आउट छात्रो स्कूल बीच) में छोड़ देने वाले बच्चों का कक्षावार ब्योरा (
- कक्षावर पुनरावृति
- विशेष आवशयकतों वालों बच्चों की पहचान
- निर्माण कार्य
- स्कूल में मात्रात्मक एवं गुणात्मक उपलब्धियां
- उपलब्धियों एवं कठिनाइयों की पहचान
- स्कूल विकास हेतु लक्ष्य निर्धारण
- आंतरिक मोनिटरिंग एवं मूल्यांकन ।
- महत्व के अनुरूप , स्कूल विकास कार्यो की प्राथमिकता तय करना ।
- लक्ष्य प्राप्ति हेतु जिम्मेदारी तय करना ।
- प्रत्येक प्राप्ति हेतु संससाधन जुटाना ।
- निरंतर मोनिटरिंग एवं निरक्षण ।

स्कूल का संक्षिप्त इतिहास :

प्रत्येक स्कूल में अपना संक्षिप्त इतिहास तैयार करना होता है जिसमे स्कूल का स्थापना वर्ष , स्कूल की स्थिति कहाँ स्थित है)?), स्कूल की सड़क से दूरी , स्थापना के वर्ष में स्कूल में प्रवेश पाने वाले बच्चों की संख्या तथा उस समय स्कूलों में कक्षा - कक्षों की उपलब्धताओं संबंधी जानकारी दी जाती है ।

स्कूल में उपलब्ध ढांचागत सुविधाएं :

वर्तमान में स्कूल में अध्यापको की संख्या, भवन की स्थिति कच्चा), पक्का , किराए का , सरकारी - तथा कितने बच्चो की आवशयकतों को पूरा कर रहा है संबंधी जानकारी । क्या स्कूल नया (नया अपग्रेड हुआ है ?

स्कूल के लिए कुल स्वीकृत पद -, उनमे से भरे गए तथा रिक्त पदो की संख्या

अभियान अथवा अन्य शेक्षिकसंस्थान प्रमुख सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रिय माध्यमिक शिक्षा -
कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापको का ब्योरा रखा जाएगा तथा वह यह भी देखेगा -
कि यह प्रशिक्षण की आवश्यकता के अनुरूप हो ।
ल छात्र तथा कु / अनुसूचित जन जाति / अनुसूचित जाति / कक्षावार छात्र नामांकन जिनमें सामान्य -
छात्राओं का नामांकन दर्ज किया जायगा ।

आयु वार जनसंख्या आंकड़े ग्राम शिक्षा पंजिका व जनगणना के अनुसार दिये जाएंगे । -

उच्च प्राथमिक उच्च मध्यमिक स्तर पर कक्षावार पुनरावृति /

इसमे वे छात्र - छात्राएँ शामिल होंगे जो कि एक कक्षा या स्तर विशेष कि पुनरावृति आगामी वर्ष में भी कर सकते है ।

विशेष आवशयकतों वाले बच्चो की पहचान

प्रत्येक स्कूल का सर्वेक्षण केर विशेष आवशयकतों वाले बच्चो को चिन्हित करना है । इन छात्र छात्राओं का कक्षावर ब्योरा तथा उन्हे दिये गए सहायक यंत्रो की जानकारी भी देनी होती है ।

- उच्च प्राथमिक उच्च मध्यमिक स्तर पर छात्र छात्राओं की कक्षावार पदोन्नति का ब्योरा /
- स्कूल ना जाने वाले बच्चे तथा विशेष आवशयकतों वाले बच्चे

सर्वेक्षण अथवा ग्राम सभा पंजिका में उपलब्ध आंकड़ो के अनुसार स्कूल ना जाने वाले सामान्य तथा विशेष विशेष आवशयकतों वाले बच्चो को चिन्हित किया जाता है।

निर्माण कार्य

स्कूल में सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रिय माध्यमिक शिक्षा अभियान के तहत अत्तिरिक्त कक्षा - कक्षो , शोचलयों , पेयजल , चारदीवारों , पाठशालाओं के भवन निर्माण की वर्तमान स्थिति दी जाती है ।

स्कूल की उपलब्धियां : मात्रात्मक तथा गुणात्मक :

विगत वर्ष -: वर्षो में मात्रात्मक उपलब्धियां जैसे /

- नामांकन में वृद्धि
- ढांचागत सुविधाओं में वृद्धि
- स्कूल विकास मामलो में स्थानीय लोगो की भागीदारी
- दान देने वाले संगठनो का अंशदान
- स्कूल में विभिन्न गतिविधिओं हेतु वितीय परिव्यय तथा उपयोगिता
- निशुल्क पाठयपुस्तकें प्रप्त करने वाले छात्रो की संख्या
- विभिन्न योजनाओं में वितीय लाभ पाने वाले छात्रों की संख्या
- स्कूल में सहयोग हेतु सम्मिलित लोगो की संख्या
- अतिरिक्त समीक्षा बेठकों एवं स्थानीय लोगों के साथ बेठकों में आयोजित की आवृति

विगत वर्ष वर्षो में गुनतमक उपलब्धियां /

- आठवीं , दसवीं व 2 +पास कर गए बच्चो की संख्या
- स्कूल छोड़ने वाले बच्चे तथा दोबारा उसी कक्षा मे पुनरावृति करने वाले बच्चों की दर मे कमी ।
- छात्रो एवं अध्यापकों मे अनुपस्थिति कम करना ।
- 'A' श्रेणी मे उतीर्ण छात्रों की संख्या।
- अपव्यय एवं स्थिरता कम करना ।
- विभिन्न परीक्षाओं, राष्ट्रीय प्रतिभा तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं मे छनित छात्रों की संख्या
    - सह-शैक्षिक गतिविधियों मे स्कूल की उपलब्धियां
    - स्कूल मे अपनाई गई अछि गतिविधियां नवाचार । /

समस्या एवं मुद्दों की पहचान

प्रत्येक स्कूल की अपनी समस्या एवं विशेष मुद्दे होते हैं। इनमे कुछ शैक्षिक और कुछ सह-शैक्षिक होंगे। जिनके लिए प्रत्येक स्कूल को अलग अलग रणनीति अपनानी होती है ताकि समस्या का समाधान समयवद्धता के साथ हो सकें।

स्कूल के विकास के लिए लक्ष्य निर्धारण

लक्ष्य निर्धारित किए बिना किसी भी स्कूल का विकास संभव नहीं है । निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उपयुक्त कार्यवाही की आवश्यकता होती है । इसके लिए संबन्धित स्कूल के अध्यापक / अध्यापिकाएँ, छात्र / छात्राएँ, अविभावक एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी मिल बैठकर बेहतर स्कूल की

परिकल्पना कर उस दिशा मे भविष्य की योजना तैयार करते हैं। इसके लिए जरूरी होता है की सभी पहले यह जान ले की -

- हमारा स्कूल वर्तमान मे किस स्थिति मे है ।
- हम स्कूल का कैसा विकास करना चाहते है।
- हमें स्कूल विकास के लिए कौन कौन से कार्य करने की जरूरत है ।

पाठशाला की वर्तमान स्थिति जानने के लिए स्कूल रिपोर्ट कार्ड विशेष तौर पर सहायक होता है व इसमे उपर दिये लगभग सभी विवरण दर्शाए जाते है । सर्वा शिक्षा अभियान / राष्ट्रीय मध्यमिक शिक्षा अभियान की वेब साइट www.hp.gov.in/ssa के एक्सटर्नल लिंक् से स्कूल रिपोर्ट कार्ड की वेब साइट ले स्कूल रिपोर्ट कार्ड की पर जा कर आप किसी भी स्कूल का स्कूल रिपोर्ट कार्ड देख सकते हैं।

निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने की रणनीति के मुख्यत: दो पहलू हैं.....

1. मात्रात्म्क एवं गुणात्मक लक्ष्य

i. लक्ष्य मान लो किसी स्कूल को आने वाले वर्षों मे बच्चों का नामांकन बढ़ाना है । :
रणनीति इसके लिए स्कूल की रणनीति होगी की छात्रों को व्यावहारिक और तर्क संगत ज्ञान देना :, बच्चों का उपलब्धि स्तर बढ़ाना, कक्षासिखाने की प्रक्रिया को बेतार बनाना-मे सीखने कक्ष-, स्कूल परिसर को और बेहतर बनाना इत्यादि।

ii. लक्ष्य किसी अन्य स्कूल के लिए लक्ष्य अधिक अध्यापकों की भर्ती का हो सकता है। :
रणनीति इसके लिए शिक्षा विभाग अधिकारियों से संपर्क कर अथवा स्कूल प्रबंधन समिति :द्वारा अध्यापकों के पद भरे जा सकते है।

नोट :- स्कूल के लिए मात्रात्मक लक्ष्यों का निर्धारण यथा संभव भौतिक सामाग्री एवं वित्तीय आवश्यकता के दृष्टिगत होना चाहिए।

2. गुणात्मक लक्ष्य

i. लक्ष्य :किसी स्कूल का लक्ष्य बच्चों की पुनरावृति अथवा स्कूल छोड़ने की प्रवृति को कम करना है ।
रणनीति पिता ले लगातार चर्चा करना तथा स्कूल मे अध्यापन -इसके लिए संबन्धित छात्र के माता : अधिगम प्रक्रिया के दौरान छात्रों को आ रही कठिनाई को चिन्हित कर आवश्यकतानुरूप शिक्षण देना होगा।

ii. लक्ष्य :स्कूल के छात्रों एवं अध्यापकों मे अनुपस्थिति कम करने की योजना है ।

रणनीति इसके लिए अभिभावक :ोः वें बच्चों को नियमित स्कूल आने हेतु प्रेरित किया जा सकता है । प्रधानाचार्य मुख्यध्याप्क एवं अध्यापक एकजूट होकर स्कूल मे सुधार लाने पर विचार / विमर्श करें । मुख्यध्याप्क को अध्यापकों के साथ बेहतर यालमेल बैठाकर तालमेल करना होगा।

संस्थान द्वारा आंतरिक अनुश्रवण वें मूल्यांकन प्रक्रिया का आयोजन

एक बार संस्थान विशेष हेतु लक्ष्य निर्धारित कर लेने के बाद इनकी प्राप्ति के लिए नियमवाली तैयार की जानी चाहिए और इस दिशा मे प्रगति का आंकलन आंतरिक अनुश्रवण एवं मूल्यांकन के जरिए ही किया जा सकता है। स्कूल के अंदर अनुश्रवण एवं मूल्यांकन प्रक्रिया से तात्पर्य मात्र मुख्यध्यापक अथवा वरिष्ठ अध्यापक का नियंत्रण एवं निरीक्षण नहीं बल्कि संबन्धित हर व्यक्ति द्वारा अपने कार्य को स्वयं जाचने व मॉनिटर करने जरूरी है । प्रत्येक स्कूल को प्रति माह अपनी नियोजित गतिविधियों की समीक्षा हेतु एक आंतरिक बैठक सुनिश्चित करनी होती है। प्रभावी प्रबंधन एवं स्कूल मे उचित व्यवस्था स्थापित करने की लिए संस्थागत योजना तैयार करना तथा आंतरिक समीक्षा बैठकों का स्कूल स्तर पर आयोजन अत्यंत आवष्क है इसके लिए संस्था प्रमुख व स्कूल प्रबंधन समिति की कार्यकारिणी का समय समय पर ओरिएंटेशन किया जाना भी जरूरी है ताकि स्कूल स्तर पर योजना एवं प्रशासनिक क्षमता को विकसित किया जा सकें।

महत्व के आधार पर स्कूल विकास हेतु प्राथमिकता का निर्धारण

स्कूल मे मात्र ढांचागत सुधार ही स्कूल विकास नहीं होता । स्कूल की लिए निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु की जा रही विभिन्न गतिविधियों का विश्लेषण भी अनिवारी है। विकासात्म्क लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विकासात्म्क क्रिया-कलापों की प्राथमिकता तय करना भी जरूरी है उदाहरणार्थ :

प्राथमिकता किसी स्कूल की लिए जो बच्चों को स्कूल लाने व कक्षा : मे नियमित उपस्थिती दर्ज कराने मे लगातार असफल रहा है प्राथमिक लक्ष्य है ।

रणनीति इस प्राथमिक लक्ष्य को हासिल करने की लिए अभिभावकों एवं छात्रों को प्रोत्साहित : किया करने का कार्य स्कूल की प्राथमिकता होगी।

ज़िम्मेदारी तय करना : प्राथमिकताएँ निर्धारित करने के बाद समयवद्धता के साथ कार्य विशेष के कार्यान्वयन हेतु संबन्धित व्यक्ति को व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी सौंपी जानी चाहिए।

प्राथमिकतानुसार संसंधान जुटाना :

स्कूल विकास योजना हेतु प्राथमिक क्रियाकलाप के कार्यान्वयन मे संसाधनों की भी आवश्यकता होती है । इनमे मात्र वितति संसधन ही नहीं, बल्कि मानवीय एवं भौतिक संसाधन भी शामिल होती हैं। इनमे से कुछ संसाधन स्कूल मे ही उपलब्ध हो सकते हैं जबकि कुछ अविभावकों, स्थानीय समुदाय अथवा शिक्षा विभाग से भी उपलब्ध हो सकते है।

मॉनिटरिंग एवं निरीक्षण :

प्रत्येक स्कूल विकास योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए उपयुक्त मॉनिटरिंग एवं निरीक्षण की विशेष महता हैं प्रत्येक प्राथमिकता के लिए लक्ष्य निर्धारित करने, प्राथमिकताएँ तय करने, कार्य को अंजाम देने और संसाधन जुटाने के उपरांत संस्थान के लिए जरूरी होता है की वह नियोजित गतिविधियों की मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन के लिए उपयुक्त व्यवस्था करने। इस कार्य के लिए मात्र स्कूल प्रमुख ही नहीं,अपितु स्कूल विकास से जुड़े सभी संबन्धित व्यक्ति, स्कूल प्रबंधन समिति, संकुल एवं खंड स्तर के स्त्रोत व्यक्ति तथा विशेषज्ञ भी कुछ पहलूओं की मोनिट्रिंग मे सहायक हो सकते है । उल्लेखनीय है की मॉनिटरिंग प्रक्रिया का उद्देश्य मात्र त्रुटियाँ निकालना न होकर स्कूल की गतिविधियों मे सुधार लाना होना चाहिए।

प्रत्येक तिमाही, मॉनिटरिंग रिपोर्ट स्कूल विकास योजना मे दर्ज होनी चाहिए ताकि विकासात्म्क स्थिति का पता चल सकें। वर्षांत मे प्रत्येक स्कूल विकास योजना के मूल्यांकन कर स्कूल की उपलब्धियों को जारी रखना एवं कमियों को आगामी वर्षों मे कम करने की दिशा मे कार्य किया जाना चाहिए।

शिक्षा के स्तर से दूसरे स्तर (उच्च प्राथमिक स्तर से उच्च मध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तर से + 1 स्तर) मे पददोन्नति :

बच्चों का उच्च प्राथमिक स्तर से उच्च माध्यमिक , उच्च माध्यमिक से +1 स्तर मे स्तरोंन्नति । आठवीं (उच्च स्कूलों मे) तथा दसवीं (उच्च स्कूलों मे) कक्षा पास कर बच्चों की संख्या से भी नि:संदेह शिक्षा की गुणवत्ता सपष्ट होती है । इसके अतिरिक्त समय समय जब भी स्कूल प्रबंधन समिति उचित समझे , इसके सदसय/ प्रतिनिधि बच्चों के उपलब्धि स्तर मे आ रही प्रगति का भी अवलोकन करने व यदि यह सुधार ना आ रहा हो तो संबन्धित बच्चों के अभिबावकों व अध्यापक से इस बे चर्चा करने व उचित पग उठाने को कहें।

उच्च प्राथमिक स्कूलों एवं उच्च मधमिक स्तर मे ड्रॉप आउट छात्रों का कक्षाबार व्योरा :

इसमे वे छात्र - छात्राएँ शामिल होंगे जो एक कक्षा स्तर व शिक्षा चक्र प्रत्येक प्राथमिक के लिए लक्ष्य निर्धारित करने, प्राथमिकताएँ तय करने, कार्य को अंजाम देने और संसधन जुटाने के उपरांत संसाधन के लिए जरूरी होता है की वह नियोजिति गतिविधियों की मॉनिटरिंग एवं मूल्यांकन के लिए उपयुक्त व्यवस्था करें ।

TEAM RMSA(Professonal DEV

1Anima Sharma Quality Coordinator RMSA
Sanjay (ICT Cordinator)
2 Narender Singh jambal (HM,Mandi)
3Shri Prem Lal (Lect. L&S)
4Munish Thakur (PGT I.P.) GSSS Batran Distt. Hamirpur
5 Sanjeev Kumar (TGT Med) GSSS Rapoh missran Distt Una
6 Sanjay Kumar (TGT) Kangra
List of PGT (IP) Himachal Pradesh

Sr. No	Name	School	Distt	Contact	Email ID
1	Rohit Mehta	GSSS Barshaini	Kullu	9816371471	rohitrajmehta@gmail.com
2	Sanjay Pal	GSSS Choru	Hamirpur	9459080760	palnicboy@gmail.com
3	Pradeep Kumar	GSSS Jalari	Hamirpur	9418496909	
4	Munish Kumar	GSSS Batran	Hamirpur	9459412329	
5	Hitesh kumar (TGT)				hiteshranhotra@gmail.com

1. Ms. Pooja Kumari , TGT(Med.), GSSS Kanger- Dharyar, Distt- Sirmour.

2. Sh. Hemraj , TGT(Med.), GSSS Saho, Distt- Chamba.

3. Mrs. Disha, Lecturer(Psychology) & Distt. IED Coordinator Solan.

4. Sh. Manoj Kashyap, TGT(Arts), Boys Shamsher Senior Sec. School, Nahan, Sirmour

5. Sh. Rajeev Sharma, TGT(Arts), GHS Mumta kangra.

1. Kishori Lal Thakur , Lect. Bio GSSS Saigaloo (Mandi)
2. Bhupinder Gupta lect. Maths GSSS Darg (SML)
3. Ashok Kumar Lect. Eco DIET Tandi (L&S)
4. Mohinder Singh TGT (Arts) GHS Chhattarpur(Una)
5. Rakesh Kumar TGT GSSS Andoura (UNA)
6. Jaishwari kumar Lect. DIET Solan
7. Vijay Kumar Sharma Lec. DIET Bilaspur at Jukhala
8. Yashpal PGT/Lect Physics GSSS Basantpurn Shimla
9. Bharat Kashyap Lec. Biology GSSS Najhwar Mandi
10. Mukul Sharma PGT/ Lecturer IP GSSS Kiani Chamba